हिमाचल ज्ञान कोष माला

हिमाचल प्रदेश के

घटना और श्रम प्रधान गीत

(मूल गीत हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादन

एम आर ठाकुर
डा बंशीराम शर्मा
रमेश जसरोटिया



हिमाचल कला संस्कृति और भाषा अकादमी
शिमला

हिमाचल प्रदेश के
घटना और श्रमप्रधान गीत

प्रकाशक सचिव, हिमाचल कला, संस्कृति
और भाषा अकादमी
क्लिफ एण्ड एस्टेट शिमला–171 001

प्रथम संस्करण 1986
प्रतियां 1 000
मूल्य रु 15 00

Himachal Pradesh Ke Shram Aur Ghatnapradhan Geet a collection of songs on true incidents & dignity of labour of Himachal Pradesh with Hindi translation Published by the Secretary, Himachal Academy of Arts culture & Languages Cliff end Estate Shimla 171 001 and *Printed at* M/s New Printers Green Field Cottage (Near Ice Sketing Rink) Shimla 171 001

प्राक्कथन

हिमाचल प्रदेश सस्कृति की दृष्टि से अत्यन्त समद्ध क्षेत्र है। ऊची पर्वत श्रृखलाओ से घिरे इस भूखण्ड मे प्रागैतिहासिक काल के सास्कृतिक अवशेष जीवन्त रूप म सुरक्षित है क्योकि 'ग्राम दव प्रथा ने ग्रामीण मान्यताओ को बदलने की स्वीकृति नही दी। प्रदेश का इतिहास लिखित रूप मे सुरक्षित रखने के प्रयत्न नही हुए परन्तु लोक मानस न उस गीतो तथा गाथाओ क माध्यम से अमर बना दिया।

लोक मानस को सही ढग से पहचानने क लिए लोक गीत सशक्त माध्यम है। एक पुरानी कहावत है कि ऐसा मनुष्य खोज पाना असम्भव जिसने कभी दु ख मे न तो आसू बहाए हो और न प्रसन्नता म गाना गाया हो। लोकगीतो का विषय कुछ भी हो सकता है परन्तु मानव जीवन म प्रेम घटना तथा श्रम का सर्वाधिक महत्व है।

हिमाचल कला, सस्कृति और भाषा अकादमी की स्थापना प्रदेश की सस्कृति साहित्य तथा कलाओ के सरक्षण क उद्देश्य स सन् 1972 ई० म हुई थी। अकादमी द्वारा प्रदेश की सस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न विषयो पर 20 पुस्तको का प्रकाशन किया जा चुका है। सस्कार गीतो की एक पुस्तक 982 म प्रकाशित हुई और उसी कडी मे घटना तथा श्रम प्रधान लोक गीतो का यह दूसरा पुष्प आपके सामने है।

श्रम तथा घटनायें पर्वतीय जनमानस की नियति है। इन दोनो विशेषताओ क अभाव मे यहा का सामाजिक जीवन नीरस हो जायेगा। घटनाए सुखद तथा दुखद किसी भी प्रकार की हो सकती है। प्रस्तुत सग्रह म शौर्य प्रधान गीत यथा—होकू रावत, सिंगा वज़ीर नोतमाम नेगी, कौरव पाडव युद्ध जगता आदि सती गीत यथा—महासती कुजी, महासती लोता, महासती नरजी आदि और प्रमगीत तथा श्रमगीत सकलित हैं। इन गीतो मे स अनेक पाठको तथा श्रोताओ क लिए बिल्कुल नए हैं जिन्हे पहले कभी भी प्रकाशित नही किया गया है।

इस सकलन मे सगहीत लोकगीत मात्र घटनाओ तथा श्रम से ही सम्बन्धित नही है बल्कि इनक माध्यम से स्थानीय जन विश्वासो की झलक भी प्रचुर मात्रा म उपलब्ध हो जाती है। किन्नौर से प्राप्त पितीराम पतिराम गीत मे शिखरो पर निवास करन वाले देवी-देवताओ से सम्बन्धित विश्वासो की झलक मिलती है। लाहुल स प्राप्त ब्रुसीग' गीत मे विभिन्न वस्तुओ म सौन्दय भावना तथा श्रमगीत लुई कोर ये' गाय ा सन्दर्भ, बिलासपुर क्षेत्र क गीत 'भूलो जाया दिलड्आ म

गोविद सागर के यात्रा स गाण्ड्

डमरू वाला' तथा 'हो लाम्बू लाह

सुन्दर ढग स सामाजिक व्यवस्था

—अकादमी द्वारा प्रदत्त

निवेदन

लोकसंस्कृति मानवाकुल का आभूषण है। इसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन का आद्योपान्त संगम रहता है। यहां पुराना कुछ नहीं हैं, सभी कुछ नया तथा ताजा है। घटनाएं बदलती हैं पर गीत अपने नए रूप में पुरानी धुनों पर गाते जाते हैं। लोकसंस्कृति सबकी सामूहिक धरोहर है उन पर किसी एक का अधिकार नहीं है। अतः सम्पूर्ण समाज अपने हितों रुचियों तथा उद्देश्यों की रक्षा के लिए उसे ग्राह्य तथा उपयोगी बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

अलिखित सामाजिक घटनाक्रम का नाम ही लोकसाहित्य है। लोकसाहित्य की वाणी है राग लय तथा ताल है। जब लोकसाहित्य चिंतन-पक्ष को भी साथ मिला कर चलता है तब उसका नाम लोकसंस्कृति हो जाता है। हिमाचल कला संस्कृति और भाषा अकादमी प्रदेश की लोकसंस्कृति के प्रलेखन तथा संरक्षण की दिशा में अनेक योजनाओं पर काम कर रही है। लोकगीतों के क्षेत्र में संस्कार गीतों की पुस्तक का प्रकाशन सन 1982 ई0 में हुआ। इसके पश्चात भर्तृहरि से सम्बन्धित लोकगाथा का संकलन तथा प्रकाशन किया गया। श्रम तथा घटनाएं इस प्रदेश के लोकमानस तथा सामाजिक जीवन की दिनचर्या हैं। प्रतिदिन घटनाएं घटती है। मानव शक्ति के अधिकाधिक उपयोग के लिए यहां मशीनीकरण का विकल्प नहीं है। किस प्रकार बड़ी से बड़ी वस्तु को सामूहिक बल से एक से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है, उसके लिए मशीन का प्रबन्ध करने से सम्भवतः वर्षों लग जाएं परन्तु लोकगीत का कुछ पंक्तियां कार्यरत व्यक्तियों में लय के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरणा ही नहीं देती बल्कि उनकी शक्ति का अनेक गुणा बढ़ा भी देती है।

हिमाचल प्रदेश के सम्पूर्ण ज्ञान का आयाम किसी एक पुस्तक में समाहित किया जाना सम्भव नहीं है इसके लिए हिमाचल ज्ञानकोष योजना तैयार की गई है। इस योजना के अन्तर्गत सात भागों में विभिन्न विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित की जाएगी। इस योजना के अन्तर्गत सातवें खण्ड का प्रकाशन हिमाचल प्रदेश की सन्दर्भ ग्रन्थ सूची के नीचक से किया जा चुका है। संस्कार गीत तथा घटना और श्रम प्रधान गीत इसी विशद योजना के अंग हैं।

इस प्रदेश म लोक कवि बहुत सम्वेदनशील तथा प्रतिभा सम्प-न रहा है। एक समालोचक ने ठीक ही कहा था कि सरलता सिद्धहस्त साहित्यकार का सबसे बडा गुण है। कर्मो छैला के गीत में कवि कहता है —

हाय वो मेरेया कर्मोग्रा छला हे
तेरे साही मण्हू भी नो हूणा हे
ब्रिफु गर्लें बटरी बलोरी हे
प्राई मामे भाणजे रो जोडो हे

अर्थात 'कर्मो तुम कितने सु-दर हो आप जैसा कोई मनुष्य नही हो सकता। ब्रिफु मोड पर टाच जल रही है मामा भा जा की जोडी आ रही है।

श्रम के प्रति ग्राह वा। हेमरू बोला— हे सार में कितना सटीक है—

हेमरू बोला हे सार
रौंई रा दार— हे सार
जोर नीं लादा— हे सार
देउग्रा री कार हे सार

अर्थात 'हेमरू बालिए। रई वश का शहतीर है ह सार। (तुम) जोर नही लगाते हे सार। देवता की सौग ध (जोर लगाने के लिए), हे सार। जिसने श्रम का जीवन जीया है उसे पता है कि सामूहिक शक्ति के लिए ये शब्द कितने प्रेरक होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक मे इस प्रकार की सहजता तथा सरलता के अनेक उदाहरण मिल जाएंगे।

घटना तथा श्रम प्रधान गीता के सग्राहको ने इन लोकगीतो को एकत्रित करने के लिए मेहनत की है। अकादमी के भूतपूव सचिव श्री एम० आर० ठाकुर ने इ हे वर्तमान रूप मे प्रस्तुत करने के लिए योजना बनाई तथा काय किया। कुमारी विद्या शर्मा न प्रस्तुत पुस्तक के लोकगीतो के सग्रह का काय मनोयोग स किया है तथा मै० यू नि टज शिमला के मालिक ने इस मुद्रित करने मे योगदान दिया। इन सभी महानुभावो का ध यवाद ज्ञापन हमारा कतव्य है।

शिमला 25 दिसम्बर, 1986 डॉ० बशीराम शर्मा

क्रम

मिया होकूरावत

वतमान सिरमौर हिमाचल पदेश का एक जिला है। यहा पर हजारो वष तक राजतन्रीय शासन रहा है। जब कभी राजा अल्पायु या निबल होता तो राजकमचारी उस पर हावी हो जाते थे व प्रजा पर मनमाना शासन थोपते थे। गिरीपार के वासियो ने इस अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध समय समय पर आवाज उठाई। यद्यपि शासन के क्रूर हाथो ने उसे कुचल कर रख दिया पर शहीदो की यादगार लोक गीतो के माध्यम से सदा अमर रही। इन शहीदो और अन्याय के विरुद्ध आवाज बुलन्द करने वालो मे घन्डोरी निवासी मिया होकूरावत का प्रथम स्थान है जिसने १६८० ई० के लगभग अन्याय को सहन करने के स्थान पर अपने प्राणो की आहुती देना श्रेष्टकर समझा। उसकी याद मे आज भी गीत गाया जाता है।

संग्रहण व अनुवाद

प्रो० रूप कुमार शर्मा

मिया होकूरावत

घानी गाणी ठाहरी देवी दुरिगा माई
भूले देणे विसरे यादो दिलाई ।
बोहुता देणा घादडा पाछडे पाई
भालरो देणे होकू रे, दो चारो गाई ।
दोलू रुए मोहते घुणिओ खाई
खुमली थोई सीशाए चोतरू री मानलो पाई ।
खुमली दी बाता थाई लो होकूवे लाई
जुभ देणो मारे राजा नोइणे बे लाई ।
खुमली खे उचले कोटी धा मुरलिया गनाग धा सुदामा
रजाणा धा धरता पजबाणा चौरास धा सामा ।
मोहरे धा मागतू सगडाह धा सघडई, सेज धा बाजो,
शोउ धा सेना, घामला धा महाटा भूटली मानल धा जावो ।
देउठी मुलो थोई खुमली पाई,
पाची धो नोइया देणे नाइणी मिजाई ।
खुमली दी रुणो मरोली गुणा
ऐका चेई रोभ्रा पाई लोवे लोटे दा लूणो ।
टिका रोभ्रा छुटो राजे रा ब्याणा
नोइणी होई रोबा भीतरा दोलू माहते रा जाणा ।
मोहते लुए दोलूवे कुशी कुशिए खाई
मामला लुम्रा राजो दा दुवा लिए उगाई ।
होकू लागी सिगटे तोवे नोइणी री बाई
हाडो म्राउणो एकियो नोइणी खे जाई ।
नोइया देणे गाव रे मेरे सिते पोठाई
दोलू देणो मोहते री गुजो कोटाई ।
देव थोम्रा ।दरमुल शाउना साई

जुघो देवा मोहते सात देणा जीताई ।
जीती जाउ मारती सीसे मोने पाछु भाउ,
खाडे लिम्राउ काने बकरा देउठी दा माऊ ।
ऐथे गाई लागा बुलादा मिया तेरा बारू,
वाईडा पाम्रो छेवडियो मन्डारो रा दारू।
पोख रोम्रो नोइया री घन्डोरी ठाहरी दो म्राई,
एक लाई दुजे से रामा रूमीणी शाई ।
फौउजो चली होवू री कण्डारी री धारो,
कण्डारो शो मिया घुडोउरी से हेरो।
माल छुटो जीरी क्रोभणी रो भूटडी रो दूघा
ठाई छूटी घुन्डाउरी री कालीमो री सेरा।
तेरी वे राउता खाई केमिए बुघो
चली दम्रा जुम्रों से, चीत कारा दूघो।
जादा लागा बादा जामटे री बाटो,
म्रादी भेटो पाटी दो दुडे उलिया रो हाटो।
मोनो दे राउतिम्रा पाडा ला पाटो,
लादे केयू ने हाटियो नोइणी री बाता।
बातो जाणी नोइणी री जाई रोई खोटी,
नाइणी पाकी रोई मीतरी दोलू मोहते री रोटी।
फुली कोरो फुलीटू, डालिटी दाई,
फौउजो रोई राउतो री जामटे म्राई।
जामटे म्रोई देवी मोनी शिखो से शाई
भरजो थोई देवी से हाथों जोडियो लाई।
देवी थोई जामटे री गरणे लाई,
माता तुए देविए हरती न लाई।
म्रडखे नोइणी पाडिडा चेली,
जीता लिम्राउवा मारतो तो देउवा छेली।
जामटे री देविए शुणो ने घुणों,
लोटा ढाला पाणीरा बकरा ने घुणों।
तादी मिम्रा राजपूती म्राई,
चोडाई जुते राउतिम्रा देवी दी लाई।
से जे कारे देविए मुना माउले तेरे,
राजे सितो मारीता जीती लियाउणो मेरे।

फोउजो लागी होबू री शिया पुरी जाई,
शिया पुरी थाई गादी सातू लुए गाई।
जुठे निउठे सातू लुए थाई उदे पाई,
थाई एजी राणिरी, मुटीणी लाई।
घाड़ी लुग्रा दोलुए मुनो दे घाटों,
उवी लगी फोउजो मियां रा नाड़णी री बाटा।
नोड़णी थोई चुगाना दी चोकमी पाई,
चिटा घोग्रा मड़ा सुदामे चोगाना गोड़ाई।
घाता मिया सितोबुला ला ज्वाला,
बीचो कोरणा चुगानो, राठतिया मोहाला।
होबू थाम्रा मिया मोहते खे राजु लाई
काजु थोग्रा बातों सीता मोरमाई।
मानो ने दालू मेरे मौना रा जाणा
राज हुग्रो चेई राजे शो जु ग्रासो इयाणा।
दोलू दियो माहतू होकू खे काजी
तेरे सीते झगड़े खे हा माजिए माजी।
दोतिया कोरणा मिया मोहलो रा फेरा
झोगड़ा देणा बोलाए जेषा जी चाउला तेरा।
म्राजी लोणी मिया मण्डारा री रोटी,
बकरा दिते काटणो खे सुतनो खे कोठी।
म्राई गिम्रा मिया दोलू रे फेरो
गेगो खाई मिया जेरे कुन्डो रे फेरो।
खोटा मोहता दालू कारना वेने खिजा
राजे सीता जुम्रो ता कोबे ने सोजा।
म्रागी लोई सासो दी कालजे दे दागो
म्राज की कोटली रातुटी दुली खुली मागो।
रासो थोई रोड़णा, बोडी ठाइए काटो
राती बीयाणा मिया जुम्रो मोड़लों रा बाटो।
होकू रोवे मिगटे जिशी बरादुवारी दे जाई
भेट राजे खे मुरो पाई जयदेवा धाई।
पोड़ी मिम्रा होकूम्रा विचो दा गेरी
भेटा पाई होकू मियां पीठ दोलू फेरी।
होकू थीम्रो सिगटे उडो पुड़ो हेरो

जाणी पाई होकू मिया दोनू रे फेरी।
ताम्हे रोई होवू रोजपूती आई,
खाडा लोआ चाकरो गाहे हेराई।
दोलू हेर चाकरो बुझोणी जाई लाई बुझाई,
मो धी जोई रोई चाकरो री होवू सीती फेराई।
बुलो ने दोलू मेहतिया नासुमझी, री बावो,
गालो देश्ला काटी मारुवा तेरी जाता।
तिनी तोवे चाकरे थोआ घेरिणा लाई,
ढोले थोई मोते खे खाडे री पाई।
दोलू हासे मोहते रे आडिये मागो
धा तेरा होकूआ, खम्भे दा लागो।
लाडो रोओ बुटी मानजे सिगटे खे मोत थोई लाई
मानीजए बाह्डा जाईवे, साथी खे रामा हमणी मेरी थाई।
खाडे री लागी मोहरी थाटो, मारो चाकरा तेरो,
वारा गुरजा दुआरी दा, हाकू जिया दुणी दा शेरा।
होकू पाथा ताडा, खेलणा लाई,
कोठे गाई थोई इट तरे माथ दी लाई
कुवड छूटे लोहू रे, उवे औसमानो जे जाई,
होवू थोआ चाकरे घेरो दा पाई।
आइडी दा बाघ थोआ पाखणा लाई
हेर मेरिया मिया, मागणी ने खाई।
जीउदे सांसे थोआ छेउडी देखाई
भूई दा पाडा थोनिओ, सासो उडाई।

मिया होकूरावत

जन्म भूमि तथा दुर्गा माता तुम्हे शत शत प्रणाम
भूले बिसरे मुझे याद दिला देना।
बहुत सा विवरण पीछे छोड़ कर,
दो चार शब्द होकू के प्रस्तुत है।
दालू मेहता ने प्रजा पर अत्याचारों का कहर ढाया है
निवारण हेतु ग्राम-मुखिए मानल की बैठक मे शामिल हुए।
पचायत मे होकू मिया कहने लगा
भाइयो हमने नाहन मे मेहता के विरुद्ध विद्रोह करना है।
पचायत म कोटी धिमान मे मुखिया गनोग से सुदामा
रजाणा से धरता पजवाण चौरास से मामा।
नोहरे से मगतू मगडाह स सगदई सैज स बन्जो
गोठ से सेना घामना से महटा भूटली से जावा शामिल हुए।
मन्दिर के नीचे पचायत का आयोजन हुआ
पाच सौ नौजवानो को नाहन भेजने का निश्चय हुआ।
पचायत मे बडी गर्मा गम बहस हुई
एकता बनाये रखने के लिए लोटे लूण वाली कसम दिलाई गई।
राजा का युवराज छोटी अवस्था है
नाहन मे दोलू मेहता का मनमाना शासन है।
दोलू मेहता का शासन कसाई से कम नही
राज्य का भूमिकर दोबारा एकत्रित किया जा रहा है।
होकू और सीमटे नो नाहन जाने की उत्कठा थी
एक बार नाहन अवश्य जाना है।
गाव के युवको को अगर मेरे साथ भेजो
तो दोलू मेहता की मुछें मुडवा कर रहूगा।
देश विरगुल से सलाह मागी गई,

ग्रौर नाहन के ग्रभियान की सफलता के लिए प्रार्थना की गयी।
ग्रगर नाहन से लडाई जीत कर वापस ग्राऊ,
हे देव ! बडे बकरे के साथ तेरे मन्दिर मे ग्राउंगा।
इस पर मिया बार-बार कहने लगा,
भण्डार से सुखाने को बारूद बाहर डालो।
युवा सेना घंडोरी के मंदिर प्रांगण मे ग्राई
एक दूसरे को ग्रभिवादन का ग्रादान प्रदान करने लगे।
होकू की सेना कण्डारी की पर्वत चोटी से होकर निकली
कण्डारी से मिया (होकू) घण्डोरी की हसरत भरी नजर से देखता है।
जीरी झीझणी (लाल रंग के उत्तम चावल) व युवा भैंस का दूध छूट गया
घण्डोरी की जन्म भूमि व कलम के उपजाऊ खेत बिछुड गए।
रावत तेरी बुद्धि पर मोह माया, का पर्दा क्या पड रहा है
जा रहा युद्ध के लिए व याद कर रहा है दूध को।
जमटे की ग्रोर चलते-चलते
ग्राध रास्ते मे उसे टुके उलिया का हाट मिला।
मन ही मन होकू रावत सोचने लगा,
हाटिए नाहन के समाचार क्यो नही सुनाते।
नाहन की बातें तो बडी खोटी हैं
नाहन मे तो दोलू मेहते की तूती बोल रही है।
दाई के फूल खिल गए हैं
होकू मिया सेना सहित जमटा ग्राम तक पहुंच गया।
हाथ जोड कर देवी से ग्रर्ज करने लगा
ग्रौर देवी से परामर्श की प्रार्थना की।
जमटे की देवी की प्रार्थना करने लगा
माता हार का मुंह न दिखवाना।
इस ग्रोर नाउणी उस पार ग्राम चेली
ग्रगर विजयी रहा तो बकरे की बलि चढाउंगा।
जमटे की देवी मे कोई हलचल नही हुई
लोटा पानी का गिराने पर भी उसने बकरा स्वीकार नही किया।
मिया (होकू) को राजपूती ग्राई (खून खौल गया),
उसने जूते सहित देवी को लात मारी।
देवी जो तेरे मन ग्राये करना,
राजा के विरुद्ध मैं ग्रवश्य युद्ध जाऊंगा।

होवू की सेना वियापुर बाउडी के पास पहुच गई,
वियापुर बाउडी के ऊपर सत्तू खाने लगी ।
कुत्ते तथा जूठे सत्तू बाउडी के अन्दर डालने लगा,
रानी की बाउडी का जूठन से अपवित्र करने लगा ।
जब होवू की सेना नाहन की ओर अग्रसर हुई,
ता दोलू उससे निपटने की योजना बनाने लगा ।
नाहन चौगान मे आकर सेना ठहर गई
सुनामा ने चौगान मे सफेद झंडा गाड दिया ।
मिया के साथ ज्वाला विचार विमर्श करने लगा
बीच चौगान मे हमने व दूको से हथ नाद करना है ।
हावू ने दालू मेहता को स दश भिजवाया
स देश वाहक मे यह सन्देशा प्रेषित किया ।
दोलू तेरी मनमानी नही चलेगी,
राजा की इच्छानुसार राज चाहिए चाहे वह भले ही छोटा है ।
दोलू मेहना हावू को निमन्त्रण भेजता है
मैं तुम्हारे साथ कतई लडना नही चाहता ।
मिया तुम कल राजदरबार मे आना,
जैसा तुम चाहो तुम्हारी इच्छानुसार फैसला होगा ।
मिया आज तुम सरकारी भोज स्वीकार करो,
काटने को बकरा दिया व रहने के लिए विश्राम गृह ।
दालू के फेर मे मिया आ गया
मिया तेरी बुद्धि पर पर्दा पड गया है व यह फेर क भवर म उलझ गयी ।
दोलू धोखेबाज है, उसका विश्वास करना भूल होगी
राजा से झगडा शायद तुम्ह रास नही आयगा ।
सास मे आग सी भडक रही है और कालेज मे दद
आज की रात अगर बीत गई कल भाग्य-द्वार खुलेगा ।
मिया ने रात बडी कठिनाई से बिताई
रात बीतते ही राज दरबार की ओर रवाना हुआ ।
हावू और सिगटा राजदरबार मे पहुचे
राजा को सोने की मोहरें भेंट की ओर जयदेव कहा ।
मिया तू दोलू के बहकावे में आ गया
होवू के अभिवादन के प्रत्युत्तर मे दोलू पीठ फेरकर बठ गया ।
हावू व सिगटा इधर उधर देखने लगे

उन्ह दोलू के फँसाए जाल की भनक पड गई।
तब होवू को राजपूती जोश आया
तलवार को दरबारियों के ऊपर घूमने लगा।
दोलू मेहता ने दरबारियों की ओर इशारा किया,
दरबारी होवू के चारो ओर ऐसा इकट्ठे होने लगे
जैसे शहद के चारो ओर शहद की मक्खियां।
दोलू तू नासमझी की बात मत कर,
वरना मैं तेरा सिर काट कर रख दूंगा।
उन दरबारियों के घेरे का शिकन्जा होवू के चारो ओर कसने लगा,
होवू ने दोलू मेहते पर तलवार का वार किया।
दोलू मेहता के बड़े भाग्य थे
तलवार का प्रहार दोलू के बजाय खम्भे से टकराया।
तलवार टूट गयी, अपने भानजे सिमटा को शिक्षा देने लगा,
तू जान बचाकर भाग जा सबको मेरा अन्तिम प्रणाम कहना।
होवू की तलवारों के प्रहारों से दरबारी चिल्लाने लगे
होवू उनके बीच ऐसा गज रहा था जैसे वन में शेर।
होवू की तलवार करतब दिखा रही थी
कोठे पर से एक ईंट होवू के माथे पर जा टकराई।
लहू की धारें निकल कर ऊपर का फव्वारे की तरह जाने लगी,
दरबारियों ने होवू को पूरे घेरे में ले लिया।
बाघ के समान होवू का आखेट किया जा रहा है,
धन्य मियां, तू रण-क्षेत्र से नही भागा।
जब तक सांस रही वीरता दिखाई,
जब सांस उड़ी तभी भूमि पर गिरा।



सिगा वजीर

१८६६ ई० से पूर्व सिरमौर रियासत १२ वजीरियों (परगनों) में बटी हुई थी। प्रत्येक वजीरी का अधिकारी एक वजीर होता था जिसका कार्य कर एकत्रित करना तथा अपराधियों की सूची राजा को देना होता था। ये वजीर क्रूर ऐश्वर्यपरस्त तथा भ्रष्टाचारी होते थे उनमें से गिरीपार के क्षेत्र लादी कागड़ा का वजीर सिगा था जिसके अत्याचारों व भ्रष्टाचार के खिलाफ इस क्षेत्र के २७ भोजों (ग्राम समूह) के मुखियों ने ग्राम टीटीयाणे में एक बैठक की और अन्याय के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा करने का निर्णय लिया जिसका श्रीगणेश ग्राम कोटी बौच से हुआ जहां अत्याचारी वजीर को उचित सबक सिखाया गया। बैठक में जेल, मेहल और लादी कागड़ा परगनों के ग्राम मुखिया शामिल हुए केवल कठवार का मुखिया नहीं आया जिसके स्थान पर पत्थर रख कर उसे अपमानित किया गया। यह हारुल (युद्ध गीत,) जनता की इच्छा की अत्याचार पर विजय है।

संग्रहण व अनुवाद
प्रो० रूप कुमार शर्मा

सिंगा बोज़ीरा

बानी लोई सिंगाए शिरो दी पागो
दौउरे से चला बोजीरा साह्वो वा लागो ।
कानो पाम्रो सिंगा रोटी रो निको
दियोली लुघदे बाड़े बक्रे छीको ।
छीक बाचो फिकरू माड साचें से कोरे,
जे जाइला सिंगीए भ्राए ने बोटे घोरे ।
घुमा रो माटिया दिए ने सिंगा दा ताव
फुन्नी देउथा, जाणे ने तू मेरा नाव ।
तेरी रोई माटिया भ्राखो भ्रबरी जाई
छीक भ्रोसो पूर्वो खे हाड भूई न जाई ।
तिनी भोई सिंगरोउवे खुमली पाटी
उबा भ्रावला सिंगा बोजीर उदा मारणा काटी ।
सिंगा चला बोजीरो, कीरी लवडी केरो
शिगढाट लिम्राथो बकरा, बोजीरो रा बोरो ।
रास्तो रे भ्रोजोउ होले डोराडो
घोर छोडे सिंगा खे भ्रपी थावे उराडो ।
जांदा लागा बोदा सिंगा कोटी खे जाई,
भ्राए मेरिया सिंगाया तुए थोवे धुनिणो खाई ।
फुली कोरी फुलटी डालटी दाई
बेगारी दए सिंगा के बोंथो खे भ्राई ।
फुली कोरी फुलट्टू डाली फुलो री कोउ,
शुना घोर डरे खे देणा, हरषु री बोहू ।
नोरगू सियाणा, रोए ने रीला,
बकरे सिता चेई बोजीरो खे ठीला ।
नोरगू लाभो बातुडी घोड़ो मुनो दे घाटो
एश्शा लाणा ठीला भ्राजो, देऊ गुलटी जाटो ।

ढाई वोह्दा बोजीरा, घुट लोई तुमाखु री लाई,
खोटे रए तेरे करमो, भील रोई बाह्री जाई ।
नोह्या रोश्रो सिगटोउ, घीस घोरो दे जुली,
वेटा लुश्रा तेरा याजीरा, वाउटी घा तुली ।
वारिये योवे तुए सिगाश्रा वारिए माणशो भून्नी,
याहे जुगा एजा छेलटा, मुली देईदा बुली ।
ढोली रोई सिगा तेरे टाटी री केरो,
भाखी मोरी पाशुए देश्रा ला लेरो ।
पाई वेने बोजीरो हटे वो उबी घाडी,
हालो का तेरा बोह्लो वेटा देणा मेरा छाडी ।
घारो कोटा होली चिकनी माटी
कोटी पाई सिगरोउवे छायहे री टाटी ।
चुना लु लोश्रा छेटे रो सिगा रे जाती उदा डाकी
खाए सिगीया चुनालुटा ऐजी श्रोसो तेरी फाकी ।
खोडी घारो च दपुरा होला चिक्ना माटा
ठारी बुइचो, सिगारा, वकरा घा काटा ।

सिगा वजीर

सिगा वजीर तैयार होने लगा, सिर पर पगडी बाधने लगा
अपने वजीरी के दौरे पर राजा सा लगता था ।
सिगा ने कधे पर रोटी का झोका (थैला) उठाया
कि तु द्वार लाघते ही बकरे की छीक ने झिझकाया ।
साचे की गणना से, किकर भाट ने छीक की व्याख्या की,
अशुभ बताया छीक को मृत्यु के सशय से उसे डराया ।
चुप रह भाट सिगा को क्रोधित न कर
जो अगुली उठेगी सिगा पर, उसका सवस्व जला दूगा ।
तेरी तो, भाट आखे कमजोर हो गई हैं,
यह छीक पूव की ओर से आई यात्रा अशुभ नही होगी ।
सिगटोउ ने योजना बना रखी थी,
अगर सिगा वजीर इधर आया तो उसे समाप्त करना है ।
सिगा वजीर अकड कर चलता है ,
लम्बे सिगो वाला बकरा काटो यह सिगा का आज है ।
रियासत के ओओउ (राजपूत) बडे ही डरपोक हैं
सिगा के लिए घर छोड कर स्वय गुफाओ मे चले गए ।
चलते-चलते सिगा कोटी (गाव) मे पहुचा,
अच्छा हुआ तू आ गया तूने हमारा खून चूसा है ।
दाई की टहनी पर फूल खिले हैं
सिगा के बेगारी बोच (गांव) मे पहुच गये ।
काहू की डाली पर फूल खिले है,
अकेला घर विश्राम के लिए चाहिए साथ हरगू की बहू ।
हे बूढे नरगू तुम सुस्त मत रहो,
वजीर (सिगा) के खाने हेतु बकरा व अ य खाद्य सामग्री भी चाहिए ।
नरगू बातें करते करते उधड बुन मे पड जाता है,
आज तो सादा भोजन करें कल मन पस द का मास परोसा जायेगा ।

दीवार के सहारे बैठ वजीर ने तम्बाकू का कश का लगाया,
पर तेरे भाग्य फूट गए है तू रास्ता भटक गया है।
कोटी के युवक मकान के भीतर उमड पडे,
तेरा बेटा बाजू से उठाकर तोल रहे हैं।
सिंगा तूने युगो युगो से हमारा शोषण किया
तेरा बेटा तो बकरे की तरह है, इसका मोल तो बता।
सिंगा के चहेरे पर हवाइयां उड़ने लगी
ग्रास भर ग्राई, उच्च स्वर से रोने लगा।
सिंगा तुम पर इससे ग्रधिक विपत्ति कभी नही ग्राई,
मैं तुम्हारे हल का बैल बनूगा अगर तुम मेरे बेटे को छोड दो।
लेकिन शत्रु पर दया का समय नही था
सिंगा के पुत्र की गदन धड से ग्रलग कर दी गई।
जबरदस्ती उसका मास सिंगा के मुह में ठूसा गया,
ले इसका कलेजा, गिला न रहे कि मास नही खिलाया।
च दपुर की खडी धार (पहाडी) जहा की मिट्टी चिकनी है
(वहा' सिंगा को बकरे की तरह काटा।



नोत राम नेगी

भारतीय तथा सिरमौर क्षेत्र की महत्वपूर्ण घटना जिसे इतिहास-कारो ने नज़र अन्दाज किया है। यह घटना गुलाम कादिर रोहिता की सिरमौर की भूमि पर करारी हार हैं। दिल्ली के मुगल बादशाह शाह आलम को अन्धा करने व भारत के बडे भूभाग पर लूटमार करने वाले रोहिला का घमण्ड इस पावन धरती के लाल ने चूर-चूर कर दिया। सिरमौर के कटासन मे जहा रोहिला की हार हुई, विजय की यादगार मे कटासन देवी का मन्दिर बना दिया गया किन्तु उस वीर को भुला दिया जिसके सिर पर विजय-सेहरा बधना चाहिए था, जबकि राजा व सभी राज कर्मचारी कुछ करने मे असमय थे। नोतराम नेगी स्वय तो जमना नदी पार करते समय धोखे से मारा गया किन्तु शत्रु को सिरमौर की भूमि से बाहर कर दिया।

संग्रहण व अनुवाद
प्रो० रूप कुमार शर्मा

नोत राम नेगी

ह्रणी लोई पावटे री मुगीले खाई
थाई उदे पाई लाई मोहिनी दे गाई।

नागी तारवार राजे मुजीरे पाई,
तिम्रा मी कुए चाकरो दिया मोयाना मोराई।

बाद तिनी चाकरो दी घुत वेने भ्राई
देसी तारवार थोई तिनिए टाटी नाई।

तेदी बाणा भूपसिगा राणिए भाई
मेरी जाणो काजिए मोलोते खे जाई।

छाकरा नोतो राम धुणा बीरो रो शिरो
सी नी सोको मुगला ली लिरो।

भूखा हाडला नोगिम्रा रोटी नोइणी खाए
मालाते शा छिटका देशो राती जाणो नाडणी भ्राए।

तेने भूपसिगे ढिल वेने पाई
घोडे दी लोई काठी चोडाई।

नोइणी छिटका रोम्रा मोलाते खे जाई,
नगी थेई नात राम खे रामा रूमीणी धाई।

ता थोम्रा नेगिम्रा शीधडा नोइणी बुलाइ
तेने नेगिए ढीन वेने पाई शिगा लागा जमन गाई जाई।

नाव रै मेरे नावरिम्रा नाव देणी लाई,
इयो देणा घोडिए जमना पाडा वोराई।

जमना धा छुटका नातराम राजे भ्रागे जाई
भेट राजे वि मुरा पाई जयदेव गाई।

बुला राजा साइवा मुदो का लागी र ई
किमा थाम्रा राई दा, मु नोइणी बुलाई ?

दुणी लोउ पाउटे री मुगीले खाई,
बाई उदी पाई लोई मोदथी दे गाई।

बातो लामो राजा, नेगी ने धुणो,
नेगीणो मेरे नेगट्ट घाचला वूणा।

केइखे ढाली नोगिया तेरे टाटी री केरो,
नेगीणो खाले नेगट्ट भु डारो रा सेरो।

जु काटी लियाइला मुगलो री शिरी,
कान्मी देऊ तासतो दी बैठी बोजीरी।

जे लिमाइला नेगिया मुगलो रा ठाना,
खेडा देऊ सौपा रा सुमराडो रा लाणा।

दुणी खेली पाउटे नेगिया सूरमे री मारो
चाटे लाए टाटी रे, लोऊ रे धारो।

एजा आया मुगलिया नोतरामो रा सोटाका,
भूटी गिमा दुणी, एजा आया तिंदे रा साटा।

फोउजो थोई रोहिले रे मागणी खाई
हेट मेदा नेगिया हेट तेरी माई।

काटी लुए बाइरी जिमो दाचीए सागो,
बोइरी पोडा मितरी जिया बकरी माजे बोरागो।



नोत राम नेगी

पावट की दून घाटी में मुसलमान विनाश कर रहे हैं
तथवियों में गाये व भैंसों को काट कर डाल रहे हैं।

राजा ने राज कर्मचारियों को तलवार उठाकर चुनौती स्वीकार के लिए कहा,
किन्तु सभी दरबारियों की गर्दनें शर्म से भुक गयी।

इसलिए रानी ने भूप सिंह को धर्म भाई बनाया,
उसे शीघ्र मलोते जाकर नोतराम को बुलाने भेजा।

नोतराम वीरता के लिए काफी प्रसिद्ध है
वही दून घाटी की रक्षा कर सकता है।

अगर तू भूखा होगा तो भोजन नाहन आकर करना।
पर दिन रात एक करके शीघ्र नाहन पहुंचा।

भूपसिंह ने तनिक भी विलम्ब नहीं किया
बिना देर किए घोड़े पर काठी चढाई।

नाहन से चला मलोते जाकर रुका,
नोतराम को नमस्ते की और कहने लगा।

नोतराम तुम्हें शीघ्र नाहन बुलाया है
नेगी ने विलम्ब नहीं किया, घोड़े पर सवार होकर यमुना तट पहुंचा।

नाविक तुम शीघ्रता से नाव चलाओ,
व मुझे जल्दी से नदी पार करवा दो।

यमुना से सीधा चलकर नेगी नाहन पहुंचा
राजा को मोहर भेंट की और जयदेव कहा।
महाराज! मुझ से क्या अपराध हुआ,
मुझे किस अपराध हेतु दरबार में उपस्थित होने को कहा गया ?

मुसलमान पावटे की दून का विनाश कर रहे हैं

बावडियो मे गाये भैसे डाल रहे हैं।

राजा बात कर रहा है किन्तु नेगी सोच रहा है
मेरी पत्नी और बच्चो को कौन पालेगा।

नेगी तुझे निराश नही होना चाहिए
तेरी नेगण और नेगटू सरकारी खच पर पलेंगे।

अगर तू मुसलमान सरदार का सिर काटेगा,
तुझे कालसी तहसील की वजीरी दूगा।
अगर तू मुसलमान की टुकडी का मुखिया मारेगा,
तो तुझे सीया व सुमराडी की जागीरें दी जायेंगी।

पावटे की दून मे नेगा ने वीरता से युद्ध लडा,
सिर कट कर ढेर लग गये खून की नदिया बहने लगी।
मुसलमानो तुम्हें मोतराम नेगी की वीरता का पता नहीं,
जो तुमने दून को अपवित्र किया यह उसका बदला है।
रोहिले की सेना भागने लगी,
नेगी तू धन्य है तेरी माता धन्य है।
शत्रु को तूने गाजर मूली की तरह काटा
शत्रु के बीच तू इस तरह घुसा जैसे बकरियो के बीच बाघ।



कौरव पाण्डव युद्ध

सिरमौरी पहाड़ी क्षेत्र मे जलसो व त्यौहारो के समय मे मनुष्य अपनी खुशिया मनाने के लिए ऐसे गीत अक्सर गाते हैं। क्षेत्रीय जलसो मे सारे लोग इकट्ठे होकर अपने मनोरन्जन हेतु एक दूसरे से मिलकर नाचते गाते हैं। इस गीत के केवल दो ही पद्यांश है जिनको दो-दो बार नृत्य के समय गाया जाता है।

लाम्बीडा घोणुको घूटीडा कूमाणो
हूणो वे मामा मारीणा पाडु कौउरू रा नाह णो।

जिस समय महाभारत का युद्ध छिड़ा हुआ था ये पंक्तियां उस समय की याद दिलाती है। भगवान श्री कृष्ण को उग्रसेन महा ाज कहते हैं कि हे नारायण कौरवों और पाडवों का युद्ध होने दो।

राजी रोउगे प्रजा कोरो आपणी तानो,
राम ओसो लोछणो एकी थलो रा खाणो।

जब उग्रसेन श्री कृष्ण भगवान से इस इस प्रकार की बातें कर रहे थे तो उ्होंने कहा कि अगर पाण्डव कुशलता पूर्वक युद्ध जीत लेते है तो प्रजा उनकी सारी बातें मान लेगी। जबकि कौरव और पाडव एक ही थाली क चट्टे बट्टे हैं जैसे कि राम और लक्षमण।



अंग्रेज साहब

रेणुका तहसील (सिरमौर) के अन्तिम कोने मे नौहरा नामक गाव है यहा पर अंग्रेज बादशाही के समय मे जब कोई बडा अधिकारी आता था तो उस समय पहाडी क्षेत्र के ये भोले-भाले लोग उनके स्वागत के लिए टूटी-फूटी भाषा में इन लोक गीतों का प्रयोग करके उनका स्वागत करते थे। यह उस समय का गीत है जब अंग्रेज साहब उनके गाव मे प्रवेश कर रहा था।

थुडा रे जाणा थीया भुलाणे थे दिन, रोई रूवा थूडा रे

आपने भुलाणा नाम के गाव में पहुचना था पर अब दिन थोडा रह गया है।

भेली रे उडी दे विजया, मेरी गूडो री भेली रे

विजय नाम के नौजवान से गुड की भेली मांगते हैं जिसे खाते खाते कुछ रास्ता तय हो जाएगा।

जाणा थिया भुलाणे के मेरे हाडी था तेली रे

अंग्रेज के साथ जो उसका नौकर व तेली आ रहा था वह तेली कही पीछे रह गया। अंग्रेज कहता है कि उसने भुलाणा गाव को जाना था परन्तु उसका तेली गुम हो गया।

रेलूवा बाडोइया लाई वे सूनो [illegible] भारा रे

वह साहब फिर उसी गांव के रेलुवा नाम के बढई को वही रहने को कहता है तथा बोलता है कि हे रेलु बढई तुम अपने औजारों को तैयार रखो क्योंकि कल हमारे साथ चलना होगा।

साहिबा बूलो अंग्रेजो मेरा तेली कूणोए मारा रे

अंग्रेज साहब कहता है—मेरा तेली का किसने कत्ल किया है? मेरे तेली का कहीं मार दिया।

मेहदी

यह गीत मेहदी नाम लडकी तथा उसके प्रेमी का है। हिमाचल प्रदेश में जिला सिरमौर के पहाडी क्षेत्र मे त्यौहारो व विवाह इत्यादि म अपने मन को प्रसन्न करने के लिए पहाडी गीत गाए जाते हैं। इन गीतो म प्रेम-रस की प्रधानता होती है।

मोहींदीए रो होरे लाडो रे गाडे तुए थोके मारके।

महन्दी नाम की लडकी अपने प्रेमी से कहती है कि हरे घास का बोझ अत्यधिक भारी हो जाता है।

मोहीं दीए रो धीयला ने राडे तेरी जाणा मारलिए।

महदी जिस विपुल प्रकार के पेड मे छेद डाला जाता है उसी प्रकार तेरी आखो न भी मुझ छद डाला है।

मोहींदीए रो छुके काटलो दे छाडे धुक्‌ नेरा जीयो दा।

महन्दी का प्रेमी मेहदी मे कहता है आपने मुझे सूखी नदी मे छाड दिया है तथा आपके दिल मे मेरे प्रति छल कपट है।

मोहींदीए रे उवी बिन्दरा चूणो उबी माता रेणका।

नीच बोहड तथा अत्यधिक घना जगल है और ऊपर माता रेणुका

मोहींदीए रो ता लागना चूणो म्हारे चूडी लोकडे।

महन्दी यदि तरी भलाई हा जाती है तो बेशक तुम चाहे मेरा त्याग कर दो।

मोहींदीए रो बाजो गोइरा वाणा बाजो जादी बाजणो।

विशेष उत्सवो म विभिन्न बाज तथा नगारे इत्यादि बजने से लडके-लडकियो का आपस मे घनिष्ठ प्रेम हो जाता है।

मोहींदीए रो कोरी मूनो रा जाणा, उमी वेणा मोरोणी ।

महदी का प्रेमी कहता है कि जो तेरे दिल म आए वो कर ले चाहे मुझे कितनी भी तकलीफ हो ।

मोहींदीए रो लाई कुकडो कागे धान खाया चीडीए ।

मेहदी की मक्की की फसल कौम्रा ने खा ली है और धान चिडियो ने ।

मोहींदीए रो थोंचे आपणे आगे, तुए थाये मारणे ।

मेहदी तूने ता मुझे मारने की सोच रखी थी परन्तु परमात्मा की कृपा से मैं बच गया हू ।

मोहींदीए रो आई रे पारलो लाके, कान कोरी सुणवो ।

मेहदी तेरे प्रेमी का सन्देश आया हुआ इसे कान कर सुन ले ।

मोहींदीए रे तेरे नाको की तीली छोरी सोजी कोणिया ।

मेंहदी तेरे नाक मे तीली बहुत सजी हुई है ।

मोहींदीए रो आते आदमो मिलो उमो सेरा आसरा ।

मेहदी का प्रेमी मेहदी से प्रेम भरे शब्दों मे कहता है—हे मन को अच्छी लगने वाली मेहदी भले ही तू मुझे आधे रास्ते में मिली फिर भी मुझे तुम्हारा बहुत सहारा है तथा तुम्हारे प्रति अत्याधिक प्रम है ।



जगता

यह गीत किसी गाव के जगता नामक व्यक्ति जो कि खच्चरें लादन का काम करता है, उससे सम्बन्धित है। रास्ते में जाते समय उसे चोर मिलते हैं जिनसे वह अपनी जान बचाने की प्रार्थना करता है। गीत इस प्रकार से है —

लाईने डिगीरो बीवो नीता जोगता रे

खच्चर पालन करने वाला जगता नामक व्यक्ति जब रास्ते में से गुजर रहा था तो गाव से थोड़ी दूर आगे जाकर उसे चोर मिल जाते है और कहते हैं कि पत्थर में लाली लगानी बेकार है अर्थात तेरी जिन्दगी बेकार हो जाएगी क्योंकि इस समय तेरे पास बहुत पैसा है और हम तुम्हे मार देंगे।

देशी व आव कुमारों साफा गोलो बा रो पोंवो नीता जोंगता रे

जिस तरह मैदानी क्षेत्रो से तूफान पहाड़ो की तरफ बढ़ता हुआ आता है उसी प्रकार देश म स आए हुए चोर उस नीता जगता नामक खच्चरवान व्यक्ति क गले म कपड़ा बाध देते है।

शिमला जाणी बुईजारो दी कौए टोपी, लोई लो रूडी नीता जोगता रे

हे जगता शिमला बाजार मे रोडी की ढुलाई करनी है ।

नौ शौ देऊगा रुपिया ज मेरी जिन्दगी छूड़े नीता जोगता रे

नीता जोगता (खच्चरवान व्यक्ति) उन चोरो से कहता है यदि आप मुझे छोड दोग तो मैं आपको नौ सौ रुपये दूगा ।

नौ सौ देऊगा रुपिया उकी खेचर री जूड़ी नीता जोगता रे ।

खच्चरवान चोरो से फिर प्रार्थना करता है कि अगर तुम मुझे छोड दोगे तो मैं तुम्हे नौ सौ रुपया के अतिरिक्त खच्चरो की एक जोडी भी दूगा ।

संग्रहण व अनुवाद
बालक राम ज

चरणु

लोकगीत हिमाचल प्रदेश के भोले-भाले लोगों के लोक जीवन के अभिन्न अग रहे हैं। यहा के लोक-गीतो मे यहा की धरती, पहाड, जगल, नदी, नाले, खेत, खलियान गाते नजर आते हैं। यहा के लोग शान्ति प्रिय हैं परन्तु इसके साथ ही जब कभी भी इनके शातिमय जीवन को ललकारा गया है, इन लोगो ने अपने प्राणा की परवाह किये बिना चुनौती को स्वीकारा है। प्रस्तुत गीत शिमला जिला की रामपुर तहसील के सुगरी क्षेत्र से सम्बधित है। इस क्षेत्र मे लोग बाघ द्वारा दिन प्रतिदिन किये गये पशु तथा मानव सहार से काफी तग थे। एक दिन बाघ ने चरणु नामक बहादुर व्यक्ति की भेड तथा मेमनो को अपना ग्रास बनाया जिस पर चरणु को अत्यन्त क्रोध आया और वह बदला लेने के लिए बाघ की खोज मे निकल गया। बाघ तथा चरणु के मध्य घोर युद्ध हुआ और अ त मे चरणु ने मलयुद्ध मे बाघ को मौत के घाट उतार दिया —

मुलमा लाईया न केरैमा लाए
मार बी ग्रामा चरणु रो हेडुला गाए
झिजिग्रा चाणा माञ्डीग्रा लऊटी घीग्रा
भूलुग्रो बेटो चरणुग्रा हेडी रो जीग्रा

दुघा मदा खीरी खण्डा पाका रसोए
मीतरा म्राशा चरणुम्रा हाथड़ु धोए
म्राशिम्रो गो पउचो डाम्फीम्रा बोठो
म्राणकले छाजर ना पाणी रा लोटो
सुगरी बागी खदराला सावा रा तावू
दूधा म्राणा कढणा से चरणु रा लाम्बू
म्रापु गो बेटा चरणुम्रा घरा खे म्राए
साबा सपाए देणा सुगरी समाए
देवा री धारा चरणु खे टयालिया ला कुणा
बोटी बराल्टीम्रा तगा दे शुणा
बोटे हुले चरणु रे बड़े फजागा
घवला चाणा माका रो न चरणु खे म्राणा
भेरे खाए मोम्रले बादरे जटाए
तेम्रो री ताई चरणु दे रोपा र म्राए
भेरे खाए मोम्रले गावू रे जाडे
सेजा रोपा चरणुम्रा राफला छाडे
म्रोरू दे मेरो दोस्ताना दारू रो पीपो
सिम्रा सगा लडनो कमाई दा लिखो
म्रागुम्रा तगा चरणुम्रा भरे बन्दूका
साथी चाला मईरामा परमासुखा
गाखिमा माले डागरो चन्दरा झीका
काना गाशे राफला न सापणा सीका
घणा लागे जागला दे नादे बरूबा
साथी सगी माईमा मेरा नेडा के दूरा
देवारी धारा चरणुम्रा देएडो नाम्रो
तू थो मूई सिऊणी रो खराणी रो हाथो
लडिम्रो डेईला भिडिम्रो मई का झाम्रो
छिम्बरू मेरो कुकरा न धर्मा रो म्राए
सिम्रा री म्राशे खाबा दे मेरे दाईणे बाए
म्रापुगो बेटा चरणुम्रा घरा खे म्राए
सिम्रा रे देणे हिम्रा दे गोले चलाए

हम चरगु का गीत गाने जा रहे हैं
माँ ने प्यार से घी तथा लोटी (आटा घोलकर बनाई गई रोटी) बनाई
मेरे बेटे को भूख लगी है लगे भी क्यों नहीं आखिर बच्चा ही है
बेटा तुम हाथ धोकर अंदर आ जाओ
दूध तथा शहद युक्त खीर का स्वादिष्ट भोजन बना है
चरगु आते ही डाम्फी स्थान विशेष पर बैठ गया
उसे प्यार से ठण्डे पानी का लोटा दिया गया
सुगरी बागी तथा मदराना मे अंग्रेजो ने अपने तम्बू लगा दिये
दूध वाइन के लिए चरगु के बड़े-बड़े बर्तन मंगवाये गये
चरगु स्वयं घर पर आ गया
साहब तथा सिपाहियों का सुगरी भेज दिया
देवी के टीले पर से चरगु का आवाज किसने लगाई है
बरात वाली घरानी ने यह आवाज अपने बरामदे में सुनी
चरगु की पत्नी बिल्कुल अनजान है
उसने चावल तथा मांस मिलाकर चरगु को खाना बनाया
सलेटी रंग की भेड़ तथा भूरे रंग का मेमना खो गया
इसी बात पर चरगु को क्रोध आ गया
सोने रंग की भेड़ तथा तथा मेमनो की जोड़ी खो गई
इसी क्रोध में चरगु ने बन्दूक खेंच ली
उसने अपना दस्ताना तथा बारूद की पीपी मंगवाई
मेरे भाग्य मे शेर के साथ लड़ना लिखा है
चरगु ने आगे वाले बरामदे मे बंदूक भरी
उसके साथ भईराम तथा परमसुख भी चले
कमर में बंधा फरसा चांद की भांति चमचमा रहा था
कंधे पर रखी बन्दूक सापिन सी लग रही थी
घने जंगल में धीमी धीमी वर्षा होने लगी
हे मेरे साथियों ! तुम पास हो या दूर
दवा की धार पर पहुंचते ही चरगु ने चुनौती दी

यदि तू गैरों का बच्चा है तो मैं भी माँ जी का पुत्र हूँ
गहने गहन दे तुझे अभी तक मैं ओढ़ता
हे प्रिय, तुझे सुन मेरे घर के आई हो
गैर के मुख में मेरा बाजू आ गई है
यन्त्र से परन्तु उस दिन की प्रतीक्षा में मैंने राग की ओर
उस नींद के घाट उतारकर घर पहुँच गया

संग्रह व अनुवाद
प्यारा सिंह भागटा



मास्ती (महासती) कुज्री

देश मे अन्य भागो की भाति हिमाचल प्रदेश मे भी सती प्रथा का प्रचलन रहा है। इसी परम्परा के अन्तगत शिमला जिला के जुब्बल क्षेत्र के 'ठाणा' नामक गाव मे 'कुजी' नाम की महिला ने अपने पति के साथ जिन्दा जलकर पतिव्रता का परिचय दिया है। इस क्षेत्र मे आज भी 'मास्ती कुजी' का नाम आदर सम्मान से लिया जाता है और प्रस्तुत लोक गीत भी अत्याधिक प्रचलित है

ताला रीगे माच्छले न गरो बीरो
काला बारा अम्बिमा न पान्डे दीरो
धुली री पठाए मेरे सोड छामा
मीठो माहो ठणका मु बान्दो शिमामा
छोटिमा कुजिमा तू नेडडे आए
फौला मु दे हाथ्नुआ मशरो लाए
लाम्रा कुजे मशरो न लागा ले द दे
मोरे कमाए मेरे कियरो हु दे
जोटी एकी आदमी पजारली आयो
देवा तेस कुला रा न उबे छरामो
ओलरी देश्रो कुला रो न गाडा ला राशा
मेरा नाई अम्बि खे न दाई न दोशा
ओलरो देश्रो कुला रा न लागा लो रन्दो
माता रो चावला न अम्बे न हू दो
देवा देशा कुला रा न आखरा चोडे
माटा करा माऊला न आरका लोडे

जोटिग्रा एकी ग्रादमी भटपड़ी जाम्रो
भाटा तेस ठकरा न ग्राए बदाम्रो
ग्राशा भाटा ठकरा न साम्बिग्रा लाए
मातेग्रा ग्रम्बिग्रा तू बोला लो काए
गोला भाटा नकरेग्रा चुड़क सोचा
मरणा रा जीवणा रा पाखरा वाचा
एकी ग्राशा चुड़धुग्रा लड़िग्रा खड़ो
ग्राशा दूजा चुड़कुग्रा भास्ते मड़ा
बैटे गोए खण्ड़िग्रा रे खड़िग्रारए
भाटा तांऊ ठकरा रे पतरे दए
घरेमा देग्रा डुजिग्रा न दाईणा हाथा
जबे ग्रम्बे मरालो तो जनू ले साथा
छोटिग्रा कुजिग्रा डू गूदे न छला
ग्रागी गाशे पाशड़े तू लाग न बला
छोटिग्रा डुजिग्रा ग्यारू ला ताक
जेबा मड़ा लागा तेबा मानू न हांक
ग्रलना नाई मरना हे भाशी रो डरा
जिणो तेरा सूखिग्रा लो तियणो करा
जींग्रा पापी चोरी रे भाशे टियाले
दाया भाया गड़ा रा न खाम्रो बियाले
गड़ा दिणे नगरा दे फूके टियाले
डाकी बाड़ी सोई ग्राणो ग्रोलटी जाले
गड़ा जाणी नगरा दे हुए नजाणा
चोठी बियाली डूबा ग्रम्बि रा ग्राणा
जोटी एकी ग्रादमी न ग्रा"दला जाम्रो
डाकी वाड़ी सोई तुम्हा ग्रोड़ बलाम्रो
डाकिया कने माऊग्रा नगारा रे जोटे
भीतरा करा खबरा न सचे के खोटे
सचे खोटे बाड़िग्रा न पूछि का तेरा
मड़ा साथी भास्ते न जलणे मेरा
कुणता म्हारा शोरा गड़ाईका कोले
पारा मलाड़ी से थे छाड़ने जोले
फोल्टु ग्राशा भागमते लाम्बिग्रा लाए
मातेग्रा ग्रम्बिग्रा न बोला ला काए

बाल्टुआ मागमन पूरो न बोमा
सोजा माला गुरती का परा रा बोमा
बाल्टु देमा मागमत पूरे टियासे
जलासे मला ग़ुमा पिपाईणा रहार
माघी मलाह्र माधा गूटा सी घडी
दार रा माणा चुगचा न केवला री घडी
माघी मसाह्र माणा दार र ढाण्डा
यादा ठणायका री मरवी पाण्डा
माची मलाह्र पूजा सटिमा रमा
मुमा सापी जीवद तू बासरे दमा
हाप भी मूरो देमा लो न मडा नी घडो
सूदा री खुन्टी न ठाणा का जमी
सोजा लेरा गुरती न जुगा रा मोला
ठाठा बे घाइता तू मामू का बोला
ठाठा न चादतो हाऊ सुखा रे जमू
माची मलाह्र रे न उजले बहू
सौजा लेरा सूरती न जुगा री बाई
घाला मलाडी से तू दूमा ले गाइ
गाई मेरा बाद्दु रा हुमा न मागा
तेरे बोला बाटे,न बाकिणा डागा
गायी तेरा बाद्दू रा मुए का जेडा
अम्बि साथी जमू ले न पशा रो पेडो
देवरा बोलू रामच दा मूची का तेरा
मडा साथे मास्ते न जलने मेरा
रेशमा कीमू छापा दा न गाडा ला रेजा
बोल बी मेरी मावजा तू बामा ले केजा
एजो न चोगो बामणों एजा रमा लो ताखे
चोगो सैजो बामू बि दे सूना रे माखे
जूगा गाशे बामवेगे चढके राणे
ठाणा से भूरा ठडा बाबी रो पाणे
जुगा गाशे टाडुएगे चढके कूजे
हले मेरी लोकी रे जला ले दूजे
नागा रो लाए ढोली दे न कुजिम्रा लाता
होली मेरी लोकी री जलिम्रो साथा

निम्रो मेरी जुगटू न थापला पारा
म्राण्डा पुजारसी रा दिन्दा भलारा
मरो निम्रा जुगटू कलोटी री धारा
डाढ धीधा पुणसो न बादे मलाढा
निम्रो मेरा जुगटु न खोधा री छाई
दखा मेरा माईचा न मांधा की नाई
म्रोह घोदो नरथा थगे रा थापा
मैद्द कछे लाई घूगू कथरी रा छापा
एक बा छापो लाणो न नागा री ढोली
दूजो छापा लाणा बनाढा री खाली
म्रागतु बाढी जगला न लहिम्रा ऊजा
कसके चाणी पलगे न कसले जूगा
कम्बी से चाणा पलगे न घूजी से जूगा
इणा चाणो जुगटू न म्राफी लो छाण्ड।
करा दिया करू चोऊ पूरा दे चाण्डा
कणी घाणी बाढिम्रा बहेटु से तेरा
काठे लाए म्रागला खूबे हिया दे मेरा
कुजीरा लिम्रा जुगटु दे किम्बली काली
म्रम्बि री लिया पलगी दे मुशा बराली
डाल बी करा देवठी का ठोडी का सुए
गढा री बादी नेगणी का रामा रामा हुए
जुगा गाशे टाण्डुएगे चढके राणे
ठाणा रे भूरा ठढा न बाबी रो पाणे
थिबले चाणे पलगे न लोगढे बाटा।
डाकी रा ढाली रा न लग्गा ला साटा
सोलह लाए साणी म्रा कुजे लदारे
पांचा लाम्रा पाण्डुम्रा न म्रम्बे महारे
म्रोढे का दूस मासा ढेएगा घरा
म्राग न कोई लांदो फिरग्गी रा डरा
जेती तुम्रा शेवरेम्रा घरा खी मागा
जती हीला देवरा न लाद्दम्रो म्रागा
सास बी रींगा सरगा मास भोगा ले म्रागा,
हाडा रा लागा जुल्कू न माटी रा सागा

तालाब मे मछली तथा आकाश मे पपीहा घूमने लगा
इस प्रकार की अशुभ घडी मे अम्बि बीमार हुआ
मुझे अत्यधिक ठण्ड लग रही है और बुखार भी आ रहा है
चुल्हे के निकट मुझे बिस्तर बिछा दो
प्रिय कुंजी तुम मेरे निकट आ जाओ
अपने नम हाथो से मेरी मालिश करो
कुंजी मालिश करते-करते रोने लगी
न जाने मेरे भाग्य मे क्या लिखा है
दो आदमी पुजारली गाव जाओ तथा
अपने कुल देवता से पूछ ताछ करो
कुल-देवता गुस्से मे आकर बोला
मेरी ओर से अम्बि को किसी प्रकार का दोष नहीं है
कुल देवता बोलते बोलते रोने लगा
भात को चावलो मे परिवर्तित नही किया जा सकता
अर्थात अम्बि का बचपाना असम्भव है
कुल देवता ने स्पष्ट रूप से कह दिया वह कुछ नही कर सकता
तुम अन्य किसी पंडित आदि से उपाय करवाओ
एक जोडी आदमी पंडित के गाव भेजो
शकर नाम के प्रसिद्ध पंडित को बुला लाओ
शकर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ पहुच गया
अम्बि से पूछा कि उसके योग्य क्या सेवा है
शकर ने अपनी विद्या की पोथी खोल ली
वह जीवन तथा मृत्यु के सम्बन्ध मे निर्णय करने लगा
एक प्रश्न के उत्तर मे कुछ गडबड नजर आई
दूसरा प्रश्न लगाने पर मौत तथा जिन्दा जलने का योग सामने आया
खणिहया की बेटी कुंजी यह सुनकर हैरान रह गई
हे शकर तुम्हारी पोथी को आग लग जाए
कुंजी ने अपने दायें हाथ से अम्बि को थाम दिया
यदि तुम्हे कुछ हो गया तो मैं साथ जलूगी
प्रिय कुंजी तुम दिल रखने के लिए व्यर्थ छल न करो
जलती आग पर तुम अपना शरीर नही रख पाओगी
मैं तुम्हें परामर्श देता हू कि तुम यह विचार छोड दो
यदि तुम मेरे मृत शरीर को साथ लागी तो फिर तुम्हें जलना ही पडेगा

वैसे जलने और मरने म किसी का डर नही है
तुम्हे जो उचित लगता है तुम वही करो
आस-पडोस के सभी लोगो को कहा गया कि जल्दी से रात्रि का भाजन कर ले
क्रूर यमराज का अम्बि को बुलावा आ गया है
पूरे गांव मे खुली आवाज दी गई
वाजा बजाने वाले बढई तथा दर्जी को जायटी (लकडी विशेष जिसमे तेल
रोशनी के लिए जलाया जाता है) की रोशनी म बुला लाओ
सारे गाव मे यह खबर फल गई
रात्रि के प्रथम पहर मे अम्बि की मृत्यु हो गई
दो आदमी जल्दी से मा दल जाओ
डाकी बढई तथा दर्जी को बुलाकर ले आओ
मांऊ नामक डाकी ने नगारे की जोडी कस ली
अम्बि के घर से मालूम करो कि यह खबर सच्ची है या झूठी
कुजी बोली ! तुम सच्च झूठ क्या पूछ रह हो
मैं अपने पति के साथ जि दा जल रही हूँ
ह ससुर जी ! आपके परिवार क कोली (सवाणार) कौन है
मोलाड (मायके) को सूचना भेजनी है
कोली का बेटा भागमते जल्दी जल्दी आ गया
अम्बि माते की ओर स क्या आदश है
भागमते तुम यह सूचना खुले आम मत दना
मरे भाई सौजे तथा सूरती को अकेले मे सूचना देना
कोल्टु भागमते ने खुले तौर स आवाज दी
हे मोलाड वालो तुम्हारे गाव की लडकी जि दा जल रही है
मोलाड वाले म री सख्या मे आये
वे अपन साथ बारूद तथा बेमला लाय
मोलाड वाल ओला की बौछार की तरह पहुच गये
सभी ठाने वालो के मकान उनसे भर गये
मोलाड वाले पहुचते ही हैरान रह गये
तुम मृत व्यक्ति के साथ किसे जला रहे हो
भूरे ने गुस्से मे आकर कहा
हमारे गाव मे कई वीर महिलाए जल चुकी है
भाई सौजा तथा सुरती जुगटु (अर्थी) के निकट जा कर रोने लगे
तुम वास्तव म जल रही हो या मजाक कर रही हो
मैं मजाक नहीं अपितु खुश होकर जल रही हू
अपने मायके वालो का नाम रोशन करू गी

गोजा तथा मुरली जुगटु की बाजू म पाग रोकर बाले
तुम मोलाड घला वहां भेयस गाय दाहने का नाम करना
गाय तथा बछडे पालना मरे भाग्य म कहां
तुम्हारी पत्नी मुझे डाकनी तथा डायन कहेगी
मुझे तुम्हारी गाय तथा बछडो स कोई वास्ता नही
मैं अपने पति के साथ जलकर सती होना चाहती हू
भैया रामच द । तुम किस सोच मे डूबे हो
मैं अपने पति के साथ सति होने जा रही हू
रामच द ने रेशम और किमखाब के थान सामने रख लिए
मेरी भाभी तुम कौन सा कपडा पहनना चाहोगी
मैं यह चोगा नही पहनुगी यह तुम्हारे लिए रहेगा
म सोने की मखनी जडित चोगा पहनुगी
कुजा जुगटु पर आसी न हो गई
यह देख कर घाणे की कुल देवी और यहां तक की बावली का पानी भी
व्याकुल हो उठा
जुगटु पर चढकर कुजी ने घोषणा की
यदि तुम म भी मुझ सा खून होगा तो अपने पति के साथ जल कर देखना
नाग के बडे पत्थर पर पाव रखकर कुजी ने फिर कहा
यदि तुम भी मुझ जैसा नाम कमाना हो तो अपने पति के साथ जल कर मरना
मेरा जुगटु कलोटी धार पर ले चलो
जहा से पुजारली मन्दिर पर लगा स्वर्ण कलश चमकता हुआ नजर आता है
मेरा जुगटु कलाटी धार पर ले चलो जहा से
ढाडी घु सा तथा मोलाड के गाव नजर आते है
मेरा जुगटु घर की छाया मे ले चलो और देखो
मेरे मायके वाले (मोलाड वासी) आये है या नही
ससुर जी धर्मी के पिता जी (गाव का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति) को बुलाकर लाओ
आपके रीति-रिवाजानुसार कहा कहा कु गु तथा कस्तूरी के तिलक लगाये जाते है
एक छापा नाग के बडे पत्थर पर लगाया जाना है
और दूस । देवता बनाड (कुल देवता) के मन्दिर के प्रवेश द्वार पर
आगतु तथा जेगल बाडी (बढई) हैरान होकर पूछने लगे
किस के लिए पालकी बनाई जाए और किसके लिए जुगटु
अम्बि के लिए पालकी और कुजी के लिए जुगटु
ऐसा सुन्दर जुगटु बनाना है जो स्वय चले
उसमे चारो ओर चोरू तथा चारो किनारो पर सु दर घटिया लगाओ

हे बढई तुम्हारे बेटे के साथ भी यही हो जो मेरे साथ हुआ है
तुमने इतनी सरत अगला लगाई है कि मेरी छाती मे दद हो रहा है
कुजी के जुगटु के चारो ओर काली चिवटिया तथा
अम्बि की पालकी के चारा ओर चूहे तथा बिल्लिया बनाई गई
कुजी न देवता क मन्दिर का नमस्कार तथा कुल देवी को प्रणाम किया
गाव की सभी भद्र महिलाओ को राम राम कहा
राणी की भाति जुगटु पर कुजी सुशोभित हो रही थी
उसे देखकर ठाणों की कुल देवी और बावली का पानी भी व्याकुल हो उठा
पालकी चौडी बनी है किन्तु रास्ता सकरा था
ढाको तथा ढोलो की भीड लग गई
सोलह ने कुजी को भोजन परोसने का काम दिया
पाचो पाण्डवो ने अम्बी को अपने भण्डार का अधिकारी बनाया
सूय अस्त हो कर अपने घर चला गया किन्तु
कोई भी व्यक्ति अग्रेजो के डर से आग नही लगा रहा था
कुजी ने कहा रिश्ते में जितने भी ससुर है घर चले जाओ
जितने देवर हैं वे सभी हमारी चिता मे आग लगा दें
मास स्वग चला गय और मास अग्नि को अर्पित हो गया
हड्डियो का ढेर मिट्टी के भाग्य मे आया



महासती कुजी

जुब्बल क्षेत्र मे मादल नाम एक ग्राम की घटना पर आधारित एक लोकगीत कुजी नाम की एक स्त्री के अपने पति की मृत्यु पर सती होने की गाथा है। उसका पति अम्बी भेड बकरियो की खरीद करने कुल्लू गया था। जब वह वापस आया तो अचानक बीमार हो गया और मर गया। कुजी उसके साथ सती हो गई। यह गीत बहुत पुराना है तथा खास-खास त्यौहारो जैसे बिशू (बैशाखी) जात्तर (एक पहाडी मेला) और देवताओ के जगराते म गाया जाता है।

बाठणीए कुजीए छोए ल छाए
राशीऐ ढेऊ कुल्लु री कपड घाए।
कुल्लु री ताव राशीए छाडू न छाडू
भोकतै मेरै माची रै बाकरै खाडू।
तेरै देश्रो माचे मोग मोल
राशी आगु कुल्लु दू सस्तै होले।
सोजो कोरे शाबली लोट दो घिऊ,
हाथो किया डिगटा रोटी रो शिका।
जोवे पुजा देतली ख बाकटुऐ छिको
छिक ले मेरी छिकणीऐ देदे का बोरो।
राशीए ढेऊ कुल्लु खी आऊला घोरो,
मार्गों ले कुजे देश्रो दू ऐजा ही बोरो।
कोबै अम्बे आणो खाडू बाकरे रे शर्री
दाई माई बादे कोरी अम्बी रे आणा।
राव आऐ कुल्लु दू महता र रोहड
राघ लाऐ चारण खी देवा री बाणी।

अम्बी हेस महते मड़ी दी लाणी,
राय आगए अम्बीऐ खोर्ले री बाणी।
शेल री आवो ठाणको माटे घाओ,
चुल्हे री पिठीऐ मेरो सोडो छांव।
बाठणीए कुजीए तू नेडड़े घाऐ
कोले हाथड़ुऐ मालशो लाऐ।
छाऐ से सोडो लागे ले रु दे,
औकरे कमाऐ मेरे किणे होले।
सूऐ मेरे बेदणो कोइये नै जाणे
बाई मेरी कुछी दे टुबे कराणे।
एकी जोटे आदमी मादलो जाओ
पुछीये देओ कुलो रै का बताओ?
ओतरो देओ कुलो रा ढालो ला ओशो
मेरा नै अम्बी ली हाऐ न हायो।
देवा बनाहा अम्बी न लाए
चावे रा देऊ फलीया देवठे छाऐं।
जबै कौरे अम्बी रो उत्तमो मोत्री
चावे री देऊ पाटीऐ पीतलो ढोलो।
ओतरो देव कुलो रा लाणो ला न दा
मातो रो चावनो अम्बे न होवा।
एक जोटे आदमी अटेऊठी आया,
माठ आणो कुला रा आद बुलाओ।
माठ पुजा कुलो रा धाऊली फेटै
का होने बोलदै महतै रै बेटै।
माटै गाडो घोडी रै धुडके साचो
मरणे ओ जीऊणे री टपड़ो बाचो।
एका आओ मरी दो खोरीये ग्वोरो,
दुजी आओ होरी दो मास्ते मोरी।
ठाणे री लाऐ ठोडी दे कुजीऐ लातें,
जोबै मोरी ला महत्ता मोरु ले साथी।

मारी ए छेउड़ीए आणो न गेमो,
मोट तर मारे आगने ऐ दमो ।
माड़ो लाऊ माचा गी माजा रा तोरो,
जोला नाई मरणे मी मोगी ग ठोरो ।
मुग तर मढोल र गहाई तो याल
गरै दाटो मारा नी उदद जोट ।
मोलीया योनू गोहो रै पूजो नै बान
माई पून्द्र रामधना घोरो रै पान ।
मोमीऐ् लाए गोहो र फुने टपाले,
जोले लागे मालाड्यो ध्याईणा तारे ।
माई देओ रामधन गोहो तरांगो
धुणजा सजा महल्ला जू जिऊ जागो ।
धाडी रे बडेदुम्रा लाम्बडी बाया,
दणा चाणु जुगदु जू देमो लो डमो ।
हाय या राजे रा बनाणे बिया,
राम लिन्नू लखणो पोनो दे सिया ।
तेरे लिन्नू जुगदु दो पोण भी पाणे
सीता लीनू देणे बँ रामो रे राणे ।
द नाई दाडीये पेड़े री गाली
तेरे लीनू जुगदु री दुर्गा काली ।
मुड तीएँ धम्बी रो गली दो कोयो
जुगदु चालो पुजो रा ब नाचदो जेम्रा ।
नीम्रो मेरे जुगदु ब कोमू री छाई,
देसो मेरे माचे म्राऐ की नाई !
माचे मोलाडू पूज घृटो ली छोडी
दारू र प्राणै पौन केवने री घोडी ।
थागो मेरो जुगदु वे मोडवी सी चालो
न्याईयो मेरै माचो री ठालोऐ् ठालो ।
माऐ पूछो रामघोनो जुगदु र म्रोले
टाटो मेरो बोहणीए मुख मी बोल ।
टाटो नाई क्छिी ब माईया शोकी रे जोलू
जुगदु तीयो फुजी रा ब लाई माई टेको
मास्ती म्राम्रो कुजी दो देवी रो तेजो ।

जेती तूए गवर्ं धोरो सी डयो,
मेर दवरो तूऐ उक्ला लाभो ।
साले री सावणीऐ मेरीये माए,
साल्ला री मावणीऐ नागले पाए ।
घुऐ र बाईन सौरर्ग आए
मोहल लाऐ सावणीऐ कुजे मदेर ।
पांचे ला पाडवं भ्रम्बे मण्डारे
साम डेवा सौरें मांस भोगीले मागो ।
हाडो रं हड्यू रोपे माटो रे मागो ●

हिन्दी अनुवाद

इस गीत का नायक अम्बी अपनी पत्नी से कहता है कि हे मेरी सुन्दरी तू मेरे कपड़ों को धो दे क्योंकि मैं भेड़ बकरियां खरीदने कुल्लू जाऊंगा। अम्बी की पत्नी कुजी कहती कि मैं तुम्हें इतनी दूर नहीं जाने दूंगी मेरे मायके वालों के पास बहुत भेड़ें व बकरियां हैं—तुम वहीं से ले आना। अपनी पत्नी की बात सुनकर अम्बी कहता है—

कि तेरे मायके वाले तो बहुत ही महंगे बेचते हैं। मैं तो राड़ू (भेड़े) व बकरे कुल्लू से ही लाऊंगा क्योंकि वहां पर ये बहुत सस्ते मिलते है। अब तू जल्दी ही कोई अच्छा सा खाना तैयार कर और एक लोटा घी भी साथ के लिए भर दे। खाना लेकर वह हाथ में डंडा लिए जाने के लिए तैयार हो गया।

जैसे ही वह दहलीज पर आया तो एक छेनू (बकरी का बच्चा) ने छींक मारी। अम्बी की पत्नी कहने लगी यह अपशगुन है मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगी तो वह कहता है यह तो शुभ है। यह जरूर कोई वर देगा। मन ही मन अम्बी की पत्नी अपने कुल देवता से कहती है—हे कुल देवता मेरा पति सही सलामत घर वापिस आ जाए। यही वर मैं तुम से मांगती हूं।

यहीं अम्बी के भाई बन्धु इन्तजार करते हैं और कहते हैं वह कब आयेगा और बकरों को लायेगा। सब आस लगाये बैठे हैं एक दिन वह दिन भी आ गया जब वह अपनी भेड़ें व बकरियां रोहड़ू ले आया और चुगाने के लिए देवता की एक चरागाह में छोड़ दिए।

धीरे धीरे उनको हांकता वह अपने गांव की तरफ ले गया। जब वह अपने खलिहान के पास पहुंचा तो उसे सरदर्द व ठंड के साथ कम्पन सी महसूस हुई।

उस नेत्यार उसकी पत्नी बहुत खुश हुई जब वह बिल्कुल पास गया तो उसने पत्नी को आवाज लगाई और कहा कि चूल्हे के पास उसके लिए बिस्तर लगा दे क्योंकि उसे ठण्ड लग रही है।

जब उसकी पत्नी ने उसकी नाजुक हालत देखी तो जल्दी-जल्दी चूल्हे के पास बिस्तर बिछाया और रोने लगी। कहने लगी हे परमेश्वर मेरी किस्मत न जाने कैसी होगी—मेरे पति को ठीक कर दे। उसे रोता देख अम्बी कहता है मेरी सुन्दरी तू अपने नम नर्म हाथों से मालिश कर दे। तुम मेरी दर्द का क्या जानो मेरी बाईं पसली के नीचे सख्त दर्द हो रहा है। ज्यादा ठंड से उसे निमोनिया हो गया था। पत्नी घबराहट में कहती है कि एक जाड़ी आदमी को मांदल (गांव का नाम) को भेजो और देवता से अम्बी के बारे में पूछो। कुल का देवता उस चेले (गूर) में समाता है और कहता है कि मेरा कोई खोट व दोष नहीं है। कहते कहते चेला ठंडे पसीने से भीग गया क्योंकि उसे पता चल चुका था कि अम्बी सिंह अब ठीक नहीं हो सकता। कुछ समय पश्चात उसकी पत्नी कुंजी रोती बिलखती हुई देवता के स्थान पर आती है और कहती है—हे मेरे कुलदेव मेरे पति को अच्छा कर दे। मैं तेरे लिए सुन्दर मंदिर तांबे व पीतल के ढोल तथा नगारे बनाउंगी—तू मेरे पति को ठीक कर दे।

कुल देवता का चेला फिर रोता है और कहता है कि जिस प्रकार भात बन जाने पर पुनः चावल नहीं बन सकते उसी प्रकार अम्बी अब ठीक नहीं हो सकता। तुम चाहे कुछ भी करो। इस पर भी कुंजी का मन नहीं माना और दो आदमी कुल के पुरोहित को बुलाने के लिए भेज दिए। जब कुल के पुरोहित ने बात सुनी तो दौड़ता हांफता हुआ अम्बी के घर आया। उसने भी अपनी जन्त्री व साचा निकाला और अम्बी का जन्मदेवा देखा। फिर उदास हो कर कहने लगा कि जो होना है वह तो अटल लेकिन इसके साथ में इसकी पत्नी भी मर जाएगी और सारे जुब्बल में महासती कुंजी के नाम से प्रसिद्धि पाएगी। जब उस पतिव्रता की देवी ने यह बात सुनी तो उसने कुल देवता के मन्दिर के पास बने चबूतरे को पैर से ठोकर मार दी। (जब देवता पालकी में होता है वह ठोडी (पत्थर) के चबूतरे पर बैठता है उसके चारों ओर दुर्गा मां के लाल झण्डे गडे होते है। लोग उसके दर्शन करते हैं) कुंजी देवी गुस्से से घर गई और बसमोल नाम की झाडी जिसके एक इंच के बराबर लम्बे कांटे होते हैं, बैठने के लिए बिछा दी। व्रत धारण किए उन कांटों के चुभन से उनका शरीर लहू लुहान हो गया पर होनी तो अटल थी उसका पति मौत की आखरी सांसे ले रहा था। वह अपने प्राणों से भी प्रिय पत्नी को आवाजें लगाने लगा।

अपनी टूटती हुई सासो को इकत्रित करते हुए अपनी पत्नी से कहने लगा -हे मेरी भोली भाली देवी तू यह पागलपन कर रही है। मैं नही जानता था कि तू मुझ से इतना प्रेम करती है। तू अपनी इस सुंदर देह को क्यो मुझ नाचीज के साथ जलाग्रोगी ? अपनी हठ छाड दे अगर तू जलेगी भी तो तेरे मायके वाले तुझे जलने नही देंगे। मैं अपने राम से यही वर मागता हू कि तुझ जैसी पत्नी मुझे जन्म जन्मान्तर मिले। सती अनुसुइया जसी वह पाक औरत अपने पति से बोली जिस प्रकार लक्ष्मण ने अग्नि रेखा सीता मा के लिए खीचो थी उसी प्रकार मैं भी अपनी आतो का पुल अपने मायके वालो के लिए लगाउगी। मैं अपनी मर्जी से तेरे लिए मरु गी। जब सब कुछ लुट रहा है तो मुझे जलने मरने का कोई डर नही न ही मुझे कोई रोक सकता है। यह सब सुनते सुनते इसके पति के प्राण उड गए।

हर बडे घराने के खिदमतगार हरिजन होते थे, जिसको कोली कहते हैं। एक तरह से वे नौकर होते थे। रोते रोते कुजी उससे कहने लगी—दो आदमी मेरे मायके चले जाओ। तुम इस तरह से जाना जैसे हवा एक दिशा से दूसरी दिशा म पहुच जाती है। हे हमारे घर के सेवाकारो तुम इस बात को सबम मत फला देना। मेरे भाई का घर के पिछवाडे मे बुला लेना तभी उसको यह बातें बताना।

जब वे हरिजन (कोली) मोलाड नाभ के उस गाव मे पहुचे तो अपने आप को राक नही सके और फूट-फूट कर रो पडे। सब लोग इकट्ठे हुए और उनसे पूछा कि तुम क्या मातम से आए हो और क्यो रो रहे हो ? तो वे रोते हुए कहने लगे—मोलाड वासियो तुम्हारी ध्याण (लडकी) कुजी अपने पति के साथ सती हो रही है। जैसे ही उसके भाई ने यह सुना तो उसका हृदय मानो हाथ मे आ गया और वह जोर जोर से चिल्लाने व रोने लगा और कहने लगा मैं ऐसा कभी नही होने दूगा। महता के लिए मेरी बहन मर जाए मैं ऐसा नही होने दूगा। कौन है जो मेरी बहन को जीते जी जलाएगा ? इस बाली उम्र मे ही अपनी सुंदर देह को एक आदमी के लिए खत्म कर देगी ? मैं उसका और विवाह कराउगा। यह कहते वह फूट फूट कर रोने लगा और पागलो की तरह कहने लगा नही, मैं ऐसा नही होने दूगा।

कुजी बढई से कहती है—हे बढई तू मेरी पालकी इतनी सुंदर बनाना जैसे उडता हुआ उडन खटोला हो। हे सीता जसी पवित्र देवी ! मैं तेरी जुगदु (लकडी) की पालकी में एक तरफ राम, लक्ष्मण और सीता की मूर्तिया बनाउगा। मैं तो राजा का बढई हू। उसका महल भी मेरे ही हाथो से बना है।

सोता श्रौर राम के साथ सारे जीव जन्तु पृथ्वी आकाश सब तेरी पालकी में खोद कर चिन्हित करेगा। सावित्री रानी जैसी महान सती की भी मूर्ति बना उगा पर ध्यान यह है कि कहीं तू इन महान आत्माओं के मुंह पर थप्पड़ न मार देना। मेरी कारीगिरी का भी शर्मिदा न होना पड़े। अगर तू अग्नि के शोलों से डर गई तो तुम्हारे मृत पति की नाक कट जायेगी। उस मौके पर तू जलने से मुंह मत कर देना। अभी तुझे सब लोग रोक रहे हैं। अब भी मौका है तू मान जा। पर वह न मानी और बढ़ई से कहने लगी तू मुझे गाली मत दे। मैं मोलाड वाला की कन्या हूं जुब्बल की रहने वाली हूं। मैं कभी ऐसा नहीं करूंगी। तू मेरी पालकी में मां दुर्गा और काली माता की भी मूर्तियां बनाना ताकि मुझे जन्म जन्मान्तर तक यही पति मिले।

जब पालकी बन गई तो सचमुच ऐसा लगता था जैसे भगवान ने अपना रथ भेज दिया हो। कुंजी ने अपने पति का सिर अपनी गोदी में लिया और जब पालकी लोगों ने उठाई तो लगता था जैसे किसी देवी या देवता की पालकी नाचते हुए जा रही हो। अभी तक उसके मायके वाले नहीं आए थे। वह कहने लगी मुझे उठाने वालो मेरी पालकी कीमू की छाव में ले जाओ (कीमू एक पेड़ का नाम है)। तब तक मेरे मायके वाले भी आ जाएंगे।

जब उसके मायके वाले—मोलाड गांव के लोग आए तो ऐसा लगता था कि कोई सेना भगदड़ मचाती आ रही हो। उनके दौड़ने से खेतों की मेंढें टूट गई और उनके पास बारूद के थैले व देवदार के पेड़ का तेल था जो जलन के लिए मिनट नहीं लगाता ताकि उनकी बहन व बेटी कुंजी की चीख पुकार उनके कानों में न सुनाई पड़ें।

जल्दी से मेरी पालकी उठाओ मेरे मायके वाले आ गए हैं। जिन बजुर्गों के आगे मेरा मेरा सर झुकता था आज वही लोग मुझे देवी की तरह मान कर मेरे आगे हाथ जोड़ रहे हैं। यह मार में अपने साथ नहीं ले जाना चाहती। जल्दी से मुझे श्मशान घाट पर पहुंचा दो। कुंजी का भाई रोता कलपता बहन के पास आता है और कहता है कि हे मेरी प्रिय बहन तूने यह क्या किया? कहीं तेरे साथ जबरदस्ती तो नहीं की गई? तू मुझे बता दे मैं तुझे जलने नहीं दूंगा। हम तेरे बगैर कैसे दिन काटेंगे? इस पर कुंजी कहती है—हे मेरे भाई मैं तो अपनी मर्जी से अपने पति के साथ सती हो रही हूं। मेरी खुशी में तुम्हारी भी खुशी होनी चाहिए हे मेरे भाई तुम सब रो रो कर मुझे विचलित मत करो। होनी तो अटल है इसे कोई नहीं टाल सकता।

जब मास्ती (महासती) कुंजी की पालकी चिता पर रखी गई तो उसके सुन्दर

चेहरे पर एक देवी सा तेज उतर आया और सबसे हाथ जोडकर विदा लेती हुई अपने श्वसुर और जो गाव के श्वसुर लगते थे, से कहने लगी अब आप सब घर चले जाग्रो और अपने भाई व देवरा से कहने लगी तुम मेरी चिता को अग्नि लगाओ।

हाथ जाडकर स्वग की दवियो को नमस्कार किया और उनसे बाली देवी माता मुझे शक्ति दो और अपनी शक्ति रूपी जजीर से मुझे अपने पास खीच लो। मैं आपकी सेवा करु गी और उसने अपनी आखें बन्द कर दी। जब चिता म आग लगाई गई ता एसा लगता था धुए का ऊपरी सिरा आकाश का छू रहा है। माना उसकी आत्मा स्वग को चली गई हो।

इस लोकगीत क अ त म भोले ग्रामीण वासिया का विचार है कि कुजी देवी जो इतनी महान थी जरूर उस दुर्गा व कालियो (सालह शक्ती) ने अपने पास काम को रखा और उसके पति को पाचा पाण्डवो ने अपना कोषाध्यक्ष (भण्डारी) बनाया है।

अ त में उन महान आत्माओ की आत्मा स्वग को गई। मास का भक्षण अग्नि ने किया और हड्डियो का ढेर मिट्टी के हिस्स मे आया

संग्रहण व अनुवाद
कु० सुमित्रा ठाकुर

माई और रूपु

जुब्बल व कोटखाई क्षेत्र म यह लोकगीत खास-खास पहाड़ी मेलो जैसे जागरा, बिशू (बैसाखी) के दिन गाया जाता है। यह गाथा अ. गीतो मे ढली है एक प्रेम कहानी है। इसमे माई नाम की एक लडकी रूपु नाम के लडके के साथ भाग जाती है क्योकि इसकी सौतेली मा होती है। उस सुन्दरी का प्रेमी पति जब मर जाता है तो वह सती हो जाती हैं। अपने माथे के कलक को धो वह मास्ती (महासती) माई के नाम से प्रसिद्ध हुई।

पारब चलाल दू देश रूपुऐ पेडो
माई चारो बाकरी चारे रूपआ भडो।
माऐं जाणीं ले के बाको ले भेडो
छिछडें री छाडऐं रूपु मौऊली सिको।
माई रा मुटु जिणो हारपो जेम्रो निरुको
रूपुऐ फारशे पाऐ गोरू दे चौरणे तू नेह डे आऐ।
माई रे मो रूपु ने होले बोले बताऐ
काठी गाडौरी जातरो कौरे रूपुआ आऐ।
तेरी जातरो माईऐ मौऐ जाणी मैं जाणी
तेरी होली सतडी मुखी छाड बनाणु।
डाठु धाऐ छोइऐ साबणे मुटु जौमे दूधे
कोठी गाडा री जातरो होली मौंगले बुधे।
डे जलेया कोलटुआ मेरी पडाजो
घिऊ देऊ ले गईडो ताखी गुड गडाजे।
डेवदा धा डेवदा माईए तआ रा डोरा
जाणदा न परैणदा रूपु ठीडो रा घौरो।
पैरी गोडे आरटे चुलटे भामटे फेडू

घाघो मेरे माथे जुगो मेंयो न साथ ।
भाणु द घाघो तरें गालो नैं छाड़
घाटो देऊ घाघो री बाघरे गाड़ ।
धारो लागी घुडग़ा री लोई बयाले
ऊभे धोरे रूपुआ ठीढा घुघुए धैंरें ।
घुघुते रे बरदा ताच ढ्वेबड़े घुत्ते
घाफी बई नैं हाढड़े तेरे बा बागणे घुटे ।
घुडगो रें माणुद्धो ताब गादिऐ ताले
उदे धाई बैं हासयैं ऊरें बोलें छालें
बादे तैंणें सुगने घुद्ध मी रें बोलो
परे हुडो रूपुगे तैंणे धादी रो घांधा ।
माई हुई घालोयो बरघो दुई
माई री लागी बापू रा माव रा बमूनी
ठीढा बोटू रूपुआ तेरो दाढी रो बादो
काल पिऐ धारचे हू व माईयो आदे
रूपु तेम ठीढो रें पेटो दी नाणी
छागो तीआ माई री एपी घोबाणी
माईए तीऐ काल बदूरो दू साथा
काले मेरी गोडी रा धैंई जोगो घाघो
बोन्नू ला बालने जाईयो नैं डोरे
ताम्बू घावो का घोद दो रूपु गा मोरे
माऐ घाऐ बाठणी बें घारी ते घारी
माई तीआ बाठणो दे बावती जे नागी
रूपु ते ठीढो रे पोजने हालो
पीजली देऐ हाली दे माईये फाली ●

हिन्दी अनुवाद

रूपु (नायक) चील और दवदार के जंगल में भेड़े चरा रहा था। नाले के दूसरी तरफ माई नामक युवती भेड़े व बकरों को चरा रही थी। माई के अलौकिक सौंदय को देखकर इसने सीटी बजाई और जोर जोर से कहने लगा हे सुन्दर नारी तू अपने मवेशियों को चरने दे और मेरे नजदीक आकर बात सुन। जब युवती नजदीक आई तो एक सजीले नौजवान को देखकर हैरान रह गई। दोनों का मिलन कामदेव ने करा दिया।

पिलाउंगा और खाडू-बकरों का मांस खिलाऊंगा।

कोटखाई के नजदीक पुडग नाम ग्राम की धार पर जब वे चढ़ने लगे तो माई रूपु से कहती है कि अब मैं थक गई हूं मुझे पीठ में उठा ले। उस पर रूपु कहता है — माई ऐसा मत कह सब लोग क्या कहेंगे? हम पर सब हंसेंगे। खासकर पुडग गांव के नौजवान मुझ पर हंसेंगे और कहेंगे कि औरत को इसने पीठ पर बिठाया है। ये सब मेरा मजाक उड़ाएंगे। तेरी कौन सी टांग टूट गई है जो तू चल नहीं सकती। जल्दी जल्दी चल नदी में पानी बढ़ रहा है। लहरों से भीगने लगेंगे इसलिए तू जल्दी-जल्दी चल।

जब वे घर पहुंचे तो उसके बाप मुगनू ने कुछ भी नहीं कहा और शादी करने का इंतजाम किया। उसने उसके मायके वालों को बुलाकर माफी मांगी। उनको शराब पिलाई गई और बकरे काटे गए।

जब माई की शादी हुए दो साल बीत गए तो वह अपने पति से कहने लगी — मुझे अपने मां बाप व भाई की बहुत याद सताती है। मैं दो तीन दिन के लिए जाना चाहती हूं उसकी ठोडी को पकड़ उसे प्यार से मनाने लगी कि मुझे जाने दो। उस पर नौजवान रूपु कहता है कि आज और कल के दिन तू यहीं रहना और तीसरे दिन वापिस आ जाना। तू बेशक चली जा।

माई अपने मायके जाती है। वहां उसे दो तीन के बजाय चार दिन लग गए। चौथे दिन जब वह वापिस आ रही होती है तो उसे दूर से आता हुआ रूपु का नौकर दिखाई देता है। जब वह पास आता है तो उससे पूछती है — तू क्यों आया है? क्या तुझे मेरे रूपु ने बुलाने के लिए भेजा है?

[illegible]र पर उसके गांव का वह हरिजन कहता है कि हे माई अब तो मुझे बोलना पड़ेगा। तुम अपने मन को थाम लेना। तुम्हारा प्यारा पति अब इस संसार में [illegible] उन्हें पेट के दर्द ने मार डाला। यह सुन कर माई पागल सी हो गई। [illegible] (पत्राडी) से दूसरी धार को पार करती हुई जब वह श्मशान [illegible] तो रूपु की लाश को चिता पर रख दिया गया था और तब आग आकाश को छू रही थी। उस प्रचंड अग्नि में माई ने छलांग लगा पति के साथ जल कर सती हो गई। अपने माथे के कलंक को

संग्रहण व अनुवाद
कु० सुमित्रा ठाकुर

बताया कि यहां पर पानी भरा है मुझे पानी पीना है । यह सगुन प्रति द्‍.. था । पर उसकी बात माई नही जान सका यह ना माई का पान पास बुलाना चाहता था । तब वहीं जाकर माई माई और पानी के माटे में रूपु के नि करी पादर म ढक कर पानी म पाई ।

माई अपने प्रेमी रूपु से कहने लगी—हे रूपु आज की रात तुम यहीं रहो। तो पाहे के लिए मेरा धान, धन और पानी मेरी के जो दूगा । उसके बाद वह अपनी सौतेली मा के पास गई और कहने लगी कि मा मैं तेरी लाडली हू आज का मेहमान है उसे खूब दूध घी खिलाना । माई अपनी सौतली मा से लाड जताने लगी । उसकी मां ने गुस्से म कहा

कि तू लाडली होगी अपने बाप की और माई की मेरा कुछ नही उन्ही की होगी । मैं माई मा नही द सकती । जितना भी तुझे मालन मायल उनके लिए मैं कहा स अच्छा अच्छा खाना लाऊ ?

उस पर माई को भी गुस्सा आ गया और कहने लगी हे अम्मा तेरा क्या लगा होगा ? अनाज तो मेरे बापू की खेती का है और घी मैंने अपने आप इकट्ठा किया है ।

फिर उसके मन म विद्रोह की भावना जाग उठी और अपने प्रेमी रूपु से कहने लगी कि हे सु दरता में अनुपम रूपु तू मेरे बापू के घर के बरामदे म लगे लकड़ी के बच पर बैठा रह । अगर मेरी शादी नही कराएंगे तो मैं तेरे साथ भाग जाऊ गी ।

उसकी सौतली मा नही चाहती थी कि इतना रूपवान और अच्छे घर का लडका माई को मिले । फिर उसकी मा उसे चीड के पत्ते को लाने के लिए भेज देती है और साथ मे बथुआ की रोटी बाध देती है ।

जब माई जगल म पहुचती है तो उसे दूर से आता हुआ रूपु दिखाई देता है जो उसकी तलाश मे होता है । जब दोनो मिलते हैं तो जीवन भर साथ निभाने की कसमे खाते है । रूपु उसे वहीं से ले जाना चाहता है । माई अपना रस्सा और दराटी गाव की एक हरिजन लडकी के पास देती है और खुद रूपु के साथ भाग जाती है और प्रेम विवाह कर लेती है ।

माई अपने प्रेमी से कहती है कि हे रूपवान रूपु तू जल्दी जल्दी चल मेरे मायके वाले आ गए तो तुझे मारेंगे । उस पर रूपु कहता है कि उनको आने दो उनके लिए मैं पूरा इतजाम करूगा और उनको खाली नही रखूगा । उन्हे शराब

पिलउगा और खाडू-बकरो का मास खिलाउ गा।

कोटखाई के नजदीक पुडग नाम ग्राम की धार पर जब वे चढने लगे तो माई रूपु से कहती है कि अब मैं थक गई हू मुझे पीठ मे उठा ले। उस पर रूपु कहता है — माई ऐसा मत कह सब लाग क्या कहेगे? हम पर सब हसेग। खासकर पुडग गाव के नौजवान मुझ पर हसेग और कहग कि औरत को इसने पीठ पर बिठाया है। ये सब मेरा मजाक उठाए गे। तेरी कौन सी टाग टूट गई है जो तू चल नही सकती। जल्दी जल्दी चल नदी मे पानी बढ रहा है। लहरो से भीगने लगेगे इसलिए तू जल्दी-जल्दी चल।

जब वे घर पहुच तो उसके बाप मुगल ने कुछ भी नही कहा और शादी फेरो का इन्तजाम किया। उसने उसके मायके वालो को बुलाकर माफी मागी। उनको शराब पिलाई गई और बकरे काटे गए।

जब माई की शादी हुए दो साल बीत गए तो वह अपने पति से कहने लगी — मुझे अपने मा बाप व भाई की बहुत याद सताती है। मैं दो तीन दिन के लिए जाना चाहती हू उसकी ठोडी को पकड उसे प्यार से मनाने लगी कि मुझे जाने दो। उस पर रूपदान रूपु कहता है कि आज और कल के दिन तू वही रहना और तीसर दिन वापिस आ जाना। तू बेशक चली जा।

माई अपने मायके जाती है। वहा उसे दो तीन के बजाय चार दिन लग गए। चौथे दिन जब वह वापिस आ रही होती है तो उसे दूर से आता हुआ रूपु का नौकर दिखाई दता है। जब वह पास आता है तो उससे पूछती है —तू क्यो आया है ? क्या तुझे मेरे रूपु ने बुलाने के लिए भेजा है ?

उस पर उसके गाव का वह हरिजन कहता है कि हे माई अब तो मुझे बोलना ही पडेगा। तुम अपने मन को थाम लेना। तुम्हारे प्यारा पति अब इस ससार मे नही है। उसे पेट के दर्द ने मार डाला। यह सुन कर माई पागल सी हो गई। एक धार (पहाडी) से दूसरी धार को पार करती हुई जब वह शमशान घाट पहुची तो रूपु की लाश को चिता पर रख दिया गया था और सब आग की लपटें आकाश को छू रही थी। उस प्रचड अग्नि मे माई ने छलाग लगा दी और अपने पति के साथ जल कर सती हो गई। अपने माथे के कलक को धो डाला।

सग्रहण व अनुवाद
कु० सुमित्रा ठाकुर

महासती लोता

महासती (माम्नो) लोता अपने पति भागचन्द के साथ सती हु थी। भागच द जुब्बल के डील गाव का निवासी था और उसकी पत्नी लोता का मायका (पीहर) मढोल, सनतालनी म था। लोता क पति भागचन्द, पटवारी था और पमाइश के लिए किन्नौर गया था वहीं से बीमार होकर घर आया और भरी जवानी म उसे मृत्यु ने अपने शिकजे मे ले लिया। उसकी पत्नी लोता उसके साथ सती हो गई। आज भी जागरा (देवता के जगराते), बीशू (बैशाखी), के मेलो आदि मे इनकी पवित्रता के गीत गाए जाते हैं।

चचुआ कटुआ बाधा दे बाधो
ऐबे मेरे करणो नाडी रो बाधो।
काठी दू दणो गाडीयो सुनागणो बाधो
घोई कौरे बेटिया शादी रो बाधा।
कोठी दू देणा गाडीये किन्नीकाफो रो ढाठू
तिणो आणो बेगणो तू जिणा आपू।
ढाऊ हाड़ा चेऊडा नावरो न ले
केईरे बाके मिलदे मू चोजो रे डाले।
एक वै ढेवे नेगटुआ छौंऊ चुहारे
तीनो साथी भितरी डौवो न म्हारे।
एक न आणे नेगटुआ टोपुऐ आलो
कामो री मुई मटुऐ देओ गाली।
लौटे पौड़ा चुटियो चिव री बाटो
रोपा रूबी खिमटै रा देवो रे हाटो।

पावणा नाई बोलना आया हाव वित्त
आव ता मोए बणजो लागो ओ चितै
एक नै देई बापूआ झूठा भरोसा
पाकडे छाडा बापूए करासू रा साथा
साथा करासू रा देईयो पाछू
ढीलो मरै ठाछ रो गावटू आछो
बीतर आए नेगटुआ खाए लो खाणो
घियो देऊ बदरी रे कन्या दानो
क पा तेरे नि दा नाई पापो रा पिण्डा
बीशो गाई चालशा आगले देदा
बीतर आए नेगटुआ हाथछू धोए
दूधो घिऊ भो रै पाके रसोए
झागो रे काकडे जुडी फसादे
होए ओदें छोटे चोरी बै जादे
तौगे लाऐ आगुए छौले बशीशे
सोले लाई तोलै री मुगडी माथे
मुख न लाए नेगटुआ इतरे कागो
मोड मेर आच सनागणो भागो
कागणो देऊ माथी सुनागणो ताव
ढीलै मेरे ठाछ रा घरै ले नाव
काले पाखे दगला देऊ सोद खो ताव
देओ खो चाणू देवहे गोऐ ताव
लाए गावा जोपियो घरो सी आए
ताव धाडू बोदद घरो रे दाए
पारो आओ सतानली दू गाडरो मेरो
कूटो पिशो बापूआ ओसो मी तेरै
कुटै री मेरै मानशी पिश रै खादे
माऐ दे मतानलू घिऊ सिडकु खादे
लोतै रो ढैलो गाडरो शिलो री सेरी
मुए पापी जो रे जिऊदे तेरे
लोतै हुई आणीयो बरशो दुई
धुघो मो घिऊ री मौरबी कुई
लोते हुई आणीयो बरशो चारो
पाया करो पितलू बाओ उधारो

उगदो म्हतो दे बागा पलाशो
कासो कनावरी द बौर्न पामशो
एशो नै मौर नेगटुआ घोरो र आगा
नगटु आए भाग चोदो घोरा र आदो
गुम्टु र द मिट्टा घरी री छूटा
मां री लागो बापू री साते री कमूसी
घाठा पूजा सांई सो पादुई याथी
लास तिमो वाटणी ट बावलो भाग
कोट्टू रा माधो नेगट्ट बानाए मूड
सिरैं साथे सिरसो जादे चयाए
चुली काई सोतमा मरो सोडो छांव
बाठणीए छबडीय तादू छुटेगा हाथ
छाए ले सोडो लागी ले दद
ओकरे कमाए मेरे किणे होदे
सोतैं री घाडो गली दो नेगीऐ मूडो
लागो ली माणी तू जब ले कए
इणो नैं बोले तू सो ज मो रा साथे
जाओ लो नेगटु नो जोलू न साथ
फिमटी चाल लाड्दे जासती जाले
ओठ दमो लवरीयो स्टूकी र ताले
नारे बेटो नेगटु एब मा जाए
बापूए कोटु दणो लाम्बो तरागा
पापी पूचे जोरैं हाथ जिऊदा जागा
जुगटु चालो लानै रा देमो डेमो
सोहल लालो सावणो व बादे देमो ●

हिंदी अनुवाद

इस लोकगीत का नायक अपने चाचा कटु से कहता है हे मेरे चाचा मुझे कोई सोने की चीज दे द अब मैं जवान हो गया हू। मैंने अपनी शादी का इंतजाम करना है। उसका चाचा यह सुनकर अति प्रसन्न हुआ और अपने सन्दूक स सोने के गहने निकाले और कहा — हे मेरे बेटे तूने तो मेरे मन की बात कही है तू बेशक अपनी शादी का इंतजाम कर सकता है। नाम चन्द (नायक) के पिता ने अपने सन्दूक से किनीकाफ नाम का

कपडा (सिर पर बाधने वाला डाटू पहाडी औरतो का पहरावा) निकाल कर दिया (जिस पर साने चोटी का मुकम्मल काम होता है) और कहा जितना सुन्दर तू है उसी प्रकार तेरी नेगण (नेगी की औरत) भी सुदर होनी चाहिए तभी तेरी सुदरता मे चार चाद लगेगे। वह चार पांच गाव घूमकर आ गया पर उसे कही भी सुदर हाली नजर नही आई। गाव हाऊ, चेवडी नावर पर उस कोई भी लडकी पस द नही आई।

जब घर पर वापिस आया और तब उसके बापू ने कहा कि बेटा एक बार फिर कोशिश कर। जब वह जाने को फिर म तैयार हुआ तो उसके पिता कहने लगे कि चुहारा (जो छोटी सी रियासत थी जिसे अब रोहडू भी कहते हैं) कि कोई भी लडकी नही लाना क्योंकि वे बडी जुबान तरार्र होती है टोपियां पहनती है इनके साथ किया हुआ रिश्ता कभी सफल नहीं होता। उसके बाद वह जुब्बल के एक गाव चिवा के रास्ते होता हुआ हाटेश्वरी माता के मदिर के पास पहुचा। थक कर विश्राम करने बैठ गया। जो नेगी के साथ उसका हरिजन नौकर (कोली) था उसने अगुली के इशारे से एक लडकी को दिखाया जो कि खीमटा खानदान की थी। वह अपने गाव की सहेलियो के साथ धान की रोपाई कर रही थी। वह उन सबसे सुदर दिखाई द रही थी — जैसे तारो म चद्रमा। वह (नौकर) अपने मालिक से बोला हे मालिक वह देखिए सबस बीच मे जो खडी है वह आपक लिये ठीक बठेगी। इसकी और आपकी जोडी सोने पर सुहागा जैसी बन पडेगी।

वह देखो जिसने नाक मे साने का कोका और कानो म सोने की बालिया पहनी हुई है। उसक बाद वह एक खेत से दूसरे खेत म आया और खेत की मेढ पर बठ गया। क्या वह जिसने छोटे छोटे फूलो वाला कुर्ता और काला वास्कट पहना हुआ है? सच्च वह ता बहुत हा सुदर है! अब किस तरह इसके साथ बात करेगे?

नौकर बातों का बडा माहिर था उसने ना आव दखा ना ताव कहा और बीच खेत मे खडी लोता को खेत की दूसरी तरफ बुला लिया जहा पर भाग च द नेगी बैठा था। वह हैरान हो कर उस सुदर गबरू जवान को देख रही थी जिसके सलौने मूह पर पसीने की न ही न्ही बू दे मोती के समान चमक रही थी।

मेरे गाव का नाम शील है क्या तू मेरे गाव मे चलकर घर की शोभा बन सकती है? हे सुदर लड़की! क्या यह बात मैं तुमसे पूछ सकता हू? लोता की आखे शर्म और गुस्से से लाल हा गई और कहने लगी मैं तुझे यहा खेत

खलिहान में क्या बोल सकती हूं मेरा घर सतानली गांव मे है तुम वहां आ जाना तभी बात होगी।

गांव की औरतें और बच्चे आपस में फुसफुसाने लगे। धीरे धीरे बात करने लगे कि लोता के साथ यह सुन्दर परदेसी लड़का कौन है जो इससे बातें कर रहा है? वह घर जाती है और अपने बापू से कहती है कि पिता जी आप बाहर जाइए और देखिये कोई मेहमान आया है। पता नहीं यह आपसे क्या कहना चाहता है? जरा सुनिये तो सही।

मागचन्द नेगी कहता है कि मैं कोई मेहमान नहीं हूं ना ही मेरी कोई बुरी नीयत है। मैं तो अपने लिए रिश्ता खोजने आया था। खोजते खोजते मैं जब इधर आया तो मैंने इस लड़की को देखा जो मेरे मन को भा गई। फिर लड़की अपने बाप से कहती है कि इस आदमी को झूठी तसल्ली मत देना इसको साफ साफ कह दें कि मैंने करासा के गांव में इसकी बात की हुई है। उन्होंने मगनी भी कर दी है।

तुम इसकी मगनी की सब चीजें वापस कर दो मेरा शील गांव बहुत ही अच्छा है। लोता का पिता कहने लगा कि हे नेगिया के लड़के तू अपने हाथ धोकर खाना खाने अन्दर आ जा फिर कोई भी बात बाद में हो जाएगी। मैं अपनी लड़की का कन्यादान कर दूंगा।

मैं तेरी कन्या को चाहता हूं। तेरे दहेज मे दी हुईचीज लूंगा। तो मैं पाप का भागी बनूंगा। मैं तो उल्टी तेरी मदद करूंगा जहां तू बीस रुपये लगायेगा मैं तुझे चालीस दूंगा। एक तो मां बाप अपने मांस का पिण्ड देते हैं ऊपर से अपना सब कुछ दे दें। मैं अपने लिए पाप नहीं कमाना चाहता। मुझे तू बस लड़की ही दे देना।

लोता का बाप बातों को टालता है और कहता है कि तू अन्दर तो आ जा इस गरीबखाने मे दूध घी और शहद की ही रसोई पकी है। पहले तू हमारे घर का रूखा सूखा खाना खा ले फिर देखी जाएगी। उस पर नेगी कहता है कि आप तो टाल मटोल कर रहे हैं जैसे ककड़ी की बेल में ककड़ी नहीं छुप सकती वैसे ही घर की कन्या भी छिपकर नहीं रह सकती। वह आते जाते को दिखाई पड़ जाती है।

घर मे लकड़ी के बरामदे मे मागचन्द नेगी लोता से कहता है जो तू कहेगी मैं तुझे दूंगा। तोले तोले की बालियां तेरे सुन्दर कानों के लिए बनाऊंगा तुझे सोने चांदी से भर दूंगा। तू एक बार हां कह दे। लोता गुस्से से कहती है कि हे नेगी

लडके तू मेर कान मत खा । मरे मायके वाले बहुत खराब है वे तुझे टालन के लिऐ बहुत कुछ मागेंगे तुम कहा से दोगे ?

नेगो कहने लगा तुझे मैं ममो कांगन और सुनागन (सोने के बडे बडे कगन) तेरे पीहर वालो को दूगा। सोने से जडित (दगला) चोला तरे सु र वन के लिये दूगा और तुम्हारे कुल देवता का भी मंदिर बनाऊगा तथा तुझे गहना मे भरपूर कर दूगा। इस पर लोता कहने लगी मुझे तेरे गहनो की भूख नही है पर मेरे पीहर वाले नही मानेगें ।

किसी तरह लोना के बापू का शादी के लिए राजी कर दिया और मागच द (नायक) खुशी खुशी अपने घर पर चला गया। जब वह अपने घर पर पहुचा तो अपने बाप से कहने लगा कि मैं अपनी शादी पक्की कर आया हू क्या शादी का पूरा इतजाम है? मैं बहुत बडी धाम दूगा। आटा चावल कितने है आप के पास ? इस पर मागच द के पिता ने जवाब दिया बेटे अनाज के भण्डार है तू किसी बात का फिक्र न कर। मेरे घर मे सब कुछ है।

जब लोता के यहा बरात पहुची तो ऐसा लगता जैसे पूरी सना चल रही हो। ढोल-नगारों, शहनाइयो की गूज स आकाश गूज उठा जब शादी का हो हल्ला खत्म हुआ ता लोता अपने पति मागचन्द से कहने लगी कि जब मैं मर जाऊगी तब तो मुझे यमदूत ले जायेंगे पर जीते जी तुमम मुझे कोई अलग नही कर सकता। मेरा जीना व मरना तेरे ही लिए है।

दिन पर दिन बीतत गए। लोता को शादी हुए दो साल हा गए थे। सचमुच वह लक्ष्मीरूप थी। जबसे वह उस घर म आई थी तो दूध घी की कमी नही रही थीं और शहद स कुप्पे भर गए थे। उनके घर से लोग अनाज व पसे उधार ले जाते थे। उसके आने से किसी भी चीज की कमी नही रही थी।

बशाख का महीना था। पक्षी चहचहा रहे थे। मागच द को घर की याद सता रही थी। वह किन्नौर मे पैमाइश के काम लगा हुआ था और उसे घर जान की छुट्टी नही मिल रही थी। कुछ दिन बाद उसने अपने अफसर से छुट्टी मांगी कि उसे अपने मा बाप की व प्राणो से भी प्यारी पत्नी की याद आ रही है। पर उसे छुट्टी नही मिली।

वह किन्नौर मे ही बीमार हो गया। उसक अफसर ने उसका एक घाडा दिया साथ में एक आदमी भी उसके साथ भेज दिया। जब उसका घोडा घर के नजदीक पहुचा तो वह बुखार से तप रहा था। दद के मारे सिर फटा जा रहा था। माथे को मफलर से बधा देख उसकी पत्नी लोता पागल हो उठी कि यह क्या हो गया? वह अपने पति की तरफ भागी।

हे मेरी सुन्दर पत्नी! अब तेरा मेरा साथ छूट रहा है। जरा जल्दी मेरे लिए चूल्हे के पास बिस्तर लगा दे क्योंकि मुझे बहुत ठंड लगी है। यह सुन कर लोता रोती हुई कहने लगी—हे मेरे भगवान मैंने ऐसा कौनसा पाप किया है जिसकी तू मुझे ये सजा दे रहा है? मेरे पति को अच्छा करदे बदले में मेरी जान ले ले। प्रभु तू क्या मुझ मासूम की जिन्दगी बर्बाद कर रहा है? लोता के पति ने अपना सिर उसकी गोदी में रख दिया और बुखार से हुई बोझिल हुई पलकों को उठा उसके आंसुओं से भरे सलोने मुंह को देखकर कहने लगा—तुझे मेरी कसम अगर तू रोए। मेरे मन को और दुखी मत करो। हे मेरे प्राणों से भी प्यारे ऐसा मत कह। तू तो मेरे जन्म-जन्म का साथी है। जब तू मर जाएगा तो मैं भी तेरे साथ मर जाऊंगी।

अपनी बात पूरी भी न कर पाई थी कि उसकी गोद में भागचन्द के प्राण निकल गए। फिर लोता ने चुपचाप उसका सर नीचे रखा और अपने श्वसुर से कहने लगी आपका बेटा यह दुनिया छोड़ चुका है। बाप ने जैसे ही सुना जोर जोर से रोने लगा और कहने लगा पापी यमदूत ने मुझे जीते जी मार डाला मैं कहां जाऊं क्या करूं? लोता ने चाबियां ली और अफीम खाने चल पड़ी।

जब लोता की पालकी श्मशान घाट को जाने लगी तो लगता था जैसे किसी देवी का रथ उड़ रहा है। उसमें सारे देवी देवताओं का चिह्न किया गया था। अपने पतिव्रता होने का प्रमाण देकर भोली भाली ग्रामीण बाला स्वर्ग का दरवाजा खोल गई और मास्नी (महासती)लोता के नाम से अपनी लोक गाथा अमर कर गई। आज भी हर बच्चा व बूढ़ा यह लोकगीत गुनगुनाता सुनाई देता है ●

अनुवाद व संग्रहण
कु० सुमित्रा ठाकुर

मिया दाऊद और महासती नरजी

मिया दाऊद और उनकी पत्नी नरजी का लोकगीत रोहड़ू और जुब्बल क्षेत्रो मे अधिकतर मेलो और त्योहारो मे गाया जाता है। एक पहाडी गाव की सीधी सादी यह राजपूत कन्या अपने छ महीने की बच्ची को छोड, अपने पति के साथ सती हो गई थी। और अपना नाम मास्ती के रूप म प्रसिद्ध कर गई (मास्ती का अथ महासती है)। इसलिए इन देवियो की कुर्बानी को लोकगीतो म ढाल दिया गया और ये लोकगीत न जाने किस काल से गाए जाते हैं। आज भी इनके गीत बडी श्रद्धा से गाए जा रहे हैं। अपने पति के प्रति उनका अगाध प्रेम पवित्रता का प्रमाण देता है।

मुला मलाए औले बेरे मलाऐ
मारथ माम नरजो हेड़ ल गाऐ
जो पाके चौऊकी बागी लोए पाणे राती
हाथे किऐ नरज ए शणबादे दाबे
बेहू देणे बमणा जो लऊद लाऐ
आपू गोऐ नरजै लाहे घोगे ली आऐ
चूप चूप छेड़ ओ तूऐ क ग भी नै लाओ
पारी बेयो सुणीयो मिये दाउदो रो नाव
उगी देही नरजीऐ सेरे दी फाली
हार्थ माई मोलुईया जो गेहू री डाली
चाडीयो नै नरजीए गेहू री डाली
गोडो री छेवडी दयो माई री गाली

लाडी तीऐ नरजीए तबड़े पी जाएा
बाघ जिणो बानीये खाली आंगणे आणे
नैरे ला था दाऊदा मिया नैरे जा राऐ
किदी म्हारे करणो नाई बए सुगरी रो मासो
मौकते थे पोइतो म्हारे मौक्ते थे छासो
समझो ले नरजीए बोले बताए
बोले बताए पाऊ मौडें ख तेरें
छ महीन रे बेटको रे पाईदे नैं मेरें
छ महीन री बेटकी रे कौरीयो न झौरे
नाना बूड़ दाचो धीऊ शाकरें कौरे
छ महीने री बेटकी रा कौरीपो नैं घाका
दादा बूड़ घाचो धनी देवरो काका
कुए तेरे गोडी दा गडाईतो कोले
छाडो मेरी बरासली खी उढदे जाऊँ
कोलीया गदाईत फूको नैं बोले
माई पूछे लडकू नव घौरे रे भोचें
माई तेरएँ खोडकुए दूरो दू शामो
बेठू मेरी बौहणो कैई जोगो भामा
बापू ला बोलगी जाऐयो नैं ठौरे
लाडे टाडूए जौलदे मिया दाऊदी गा भौरे
माए मानो ला खोडकू मुकीयैं हीमो
एट देवा मातीया का दाऊदी दो कीयो
सुगरी रो सुगटु गी सौऊ को फीरे
मीयां हेडा दाऊदो दुई बीलै चौरे
एक लाए कराडीये लागे लोहू रे फीशो
दूजो लाए कराडाए लाटो तांबडा घीशो
गोडो र लाए गडाईनें फूके टयाले
जौले गोए बरासतुभो घ्याणो तारे
धनीया बानू देवरा [illegible]ची का तेरे
मौडें भ्रा मास्ती र कौरे सकेरें
बाडी रें बडहुभा तू सो राजे री कीया
तीणो स्याणा जुगटु चाणे सते सीया
गोडो री देवडीया मेरीयो माभो
एक घौड़ पाणी रो मुखें नाईणे खी साधो

गोहो री छेवडीयो कोरो सकेरे
ह दे कई ने नरजीये सुवो का तेर
ह दे ने भूरदे ढोलद ने माधु
री छेवडीयो हाथ मास्ते मोसू
खुरा बोलो ताथ बळऐ जलने ने देऊ
धोने मेरे माफडा ताव तेसरी फरेऊ
एक बोलने बोलीया दुजे बोलीयो ऐतो
घने दोंना देवरो माई लोडनू जेतो
बादे चाले बरासलू मावला माठू
गिने देऊ मानजी मो दनयो वाहू
चुगी मेरी जुगदु पोउदे चालो
नाचे माऐ नरी रे मोरु रे जे छालो
माऐ पूधो लोड्यू जुगदु रे मोले
टाटो मेरी बदणीए मुईले चोले
टाटो तेरो माईया कुस मो की रे जोलु
चुगी मामो नरजे बाडो लाकरो गुडो
पोरु लिमो इयो बेटको लोरे पोडे कडो
दाधू तूऐ दोवरे मरो ली जामो
धनीया बोलू देवरा तूऐ उकला लामो
भामी री लागी लकके दागसो पामो
सोलह बालू दावणीयो तूए मरीयो मामो
सास हवा मेन्गे मोम मोगी ले भागो
हाडी रे रडकु रोऐ माटी रे मागो ●

हिन्दी अनुवाद

मेले में भाए हुए लोग सब इकट्ठे हाकर नाचते गात हैं और देवी नरजी का म रय (कहानी) गाते हैं।। जो की खेती पक गई थी और नरजी अपने नौकरा को साथ ले हाथ मे घुघरुओं वाली दराटी ले जो काटने खेत में गई। नौकरों को खेत दिखाकर उनको काम देकर खुद घर की ओर चल पडी। नौकर जो काटने लग पडे। जब वह वापिस आ रही थी तो उसे कहीं से धीमी आवाजें सुनाई पडी और फिर वह नौकरो से कहने लगी तुम जरा चुप हो जाओ मुझे अपने पति दाऊद का नाम सुनाई पड रहा है कोई शायद उन्हें पुकार रहा है।

नरजो घबराई हुई एक खेत से दूसरे खेत में छलांगे लगाती हुई घर की तरफ भागी कही हाथ म जो की ओर कही गेहू की डालियां उखाड कर भा गई गांव की औरतें यह सब देख रही थी और उस गालियां देने लगी कि गेहू और जौ के खेतो के बीचो बीच जा रही है और अनाज खराब कर रही है।

नरजो जब घर पहुंची तो उसे मालूम हुआ कि शेर जसै बलवान उसके पति बाघ की तरह बांध कर लोग घर लाए गाव के लोगो ने उसके जख्मी शरीर आंगन मे रख दिया। रोते रोते नरजो कहने लगी कि मैं तुझे इतना रोक रही कि हमने जगली सूअर का मांस क्या करना है हम रूखी सूखी ही खा लेंगे। हम घर मे घी दूध लस्सी दालें सब कुछ तो था, फिर भी तुम नही माने। मियां दाऊ अपनी पत्नी की ओर देखता और हाथ बढ़ाता है तो नरजो कहती है मैं अपना वायदा नही भूली। जीना भी तुम्ह संग या मरूगी भी तेरे ही संग। मियां अपनी छोटी बेटी की तरफ देखता है। नरजो उसकी बात का समझ गई और कहने लगी कि हमारी नन्ही बच्ची को उसके दादा दादी और नाना नानी दूध घी खिला से पालेगें।

तुम छ महीने की बेटी को छोडने का गम न करो अपनी आत्मा पर बोझ मत जाओ इसका चाचा धनी राम इसे अपनी बेटी की तरह देखेगा। मैं इससे लेती । नरजो यहा बैठी गाव वालो से कहने लगी कि अब आप मेरे मा के घर गाव बरासली को दो आदमी भेजो और उन्हें पता दो कि उनकी लड़की सती हो रही है।

जब उनके गाव के दो हरिजन जाने लगे तो उनसे कहने लगी कि तुम धोर न मचाना चुपके से मेरे भाई को नए बने हुऐ घर के पास बुलाना तभी उसे सब बात कहना। नरजो के भाई ने उन्हे दूर से आते हुऐ देख लिया और कहने लगा कि मेरी बहन के काम करने वाले क्यो आऐ हैं और उनसे पूछने लगा कि तुम क्यो आये हो उस पर एक ने कहा कि अब बोलना ही पडेगा पर आप डर मत जाना अपने आप पर काबू रखना। आपकी बहन नरजो ने सती होने की ठानी है क्योंकि उनका पति अब इस ससार मे नही रहा।

भाई खडकू अपनी छाती पीट लेता है और कहता है कि मियां दाऊद को क्या हो गया था। हे भगवान तूने यह क्या कर दिया।

उस पर नौकर कहने लगा कि मियां दाऊद सूअर का शिकार खेलने गये थे अचानक उन्होंने एक आदमी की परछाई देखी और थोडी ही देर मे एक सूअर उन पर झपट पड़ा पर मियां दाऊद ने उसे कुल्हाडी से मारा उतने म एक सूरनी आई।

जसे ही वह उसे मारने दौड़े तो उन्हें एक सफेदपोश आदमी दिखाई दिया और मियां डाकू ने सोचा कि वह जरूर कोई देव है और उनका अन्त हुआ।

सारे गाव वाले इकट्ठे हो गए उनसे कोली (हरिजन) ने कहा कि हे बरासली गांव के लोगो तुम्हारी महान लड़की नरजो अपने पति के साथ मास्ती(महासती) हो रही है आप सब धन्य हैं।

दूसरी तरफ — नरजो अपने देवर से कहती है कि अब भाओ मन नव यात्रा की तैयारी मे लग जाओ और मेरे लिए भी सुन्दर पालकी बनाओ।

उसके बाद वह बढ़ई के पास जाती है कि तू ला राजा के महलो का बनाने वाला है मेरी पालकी को अति सुन्दर बनाना लगे जैसे कोई बारात आ रही हो। हां देवी मैं वैसा ही बनाऊंगा। उसमे सारे देवी-देवताओ और राम की पत्नी सीता देवी की मूर्तियां भी बनाऊंगा।

उसके बाद वह गांव की औरतो से कहती है हे मेरे गाव की मां और बहनो अब मुझे नहलाओ मेरा पूरा श्रृंगार करो।

गांव की औरतें कहती हैं कि तुझे क्या हो गया है तू तो रो भी नहीं रही है। क्या पागल हो गई है जो तुझे रोना भी नहीं आता हमारा तो कलेजा फटा जा रहा है। उस पर नरजो हुम करकहती है मैं न रोऊंगी, और न मुझे कोई गम है। हे मेरे गावकी औरतो मैं तो अपने पति सग जल जाऊंगी। उसके साथ सती हो जाऊंगी। फिर रोना धोना क्या।

नरजो का ससुर नरजो से कहने लगा कि -हे मेरे घर की शोभा, मेरी बहू मैं तुझे जलने नहीं दूंगा। तेरी शादी मैं अपने छोटे बेटे धनी राम से करांऊगा

हे मेरे पिता समान ससुर जी एक बार तो आप ने बोल दिया भगवान के लिए अब ऐसा अपशब्द मुंह से न निकालना क्योंकि देवर धनी राम मुझे अपने भाई लडकू के समान है ऐसा पाप मैं सोच भी नही सकती।

उसके पीहर वाले बरासली गांव के और उसके मामा साहू राम भी आ गए। जिस तरह से आले आते हैं उसी तरह बहुत तादाद मे। उसके पीहर वाले आए मामा साहू पूरा श्रृंगार का समान और मसरूदरया नामक कपड़े का ढाहू लाया। हे मेरे गाव बदशाल के लोगो अब मेरी पालकी उठाओ। मेरे मायके वाले और मामा भी आ गए हैं। छोटा भाई लडकू जोर जोर से रोने लगा और पालकी के पास आया और कहने लगा कि बहन तुम क्या सती हो रही? तुम्हें किस बात की मुश्किल है जरा अपनी छोटी बच्ची का भी तो सोचो। जाने वाला तो चला गया। हे मेरे भाई मत रो मैं तो अपनी मर्जी से अपने पति के साथ सती हो रही हूं तुम सब मेरी बच्ची का ख्याल रखना।

नरजी अपनी म ही बेटी को खूब प्यार करती है और छाबकर उसके मुह म देती है और अपनी सास को कहती है कि अब इसे यहां स ले जाओ क्योंकि तब धूप मेरी यह म`ही बच्ची नही सह पा रही है, इसलिए इसे घर ले जाओ। अपना ममता का गला घोट कर वह वहां से चल दी । पालकी श्मशान की तरफ चल पड़ी। जितने भी गांव के श्वसुर और सास है वे घर चले जाओ मैं आपका अन्तिम आखरी नमस्कार कहती हू। हे मेरे भाई समान देवर तुम चिता को आग लगाओ। नरजी आंखे मूंद सोलह रूपी काली माता व दुर्गा माता की प्राथना करने लगी कि हे मां मुझे शक्ति दो । आग की लपटें आकाश को छूने लगी एक देवी ने अपने आप को पति के साथ सती कर दिया अपना नाम महासती नरजी के रूप मे अमर कर गई ।

आत्मा तो स्वर्ग मे चली गई और मास को अग्नि ने अपना भोजन बनाया और हड्डियां माटी के हिस्से मे रह गई ।

संग्रहण व अनुवाद
कु० सुमित्रा ठाकुर

घेशू लोंभिया

यह गीत एक दुखद घटना पर आधारित है। कुल्लू के कुछ लोग पुरुष, स्त्री-बच्चा मे जगलात के ठेकेदार के साथ काम पर गए थे। उन में घेशू और उसकी पत्नी भी थी। सुन्दर नाम का एक युवक घेशू की पत्नी पर आशिक हो गया। वह घेशू को शराब पीने के बहाने गाव म ले गया और वहां उसे मार दिया। परन्तु घेशू की पत्नी उस के हाथ न आई। वह किसी तरह वहा मे भाग कर घर पहुँची। उसी ने पति के दुःख मे यह गाना गाया जो लोकगीत बना -

घेशू लोभीया, जान धीनी ओऊभा रे खूडा
लामा रा होठा थी बाणा कामा ब घौरे आपणा छूडा
भूरी लोम रोह सोदा ब माण्हू री काया रा धूडा
दणा छौंडिया प्रदेणा बे आणा कणी रा खोडुआ बूरा
मारदा मौत डे पापी सुदरा घौरा छुटी बुढमू मामा
घौर छुट्ट भाई भूई रा हौद छुट्ट बूढलू मामा
हौठे छुटे बालब मेरे बाबू छुट्ट मारदा हाका
कुणी रा खोडुआ पापी सुदरा, देईरा नी थी कौसी बे धाका
मारदा मौत हे पापी सुदरा हौथा रे कागणु देनू
देऊआ बे देनू बोकरू देवी बे सनागणू देनू
मारदा मौत हे पापी सुदरा लोका रे देशे
कुण धाचला आमा बापू बे कुण जाला ति हारी भेशे

हिन्दी अनुवाद

हे पेनू प्रेमी, जान दी (तूने) औ मे सुङ म (घास और पशु रखने के कमरे मे,
मा गया था ॥ जगल के काम, घर म तेरे काफी था(कमी न थी)।
प्रेम- प्यार जीवित रहा है हमेशा के लिये मनुष्य के शरीर की धूलि बन गई
देश छोड़ प्रदेश गया, जिस का बुरा(काम) सदा हो गया
मारना मत हे पापी सुदर, घर में छूट (रह) गई बूढ़ी मा
घर छूट गया तीन मजिल का और छूटा बूढा मामा
छोटे छूट गये बालक मेरे, बाप रह गया मारता आवाजें
किस का पाप सदा हुआ (कारण बना) दिया नही था किसी को धक्का (भी)
मारना मत हे पापी सुदर हाथ के कगन दे दू
देवता को दूगा बकरा देवी को साने का कगन दू
मारना मत हे पापी सुदर लोगो के देश मे
कौन पालेगा मा बाप को कौन जाएगा उन की देख भाल के लिए □

संग्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

फूला देई बाह्मणीए

भीतर मे मेला लगा था। लोग पी कर मस्त थे। विश्राम गृह मे मन्त्री महोदय पधारे थे। तभी एक सरकारी अधिकारी को बाहर अपनी पुरानी प्रेमिका फूला देवी के दर्शन हुए। लड़की 'राउगी नाला' गाँव की विवाहित स्त्री थी। उसकी गोद म एक वर्ष का बच्चा था। अधिकारी ने फूला देवी को बच्चे समेत जीप म डाला और जीप दौडा कर उसे ले भागा। साथ कुछ और मुस्टंडे हो लिए। अभी जीप बहुत दूर न गई थी कि एक खड्ड मे गिर गई। सभी सुरक्षित थे। केवल फूला देवी दुर्घटना का शिकार हुई।

फुना देई बाह्मणीए, ठाडे कमरे
ठारा पीई बोतला, ठाडे कमरे
ढेके रे बोले तू सूनी नींदरे
प्रापू रौही सुतिया, छोली खाई बादरे
साभा ढीसी थी लोगड़े, दोथी शादरे
जाच लायो थी भूइण बाबू चदरे
राउगी नाले री बाह्मणीए पाई जीपा भादरे
तू बी बेठी था बाह्मणीए, जीपा भांदरे
सड़का छोटिया बाह्मणीए जीपा नाल जादरे
प्रापू पूजी तू नाला न छोहरू भीफा जोदरे
लाश पूजी तेरो बाह्मणीए ठाणा हादरे
सोढ खाई थी बाबूए नेगी लाम्बरे

हिन्दी अनुवाद

फुला देई मेरी ब्राह्मणीए ठण्डे कमरे मे
अठारह पी ली थी बोतलें (शराब की) ठण्डे कमरे मे
खेत के किनारे साई तू गहरी नींद मे
आप तो सोई रही मक्की खाई बदरो ने।
शाम को मारा था तुझे डण्डे से प्रात लकड़ी विशेष से
मेला लगा था भूतर मे, बाबू चदरे ने
राउगी नाले की ब्राह्मणी डाल दी जीप के भीतर
तू भी बठी थी ब्राह्मणी जीप के अन्दर
सड़क छोड़ दे है ब्राह्मणी जीप गिरी नाले मे
खुद तो तू नाले मे पहुची लड़का झाड़ी म फस गया
लाश पहुची तेरी थाने के अन्दर
रिश्वत खाई बाबू ने जलदार और लम्बरदार ने।

संग्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

भियाणीए

भियाणी नाम का एक लोक गीत बहुत प्राचीन समय से चला आ रहा है। असल घटना क्या रही होगी अब यह मालूम नहीं है परन्तु घटना बड़ी दुखद रही होगी यह गीत के शब्दों से स्पष्ट है। गीत की करुणा भरी शब्दावली देखने योग्य है।

हाइये भियालीए कोने कीए काहणी सूणी
याणी बाली बे हुई मीता चीडी बाला री रूणी
छाती लागा भीलका ममा री बूभुणी कूणी
नाला धारा भोपटे नेंदीए जोते री बागरे पूणी
भुमण मोरिया केस हुडणा नाई थी रावडी आणी
जेबे लागी तेरी सोठणी छाती लाई कुटणी याणी
खीर गगा रा जायम्ब नीला ब्यासा रा पाणी
फूना सेही थी हालकी गाना थी बि हीया लाणी
याद लागी ए दी भुरबू कुणी बुढिए रहाणी
होछू नीभे बोाहया हेरिदी होछिए क णी
सू होठों मोरिया याद सा बिसरी आणी
हाड शुके पिडे रे, लोहू रा निरशा पाणी
कुणी बुम्भणा से इसा मेरा गोला लागा हृरिदा पाणी
भियाणी सियाणुई गीत रोही याणी री याणी □

हिन्दी अनुवाद

मेरी भियाणी, कानों में यह व्यथा अपनी सुन लो
नौजवान की मौत हुई, चिड़िया शाखा पर रो दी है
छाती लगी है जलने मन की (बात) समझेगा कौन
नाले पारों में तड़पते रहे जोत की वायु न तरस। दिया
परदा डालकर किया था चलना, नहीं था अच्छी तरह पहचाना
जब लगी थी तेरी याद छाती पर लगे फूटने घाव
तीर गंगा का चश्मा, नीला व्यास का पानी
फूल की तरह थी हल्की गले में (हार की तरह) पिरो कर लगा दूं
याद लगी है आने भपक कर, किस युक्ति से भुला दूं
आंसू बह कर खत्म हुए, देखते हुए भी अन्धे हो गये हैं
तू गई है मर याद नहीं भूलने में आ रही
हड्डियां सूख गयी शरीर की लहू का (बन गया) साफ पानी
कौन समझे सन्ताप मेरा गले में पानी नजर आ रहा है
भियाणी (की याद) बूढ़ी हो गयी, गीत रहा अभी जवान का जवान ●

संग्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

चिड़ूआ

यह प्रणय गीत है। प्रायः स्त्रियां और पुरुष साथ साथ गाते हैं। गाते हुए स्त्रियां चिड़ूआ (हे पक्षी) का सम्बोधन करती हैं और पुरुष चिडीए (हे चिड़िया) कह कर गाते हैं।

पु० छोडी देणी गराहुजी चिडीए, चोल उपडी धारा
चोल उपडी धारा चिडीए चोल उपडी धारा
स्त्री मन लागला दूहीरा चिड़ूआ चोल उपडी धारा
चोल उपडी धारा चिड़ूआ चोल उपडी धारा

देश नी रौ़ जीणे-वे चिड़ीए, बोणा रोहणा सारा
जोता जोता हुडणा चिड़ूआ, बाल्हा हुडणा फारा
बाल्हा हुडणा फारा चिड़ूआ
छोड़ी देणा ए सापरा चिड़ीए, मियाणू निश्ता तारा
नाई छुटदा सापरा चिड़ूआ, सोंग सदका म्हारा
साग सदका म्हारा चिड़ूआ
पासले पाटो पाहुणे चिड़ीए घोर ओरूआ सारा
घोर ओरूआ पाहुणे चिड़ूआ कोसे जांहडू म्हारा
कोसे जांहडू म्हारा चिड़ूआ
जोंघे हुडणा घोमलो चिड़ीए, देश मालना सारा
चिड़ू उड़ू मेरा घाउडे लोमा न, सारा मुल्क निहारा
सारा मुल्क निहारा चिड़ूआ
लोभा-लामा वे साउग चिड़ीए नाला तोपली धारा
छेके मिलडे मने रे चिड़ूआ गोला शामिला हारा
गोले शोभिली हारा चिड़ूआ
को होठा दूरा देशा बै चिड़ूआ पाणी ओकती माला
कोफड़ी मेरी लडफडाउई कालजे लाई छाला
कालजे लाई छाला चिड़ूआ
देऊआ रा सा मोहरु चिड़ीए तेरा मूहडू काला
कोघी बाणना ए तो बी चिड़ीए मेरे गाला री माला
मेरे गोला री माला चिड़ीए
तेरी मेरी ए जोडी की लोमीया घुडी-मुडी रा डाला
तेरे एई लोमा रा चिड़ीए बिणी सुरे मताला
बिणी सुरे मताला चिड़ीए
चिड़ू रा लेणा जलम लामाया दुहा रोहणा डाला
रोई तोसा रे डाला चिड़ूआ रोई तोसा रे डाला।

हिन्दी अनुवाद

पु० छोड देनी शाम वादी हे चिड़िया, चल ऊंचे पवत पर
चल ऊंचे पवत पर चिड़िया, चल ऊंचे पवत पर
स्त्री मन लगेगा दोनो का हे पक्षी चल ऊंचे पवत पर
चल ऊंचे पवत पर पक्षी चल ऊंचे पवत पर

देश नही रहा जीने के (काबिल) है चिड़िया, वन मे रहना अच्छा है
पर्वत पर्वत पर चलेंगे पक्षी, मैदान का चलना अधिक (कठिन) होता है
मैदान का चलना
छोड़ देना यह बिस्तर चिड़िया भोर का निकला है तारा
नही छूटता बिस्तर पक्षी, संग हमेशा का है हमारा
संग हमेशा का
अजनबी आये मेहमान चिड़िया, घर भर गया सारा
घर भर गया मेहमान से पक्षी, कहा है प्रियतम हमारा
कहां है जांईडू (एक पक्षी है जो प्रियतम का प्रतीक है)
पैर से चलना अच्छा है चिड़िया देश देखना है सारा
पक्षी उड़ा मेरे अधूरे प्रेम में, सारा देश अंधेरा (हो गया है।
सारा देश अंधेरा
प्यार और शोभा के लिये साथ (जरूरी है) चिड़िया नाले डूबेगी धार मे
शीघ्र मिल अरे मन के पक्षी गले में सजेगी हार
गले में सजेगी
कहां गया दूर देश को पक्षी पानी जहर वाला (है वहां)
हृदय मेरा तड़फ रहा है, कलेजा मार रहा छलांगे
कलेजा मार रहा है छलांगे
देवता की मूर्ति सा है चिड़िया, तेरा मुख श्याम (काला)
कब बनेगी तू भी चिड़िया मेरे गले की माला
मेरे गले की माला
तेरी मेरी यह जोड़ी प्रिय, सिर से पैर तक बराबर है
तेरे इस प्रेम मे चिड़िया (मैं) बिना शराब के मतवाला हू
बिना शराब
पक्षी का लेंगे (हम)जन्म प्रिय, दोनो रहेगे शाखा पर रई और तोस (वृक्ष विशेष) की शाखा पर,
रई, तोस की शाखा पर●

संग्रहण व अनुवाद
बालकृष्ण ठाकुर

फुल्लू क्षेत्र

ओवूआ औज रुहणी म्हारे

यह श्रम गीत है। जेठ–आषाढ मे जब खेतो मे धान रोपे जाते हैं तो घुटनो तक खेतो मे पानी होता है। धान की पौध एक छोटी क्यारी से उखाड कर बडे–बडे खेतो म पुन रोपी जाती है। रोपने के श्रम-प्रधान काम की थकावट को गीत गा-गा कर दूर किया जाता है। ओवू और ओवी किसी पुराने जमाने मे प्रेमी प्रेमिका हुए हैं, जिनका प्यार इसी परिवेश मे पनपा था और अब उनके प्यार की याद लोकगीत में ताजा है। धान रोपने के कार्य को 'रुहणी' कहते हैं। रुहणो खेत के एक किनारे से आरम्भ होती है और दूसरे किनारे गाने के साथ समाप्त होती है।

स्त्रिया—हाडे ओवूआ
पुरुष—ओवे हो
स्त्रिया - छेता लागी औज रुहणी म्हारे
पुरुष – रुहणी म्हारे रुहणी म्हारे
स्त्रिया – हाई ए ओवीए
पुरुष—ओवे हो
स्त्री— तू बी लाडी आई म्हारे जुआरे
म्हारे जुआरे म्हारे जुआरे
हाडे ओवूआ   ओवे हो
रुहानी ता लागी होछी रे धारे
नाई जाणदा होछी रे धारे
हाई ऐ ओवीए   ओवे हो
सोझा लोडी आई पाहुणी म्हारे

ग्रोमली भूरी, पाहुणी म्हारे
हाडे ग्रोवूग्रा ग्रोवे हो
ग्रोज लागी म लदे दूबे दिहाड़े
जेठा शाढा रे लोगे दिहाड़े
हाईए ग्रोबीए ग्रोवे हो
इन्हा छेता पौजले, गोरा चुहारे
खीसे गोरी ग्राखी, गोरी चुहारे
हाडे ग्रोवूग्रा ग्रोवे हो
मेली लोडी तू होरी जुग्रार
ग्रोज के बिछड होरी तुग्रारे
हाईए ग्रोबीए ग्रावे हो
छेता निमी एवे रुहणी सारे
छेता रे पूजे दूजे कनारे
स्त्री पु हाडे ग्रोवूग्रा हाई ए ग्रोबीए
पौरा पुजणा, कुणी नुहारे
पुजणा हाला कुणी नुहारे ●

हिन्दी अनुवाद

स्त्री ग्ररे ग्रोवू
पु०—ग्रोवे हो
स्त्री—खेतो मे लगी ग्राज रुहणी (धान रोपाई) हमारे
पु० — रुहणी हमारे रुहणी हमारे
स्त्री—ग्ररी ग्रोबी
पु०—ग्रावे हो
स्त्री तू भी ग्रा जाना हमारे जुग्रारे (सांझे काम पर। हमारे जुग्रारे (सहायता के लिए बुलाए लोगो द्वारा काम)
ग्ररे ग्रावू ग्रोव हो
नाजुक ग्रांखो के इशारे लगे है
(तू) नही जानता ग्रांखो के इशारे
ग्ररी ग्राबी ग्रावे हो
शाम को चाहिए भाई महमान हमारे
सुन्दर प्रेमिका महमान हमारे
ग्ररे ग्रोवू ग्रोवे हो

प्रेमी को देखते आज, डूब गए दिन
जेठ आषाढ़ के लम्बे दिन (बीत गए)
अरी ओवी   आवे हो
इन खेतों में उपजेंगे, गरी और छुहारे
जेब में भर के लाना, गरी और छुहारे
अरे ओधू   ओवे हो।
मिल लेना तुम, अगले इतवार को
आज के बिछुड़ कर अगले इतवार को
अरी ओवी   ओवे हो
खेतों में समाप्त हुई सब रुहणी सारे (खेतों में)
खेतों के पहुचे, दूसरे किनारे पर
स्त्री० पु० अरे ओधू   अरी ओवी
घर पहुचेंगे, किस शकल में
पहुचना होगा, किस शकल मे ●

संग्रहण व अनुवाद
श्यामा ठाकुर

कुल्लू क्षेत्र

हेंसरू बोला हे सार

यह गीत बडे बडे लठ्ठो, शहतीरो पत्थरो को घसीटते हुए गाया जाता है। शहतीर में लम्बे रस्से बांधे जाते है। रस्सो के दोना ओर लोग खडे होते हैं। एक आदमी गीत के टप्पे बोलता है शेष सभी केवल 'हे सार कहते है और उसके साथ रस्सा खीचते हैं। टप्पे बोलने वाला व्यक्ति बडा चतुर कुशल, योग्य कवि और गायक होना चाहिए क्योकि वह गीत मे मनोरजकता लाता है। एक पक्ति को कई खण्डों मे बाटता है हर खण्ड को अनेक बार बोलता है हर बार लोग हे सार' कहते हैं और शहतीर को खीचते हैं। हर खण्ड के शब्द के बाद यह आकांक्षा रहतो है कि वह क्या बोलने वाला है, जैसे—तेरे खेता मे हे सार तेरे खेता मे हे सार आज की रात हे सार आज की रात हे सार, हम मिलेंगे हे सार, हम मिलेंगे हे सार, निपट अकेले हे सार'। कई बार वह अश्लील भी बोलता है परन्तु अवसर को देखकर। 'हे सार का कोई अर्थ नही है। सम्भवत यह शब्द आरम्भ मे 'हे ईश्वर' था। बाद में हे सार बना। लाग भारी काम करते हुए ईश्वर से उस की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते थे।

हेंसरू बोला हे सार
रौई रा दार हे सार
जोर नी लागा हे सार
देऊआ री कार हे सार
बुटही पाधे हे सार
बेठा घुंघता हे सार
पाहणी ढोकिया हे सार

प्रेमी का देखते आज, डूब गए दिन
जेठ आषाढ़ के लम्बे दिन (बीत गए)
अरी ओबी   ओबे हो।
इन खेतों में उपजेंगे, गरी और छुहारे
जेब में भर के लाना, गरी और छुहारे
अरे ओबू   ओबे हो।
मिल लेना तुम, अगले इतवार को
आज से बिछुड़ कर, अगले इतवार को
अरी ओबी   – ओबे हा
खेतों में समाप्त हुई अब कहाणी सारे (मेता में)
खेतों के पहुचे, दूसरे किनारे पर
स्त्री० पु० अरे ओबू   अरी ओबी
पर पहुचेंगे, किस शकल में
पहुचना होगा, किस शकल में ●

संग्रहण व अनु
श्यामा ठाकु

कुल्लू क्षेत्र

हेंसरू बोला हे सार

यह गीत बड़े बड़े लट्ठों, शहतीरों, पत्थरों को घसीटते हुए गाया जाता है। शहतीर में लम्बे रस्से बांधे जाते है। रस्सों के दोनों ओर लोग खड़े होते हैं। एक आदमी गीत के टप्पे बोलता है शेष सभी केवल 'हे सार' कहते हैं और उसके साथ रस्सा खींचते हैं। टप्पे बोलने वाला व्यक्ति बड़ा चतुर, कुशल योग्य कवि और गायक होना चाहिए क्योंकि वह गीत में मनोरञ्जकता लाता है। एक पंक्ति को कई खण्डों में बांटता है हर खण्ड को अनेक बार बोलता है हर बार लोग 'हे सार' कहते हैं और शहतीर को खींचते हैं। हर खण्ड के शब्द के बाद यह आकांक्षा रहती है कि अब क्या बोलने वाला है, जैसे—तेरे खेतों में हे सार तेरे खेतों में हे सार आज की रात हे सार आज की रात हे सार, हम मिलेंगे हे सार, हम मिलेंगे हे सार, निपट अकेले हे सार'। कई बार वह अश्लील भी बोलता है परन्तु अवसर को देखकर। 'हे सार' का कोई अर्थ नहीं है। सम्भवत यह शब्द आरम्भ में 'हे ईश्वर' था। बाद में 'हे सार' बना। लोग भारी काम करते हुए ईश्वर से उस की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते थे।

हेंसरू बोला हे सार
रौंई रा दार हे सार
जोर नीं लादा हे सार
देळआ री कार हे सार
बुटही पाधे हे सार
बेठा घुघता हे सार
पाहणी ढौकिया हे सार

ा ग उलता हे सार
रोई रा भांडा, प गिल्ला पाऊ बार बार
तू थाकू गा, दिगाजे म हाऊ तैयार
धार पोंवा नु सांगणी पोर्ण उपड़ा पार
लगदे बाला, माथी री लाटी, पाणी टार
बेलदे मोला द्वारे यारा चीप कमाणा
रात विहाड हुगरू यारा हु सार
पिड़ी गुलिया मोला री डेरी टिट फुकिया
धोगो री दार हेमरू बाला ए सार
मंजू री पूटो, एप भी उटी एगी पगीटद
दोऊ हजार हेमरू योला, है सार
दाडू भाई एक पम्काई, डोरदे मोता
होठी दिठाड हेसरू बाला हे सार
बाडे थोडे रे, तातण बिलुए टेलीद लागे
छोडरे मार हेसरू यारा, हे सार
हेसी करिडा, लोक लाऊ मिडा मांदल सूर
काढणी लाद हेसरू बाला हे सार
रज पीई डे लेर धोरा-म सूरा री नुषा
एकी रे लागे हृदिदे पार
हेसरू यारा हे सार। ●

हिन्दी अनुवाद

हेसरू बोला हे सार
रई (वृक्ष विशेष) की शहतीर है हे सार
जोर नहीं लगाते (तुम) हे सार
देवते की द्रोही है (जोर लगाओ) हे सार
वृक्ष पर हे सार
बैठा कबूतर हे सार
शाखा पकड़ कर हे सार
मुश्किल में चढ़ा हे सार
रई का खम्बा है, घसीटना पड़ेगा बार बार हे सार
तू थक गया तो रहने दे मैं तैयार हूं हे सार
जोर निकालो पार करनी पड़ेगा, ऊंची धार हे सार

ागडे बनो तोड मत देना, अपनी ठार (घुटने से नीचे का भाग) हे सार
ाठो मत अरे छोकरो, काम कमाओ
रात दिन हेसरू यार, हे सार
लकडी जला कर, भस्म की ढेरी, शरीर जला कर
आग की क्षार हेसरू बोलो, हे सार
दियार का वृक्ष,यह क्या हुआ,एक को घसीटने हैं सो हजार हेसरू बोलो हे सार
हे दादू भाई अभी पहुचा दी, डरो मत
बीत गया दिन हेसरू बोलो, हे सार
बडो बडों के यतन ढीले पड गए मुकाबला हो रहा है
(अब) छोकरो का हेसरू यारा हे सार
हेसी (जो ढोल बजाता है) कारिंदा, मेडा खाया मेढ़ा,
(पूरा) घडा सुरा का (पा लिया), कगनी (चावल) का (पूरा) भार
(खा लिया) हेसरू बोलो हे सार
काफी पी ली तेरे घर मे, सुरा की घूटें
एक के लगे हैं दिखने चार हेसरू यारो, हे सार।

संग्रहण व अनुवाद
डा० बलदेव कुमार

मसै उकता हे सार
रोई रा भाढा घसीटणा पोऊ बार बार
तू थोवू ता हिगणे दे हाऊ तैयार
ज़ोर खोजा डे लागणी पोई उथडी धार
तगडे बाणा मोनी नी लाडी भापणी ठार
बेशदे मीता छोकरे यारो कोम कमोणा
रात दिहाड हेसरू यारा हे सार
छिडी फुकिया भोसा री ढेरी पिठे फुकिया
भोगी री छार हेसरू बोला, हे सार
कलू री बूटी एथ की उठी एकी घसीटद
थोऊ हज़ार हेसरू बोला, हे सार
दादू भाई एह पच्छाई, डोरदे मीता
हीठी दिहाड हेसरू बोला हे सार
बाडे बोहे रे तातरा ढिलुए टलीदे लागे
छोकरे यार हेसरू यारा हे सार
हैसी करिंडा लोड खाऊ मिडा मादल सूर
काउणी खार हेसरू बाला हे सार
रज पीई हे तेरे पोरा-न सूरा री शुधा
एकी रे नागे, हरिदे पार
हेसरू यारा हे सार। ●

हिन्दी अनुवाद

हेसरू बोला हे सार
रई (वृक्ष विशेष) की शहतीर है हे सार
ज़ोर नही लगाते (तुम) हे सार
देवते की द्रोही है (ज़ोर लगाओ) हे सार
वृक्ष पर हे सार
बैठा कबूतर हे सार
शाखा पकड़ कर हे सार
मुश्किल मे चढ़ा हे सार
रई का लम्बा है, घसीटना पड़ेगा बार बार हे सार
तू थक गया तो रहने दे मैं तैयार हूं हे सार
ज़ोर निकालो पार करनी पड़ेगी ऊंची धार हे सार

तगड़े बनो, तोड़ मत देना, अपनी ठार (घुटने से नीचे का भाग)   हे सार
बैठो मत अरे छोकरो, काम कमाओ
    रात दिन   हेसरू यार, हे सार
लकड़ी जला कर, भस्म की ढेरी, शरीर जला कर
    घास की छार   हेसरू बोलो, हे सार
दियार का बूटा, यह क्या हुआ, एक को पछोटने हैं सो हजार   हेसरू बोलो हे सार
हे दादू भाई, अभी पहुंचा दी, डरो मत
    बीत गया दिन   हेसरू बोलो, हे सार
बड़ों बड़ों के बतन ढीले पड़ गए, मुकाबला हो रहा है
(अब) छोकरों का   हेसरू यारा हे सार
हुली (जो ढोल बजाता है) कारिंदा, भेड़ा खाया भेड़ा,
(पूरा) घड़ा सुरा का (पी लिया), कगनी (चावल) का (पूरा) भार
    (खा लिया) हेसरू बोलो हे सार
काफी पी ली तेरे घर में, सुरा की घूटें
    एक के लगे हैं दिखने चार   हेसरू यारो, हे सार। ●

संग्रहण व अनुवाद
डा० बलदेव कुमार

1

हां लाम्बू लोहरा

पिछले गीत 'हेसरू बोला हे सार' में आदमी जल्दी ही थक जाते हैं कारण यह है कि 'हे सार' शब्द शीघ्र शीघ्र आता है और लोगों को शहतीर जल्दी जल्दी खींचना पड़ता है। पिछले गीत की पंक्तियां में जहां जहां अर्ध विराम है वहीं 'हे सार' शब्द कहा जाएगा और खींचा जाएगा। लिखते हुए स्थान को कम करने के लिए ऐसा नहीं दिखाया है परन्तु थकने पर बैठ कर आराम नहीं कर सकते। यह सारे दिन का काम होता है और अन्धेरा होने से पहले काम पूरा करना जरूरी है। अतः थकान दूर करने या सुस्ताने के लिए गीत बदल दिया जाता है। तब 'हां लाम्बू लोहरा' गीत गाते हैं। इसमें जब दो व्यक्ति एक पंक्ति बोलते है तो शेष लोग पूरी पंक्ति दोहराते हैं, और पद के अन्त में शहतीर आदि खींचते हैं। 'लाम्बू लाहरा' शब्दों का अर्थ स्पष्ट नहीं है। परन्तु इसे 'लटकाना, लमकाना देर करना' आदि अर्थों में जाना जाता है'। दीघ-सूत्री के भाव में यह शब्द लोकोक्ति के रूप में प्रयुक्त होता है। खींचने में सुविधा के लिए दो व्यक्ति निर्देशन संकेत भी देते हैं।

दो व्यक्ति—हां लाम्बू लाहरा
सभी—हां लाम्बू लोहरा
दो व्यक्ति—बूटी पोई गोहरा
सभी बूटी पोई गोहरा

चेका हुआ दोहरा, चेका हुआ दोहरा
सीधा केरा मोहरा, सीधा केरा माहरा
रौंसा केरा कोहरा, रौंसा केरा कोहरा
माठा पोऊ थाहड़ा, माठा पोऊ थाहड़ा
खोंजा ढे कराहड़ा, खोंजा ढे कराहड़ा
घोरा रौहू बनाहड़ा, घोरा रौहू बनाहड़ा

बेठा सा बनाहड़ा, बेठा सा बनाहड़ा
बौता पोऊ टोहरा, बौता पोऊ टोहरा
दऊ फिरू समाहरा, देऊ फिरू समोहरा
बहीऐ फलोहरा बहीऐ फलोहरा
दिहाड़ी दपोहरा, दिहाड़ी दपोहरा
केण्डो खोजी टोहरा, केण्डो खोजी टोहरा
कुणी पाणा पोहरा, कुणी पाणा पोहरा
जांके जेल्हे सोहरा जांके जल्हे सोहरा
तकडे यार गोहरा तकडे यार गोहरा
चौका डे फलोहरा चौका डे फलोहरा
देऊआ रा फलोहरा, देऊआ रा फलोहरा। ●

हिंदी अनुवाद

दो व्यक्ति—हां लाम्बू सोहर
सभी—हां लाम्बू सोहरा
दो व्यक्ति—वृक्ष पड़ा रास्ते मे
सभी—वृक्ष पड़ा रास्ते मे
कमर हो गई दोहरी
सीधा करो मोहड़ा (शहतीर का अग्र भाग)
रस्से को करो इकहरा,
शहतीर पड़ गया चट्टान पर
निकालो अरे कुल्हाड़ा
घर मे रह गया बढ़ई
बैठा है बुनकर
रास्ते मे पड़ गया गढ़ा
देवता अनुकूल हो गया
बड़ी हो आकांक्षा है
दिन दोपहरे
कसी निकाली ठाठ
कौन करे पहरा
मुख्य लोग शहर मे (रहते हैं)
तगड़े लोग गांव मे
उठाओ अरे ध्वजा
देवता की ध्वजा। ●

संग्रहण व अनुवाद
डा० बलदेव कुमार

घूघती (घुग्घी)

यह भी श्रम गीत है। परन्तु वास्तव में यह श्रम नृत्य गीत है। इस में गाते भी हैं और नाचते भी। ढोल, नगारा शहनाई बज रही होती है। दो व्यक्ति घूघती के बोल कहते हैं। शेष सभी लोग दो बार घू घ ती, घू घ ती कहते जाते हैं, और दोनों बार रस्सा खींचते हैं। अर्थात् दो बार एक साथ घुघती शब्द के साथ रस्सा खींचते हैं। सभी खींचने वाले दो भागों में बंट जाते हैं अर्थात् 1,3 5 7 9 आदि एक टोली और 2 4,6,8,10 आदि दूसरी टोली। जब बोल बोलने वाले दो व्यक्ति बाजे के साथ गीत के टप्पे गाते हैं तो एक बार पहली टोली के सभी लोग हाथ से रस्सा छोड़ देते हैं। हवा में दोनों हाथ नाचते हुए फैलाते हैं और नाचते हुए अपने आप एक चक्कर मार कर घुघती शब्द के पहुँचने तक रस्सा पकड़ते हैं और शेष सबके साथ उसे खींचते हैं दो बार साथ साथ 'घुघती' शब्द सहित। दूसरे पद बोलने पर दूसरी टोली ठीक वैसा ही नाचती है। 'घु घती' का अर्थ घुग्घी पक्षी है। यह पक्षी चहचहाते हुए शरीर को हिलाती है जैसे नाच रही हो।

दो व्यक्ति —घू भाइया घूघती
सभी—घूघती घूघती
दो व्यक्ति— घूघती ˉहोठी माडी सराजा
सभी—घूघती, घूघती
दो व्यक्ति —तौखा न आगू सकेतड बाजा
सभी घूघती घूघती

घू भाईयो घूघती
तौखा न आगू सकेतड बाजा
तेवे मीरी सा पुड़चड़ादी
उढिमा ˉहोठी बाजा बजादी

घूघती घूघती

सो पुहतो पितो र काजा
सुरा थी पिदा तोखा रा राजा
घूघती घूघती
घूघती बेठी चाकटी पिदी
छिडी मूले ता चाकटी सिघी
घूघती घूघती
माइड मौरे घूघू पाजा
तोखा-न मारए साहुली बाजा
घूघती घूघती
घू माईयो घूघती
तोखा-न मारए साहुलो बाजा
घूघती घूघती
गुणा है यारो घूघती घूरा
घोरा पुहती मारदो ठोरा
घूघती घूघती
घोरा थी लागा दोहरो साजा
खांदे पिदे बाजा गाजा
घूघती घूघती
रोटी बोहे चाकटी सूरा
साजा थी ए की ब्याह थी पूरा
घूघती घूघती
सौरा शराब मौजा बोडी
पटिकदे नौचदे चेकडी मोडी
घूघती घूघती
ढलची केरदे बोहदे जूबा
भेड मुनी न काटदे रूमा
घूघती घूघती
नौचदे कोई ढिसिदे हौरा
घुमादे बोहू ता खांदे थोडा
घूघती घूघती
पाहुणे मौरी मिलदे गौला
लालडी सागी प्रामां रे खोला
घूघती घूघती

घू माईयो घूघती
गेहू री धाणा चूगती
घूघती घूघती
घुघती वे हुई जूगती
सो खोहे रे पाण्हे ऊकती
घूघती घूघती
फूटी पाण्हटो सा खुडकदी
घुघती हुई सो फुरकदी
घू माईयो घूघती

हिन्दी अनुवाद

दो व्यक्ति - घू माइयो घूघती
सभी—घूघती, घूघती
दो व्यक्ति—घुग्घो गई मण्डी सिराज
सभी—घूघती घूघती
दो व्यक्ति —वहा से लाया सकेतड (सुकेत का बाजा)
सभी—घूघती घूघती

घू माइयो घूघती
वहा से लाया सुकेतड बाजा
तब फिर वह चहचहाती
उठ कर गई बाजा बजाती हुई
घूघती घूघती
वह पहुची स्पिति के काजा (राजधानी) मे
देसी शराब पी रहा था वहा का राजा
घूघती घूघती
घुग्घी बठ गई चाकटी (चावल की शराब) पीने
(वहा) लकडी मूल्य पर और चाकटो मुफ्त थी
घूघती घूघती
घम माई बनाए कबूतर (और) बाज
वहा से लाया लाहुली बाजा
घूघती घूघती
घू माइयो घूघती
वहां से लाया लाहुली बाजा
घूघती घूघती

सुनो अरे यारो घूघती घुरा (ध्वनि)
घर मे पहुची मारती हुई दौड
घूघती घूघती
घर में था लगा सैरी सक्रांत (श्राश्विन के पहले दिन का त्यौहार)
खा रहे थे, पी रहे थे, बाजा गाजा (बजा रहे थे)
घूघती घूघती
रोटिया, बड़े (खाने के) चाकटी, सूर (म ु आ की देशी शराब)
त्यौहार था यह या कि विवाह था पूरा
घूघती घूघती
सौरा (देशी शराब) शराब (सब कुछ) मौज (थी) बड़ी
उछलते, नाचते कमर तोड (रहे थे)
घूघती घूघती
प्रणाम करते बाट रहे थे दूब (उस त्यौहार की विशेष नीति)
भेडो की ऊन कटाई (के अवसर) पर काटे जा रहे थे मेढे
घूघती घूघती
नाच रहे थे कोई लड रहे थे दूसरे
खो रहे थे अधिक खा रहे थे कम
घूघती घूघती
महमान बहुत मिल रहे थे गले
झालडो (एक नृत्य गीत) लगी थी गाव के खलिहान मे
घूघती घूघती
घू माइयो घूघती
गेहू के धाणा (भूने हुए दाने) चुग रही थी
घूघती घूघती
घुग्घी की हुई बडी मौज
वह अखरोट के टहने पर चढ गई
घूघती घूघती
टूट गई टहनी वह, कडक करती हुई
घुग्घी के हुए प्राण पखेरू
घू माइयो घूघती ●

श्रम प्रधान गीत

कुल्लू क्षेत्र

झीऊंचलीए

यह भी नृत्य श्रम गीत है। यह घूगती से अधिक विलम्बित ताल का गाना है। नाचते हुए मुख्य अन्तर यह है कि जहां घूघती घूघती स्वर कहते हुए रस्सा एक बार खींचा जाता है वहां इस गीत में झीऊ चलीए झीऊ चलीए दो बार बोल बोले जाते हैं तथा रस्सा भी दो बार खींचा जाता है। एक बार ज़ोर धीरे से लगाया जाता है मानो दूसरी बार ज़ोर लगाने की तैयारी का संकेत है। दूसरी बार पूरी शक्ति से रस्सा खींचा जाता है। यह गीत प्राय ऐसे रास्ते से अधिक गाया जाता है जहां ऊपर को खींचा जाना हो अर्थात जहां रास्ता समतल और ढलानदार न हो बल्कि चढ़ाई वाला भाग हो, जहां भार को खींचने के लिए अधिक बल अपेक्षित होता है।

दो व्यक्ति—झीऊचलीए झीऊचलीए
सभी — झीऊचलीए झीऊचलीए
दो॰ — चौले उठिया कुल्लू बे जाणा
सभी — झीऊचलीए झीऊचलीए

कुल्लू जाया की भोऊ चा खाणा झीऊ॰
कुल्लू जाया घिऊ खिचड़ू खाणा झीऊ॰
घीऊ खिचड़ू नी गोला न जाणा, झीऊ॰
गोला तेरे मूं ता धुघरू लाणा झीऊ॰
कुल्लू देशा सा पौट्टू रा बाणा झीऊ॰
गोला घु घरू पौट्टू भी लाणा झीऊ॰
ढेंगा थिपू जोधा बूटड़ू लाणा झीऊ॰
थिपू पौट्टू की पलवा पाणा झीऊ॰
कुल्लू जाया मूं बाहुरा लाणा झीऊ॰
तेरे बाहुरे की सेलरा लाणा झीऊ॰

एजे दूईए घोर बसाणा, झीऊ ०
नूयां घोर त्रूटा फूटा पराणा झीऊ ०
तेरी तेइए त्रूटा फूटा सजाणा, झीऊ ०
घोरा नाईए पूछू सियाणा, झीऊ ०
कोने शुणू नाई लेखा न पाणा झीऊ ०
मशोरना नाई कदी सियाणा, झीऊ ०
याणा नाई ए लोभा न लाणा झीऊ०
एजे मांदी श्रासा होष मलाणा, झीऊ ०
जुगा जानी-वे सोग बणाणा झीऊ चलीए झीउ चलीए ●

हिन्दी अनुवाद

दो व्यक्ति—झीऊ चलीए झीऊचलीए (एक पक्षी का नाम)
सभी— झीऊ चलीए झीऊ चलीए
दो०— चल उठ कर कुल्लू को जाए
सभी— झीऊ चलीए झीऊ चलीए

कुल्लू जाकर क्या क्या खाना है
कुल्लू जाकर घी खिचड़ी खाना है
घी खिचड़ी नहीं गले मे जाएगी
गले में तेरे मैं तो घुघरू माला पहनाऊ गा
कुल्लू देश मे पट्टू का रिवाज है
गले मे घुघरू (और) पट्टू भी पहनाए गे
टेढा थिपू (सिर का रूमाल) पैर मे बूट लगाए गे
थिपू (और) पट्टू क्या कुछ कर सकेंगे
कुल्लू जाकर मैं ससुराल बनाऊ गी
तेरे ससुराल मे क्या सेलरा (चिपकने वाला बिरोजा) लगेगा
या दोनो घर बसा लें
नया घर टूटा फूटा पुराना
तेरे लिए टूटा फूटा सजाए गे
घर मे नही पूछा सियाना (बुजुर्ग)
कान मे सुना नही लेखे में लाया जाए
गुस्सा नही कभी सियाने (को) दिलाना
छोटे को नहीं लोभ (मोह) मे लगाना
या मलिए हम हाथ मिलाए
युग (और, जीवन के लिए सच बनाए
झीऊ चलीए झीऊ चलीए ●

संग्रहण व अनुवाद
श्यामा ठाकुर

डोला राम

यह गीत जिला मण्डी के करसोग क्षेत्र के लुहरी गाव का है। लुहरी को सडक बन रही थी भुभ्रण नाम के ढाक की कटाई हो रही थी तो उसमे सुरग लगाने वालो मे मुख्य डोला राम था—ज्यो ही वह सुरग लगाने लगा पत्थर उसके सिर के ऊपर गिर पडे और उसकी मौत हो गई। डोलाराम बहुत नम्र स्वभाव का मेहनती आदमी था। उसकी अचानक मौत से सारे गाव के लोग बहुत ज्यादा दुःखी हुए। लोगो ने उसकी हृदय विदारक मौत के ऊपर गीत बना दिया और उसके अच्छे कार्यों को याद कर उसके गीत को गाने लगे। गीत की पक्तिया हैं -

भुभ्रणा रे ढेका रे लागे टैडला कटाए
डोलेरामा बलास्टमैना, लागे टैडला कटाए
जोडे छुटे तेरी बालके भारा दुये छुटे मेहरबान माये
डोलेरामा बलास्टमना दुये छुटे मेहरबान माये
एक बजे री गडी दे आया दूधा रा गलासा
डोलेरामा बलास्टमना दूधा रा गलासा
दुई बजे री जीपा दे आये डोलेरामा री लाशा
डोलेरामा बलास्टमैना, डोलेरामा री लाशा
धारा गैसा रा पीपलु सुका डूगे नाला रा सूम्रा
डोलेरामा बलास्टमैना डूगे नाला रा सूम्रा
डोलेरामा री मौत आई कीजे गजब हुम्रा
डोलेरामा बलास्टमैना कीजे गजब हुम्रा

लुहरी स्टोरा मे लागे, साते किस्म थाणे
डोलेरामा बलास्टमैना, साते किस्म थाणे
नीरता का पुलसा थाई, निरमंडा का ठाणे
डोलेरामा बलास्टमैना, नीरमडा का ठाणे●

हिंदी अनुवाद

लुहरी गांव को जब सडक निकल रही थी तो भुकण नाम के ढाक पर डोलेराम बलास्टमैन सुरंग लगा रहा था। सुरंग लगाते लगाते उसके सिर पर पत्थर गिर पड़े और वह मर गया। डोलेराम रास्ते की कटाई करते हुए मर गया और अपने पीछे दो बच्चे और दो भाई छोड गया
एक बजे की गाडी में डोलेराम को पीने के लिए दूध का गिलास आया
जब तक डोलेराम को पीने के लिए दूध आया तब तक डोलेराम मर चुका था
उसकी लाश को दो बजे की गाडी में उसके घर ले आए
उसकी मौत के पहले ही अपशगुन हो गए। धार का पीपल सूख गया तथा डूंगे नाले का पानी भी सूख गया
डोलेराम की मौत की खबर सारे गांव मे आग की तरह फैल गई।
यह क्या गजब हो गया कि डोलेराम मर गया
लुहरी के स्टोर में सात किस्म के ताले लगे थे जहा सुरंग लगाने की बत्तिया तथा सडक निकालने वाला अन्य सामान रखा था
डोलाराम की अकस्मात मौत को सुनकर नीरत से पुलिस आ गई तथा निरमंड से थाना आ गया ●

घटना प्रधान गीत

मण्डी क्षेत्र

नैणु लाड़ीये खशटीये

यह गीत जिला मंडी के करसोग क्षेत्र के लुहरी गाव है। इसकी घटना इस प्रकार है कि नैणु नाम की औरत जमीदार हिमेराम की पत्नी थी। वह हर रोज गांव की अन्य औरतो के साथ घास लाने जगल जाती थी। एक दिन भी वह अपने छोटे छोटे बच्चो को छोडकर घास लाने गई। अन्य औरतो की अपेक्षा जल्दी-जल्दी घास काटने लगी। घास काटते-काटते वह पहाडी के नीचे बहते हुए दरिया में गिरी और मर गई। उस गाव के लोग नैणु की मौत से बहुत दुःखी हुए। नैणु की मौत की घटना इस प्रकार से गाई जाती है —

नैणु लाहो रा मरना हुआ डूबी मजी दरयाये
नैणु लाहीय सशटीये, डूबी मजी दरयाय
माठे माठे तेरे शारे छुटे, दुई छुटी लाऊदी गाये
नैणु लाहीये सशटीये, दुई छुटी लाऊदी गाये
होर घरेरी सो घरा ले भाई, नैणु लाहो घरा न भाई
नैणु लाहीये सशटीये, नैणु लाहो घरा न भाई
बाहर निक्ले गा हिमेरामा, लाये न नैणु ले हाका
नैणु लाहाये सशटीये, लाय न नैणु ले हाका
होरे घरे रीये भीमरणा लुणा, नैणुये लुणा गे काशा
नैणु लाहीये सशटीये नैणुए लूणा गे काशा
मर जवानीये मरना हुआ किया जि दगी रा नाशा
नैणु लाहीय सशटीये, किया जि"दगी रा नाशा ●

हि"दी अनुवाद

ठाकुर (कन) जाति की औरत नैणु घास काटते-काटते पहाड़ी से गिरकर दरिया म डूब गई और मर गई। इसके छाटे छोटे बच्चे तथा दो दूध देने वाली गायें रह गई।

जा औरतें नैणु के साथ घास काटने गई थी वह वापिस घर को आ गई लेकिन नैणु घर नही आई

नैणु का घरवाला हिमेराम अपने घर से बाहर आया और नैणु को आवाजें देने लगा।

जो औरतें नैणु के साथ घास काटने गई थी उ होने भींछणा घास काटा लेकिन नणु ने जल्दी जल्दी मे काश (घास विशेष) काटा।

नैणु जवान थी उसने घास काटते काटत अपनी जि दगी खत्म कर दी ●

सग्रहण व अनुवाद
हेमप्रभा शर्मा

दिले राम

दिलेराम कोई अज्ञात चिरप्रचलित नायक किसी प्रेम पाश के लिये अकारण दोषी ठहराया गया। ज्ञात होने पर दिलेराम को निर्दोष समझा गया। यौवनावस्था मे उस पर अकारण सशय व्यक्त किया जाता है। दिलेराम सुन्दर व्यक्ति था। जिसके सम्पर्क मे आया, उसके रूप को निहारता सा रह गया। उसके लिये स्मृति वश प्रणयोदगारो का नायिकाओ का उपालम्भ इस प्रेम गीत मे पूर्णतया झलकता है।

बाहि्या चढेआ दिलेरामा
अमा खट्टिया कमाया मापेआ रे लाया
तेरी सोह बहि्या चढेआ दलेरामा
मुइआ तेरी सोह बहि्या लाया दिलेरामा
तेरी सोह नो मो बाकआ तेरी बहिया लाया दिलेरामा
हाया दब्बू रे छत्री, जाता रा तू खत्री
पन्या रा तू खत्री ओ गलाबा रे फूला ओ
सतवाजा रे गट्टा नील वागा रेआ गट्टा
होरनी जोबन सीजिया लोमी लोकें लुट्टेआ
हाया दब्बू रे दण्णा मो मण्डा नी रेह णा
गुलाबा रे फुल्चा नाल बाग रेआ गट्टा
हाया दब्बू रे परना ओ छुरी लाई के मरना
तेरी सोह छुरी लाई के मरना

हाथा दब्बू र दाणा, जाति रा तू राणा
तेरी सा जाती रा तू राणा
तेरी सोह नौ सौ बाकमा तेरी बद्दिया चढेमा दिलरामा
जान्दा जान्दा दब्बू चली म्रो गया तेरी साह
म्हारे मना बसूरा पाई म्रो गया नी रेला चढ़ दब्बुम्रा
जान्दा जान्दा चली म्रो गया
सीरा रे सलूए ले दा म्रो गया
म्हारी नणदा कनै रमजा मारी म्रो गया
कि रेला चढ दब्बुम्रा
कि नौ सौ बाकमा तेरी, रैला चढ़ दब्बुम्रा
म्हारे माथे बिन्दुए लैंदा म्रा गया
म्हारे मना बसारा पा दा म्रो गया
मा खट्टया कमाया तेरी साह बद्दिया लाया दिलेरामा
मा तेरी सोह, लेखे लाया शहरा रिए ग्रौमतिए ●

हिन्दी ग्रनुवाद

दिलेरामा ग्रपमानित हुग्रा
कमाई मा बाप को दी
दिलेराम कलंकित हुग्रा
दिलेराम ग्रपमानित हुग्रा
विस्तृत परिचय था ग्रत ग्रपमान मिला
हाथ में छाता जाति का क्षत्रिय
क्षत्रिय पद्म फूल सी जवानी
नील बाग का नीलपुष्प सा
चिर संचित यौवन का लोभ मे ग्रनेकों ने लाभ लिया
इस प्रकार मण्डी नही रहना है—वह निराश रहा
वह गुलाब ग्रौर नीलकमल सा पुरुष है
रूमाल हाथ मे देखते (हृदय मे) छुरी लगती है
छुरी लगा के प्राण त्याग दें।
हाथ में दाना लिये राजपूत जाति का है
सचमुच राणा जातिय है
विस्तृत परिचय वश कलंकित हुग्रा
ग्राखिर इस स्थान को त्याग दिया

हमारे मन को भरमा गया, रेलगाडी मे बैठ चला गया
जाता जाता चला गया
सिर का सलुआ (दुपट्टा) ले गया
हमारी ननद को उपालम्भ दे गया
घर म झगडा डाल गया
रेल पर बैठा, चला गया
कई परिचित—छोडे चला गया
माथे को बिंदिया की शान था वह
हमारे मन का विश्वास और आस था वह
क्षमा करके मां बाप को दिया, सामी लामा ने यौवन लूटा
फिर बदनामी दिलाराम को मिली
दूसरी नायिका को सम्बोधित करके सकेत किया है ●

घटना प्रधान गीत

मण्डी क्षेत्र

झारू मिंया तथा गगनों

दिलेराम की भान्ति इसमें नायक नायिका का वास्तविक गाथात्मक परिचय तो नही किन्तु प्रणय प्रसंग द्वारा झारू का गगनू नामक औरत के सौन्दय पर रीझ कर पथभ्रष्ट होने का परिचय मिलता है। सामाजिक परम्पराओं की कुछ चिन्ता न कर झारू ने सिद्ध कर दिया इश्क न पूछे जात अथवा रूप का आकर्षण प्रेमी को ससार की सर्वोच्च सम्पदा है।

अम्मा भी समाझादी बापू भी समझादा
झारू ओ मिया छडी देणा चमरिया रा साथ
खूहा पर लट्टे्आ जनेओ झारूमियां
पकड़आ गगनू चमरिया रा हाथ
भाई तेरा समझादा मामो समझादी
छड्डी देणा गगनू चमारी रा साथ
भाई मामी ला दे ठोकरा आसा
पहणियां देयां सिल्लेदार
गगनू धान कूटे भात बणाया
ऊपरा ते रखेआ कट्टू रा मांस,

भाऊ हुया हुए चसल चमार
भाई मती। ड्योढ़ी बैठे
भारू बैठा नजरी लैं बाहर
सासु देंदी सिरेआं बानदा
तेरा मुन्दा होया बड्डा जवान
भारू मियां बोलदा, मेरा मुद्दा
बियाह्णां भाई मेरे जा
हाऊ बणी गया चसल चमार
किसी भी पीणा तेरे हाथे दा पाणी
किस भी पीणा तेरे नरेलु तमाखू
किस भी विह्याणी तेरी नार
अम्मा पीणा मेरे हाथे दा पाणी
बापू पीणा मेरे नरेलु तमाखू
मेरे भाइए व्हाहणी मेरी नार
अम्मा मेरिए हाऊ हुआ चसल चमार
सब सब बैठे अन्दर
भारू मियां ड्योढी ले बाहर
छड्डी द गगनू रा साथ
अम्मा भी समझाद, बापू भी समझा दे
छड्डी देणा गगनू रा साथ

हिन्दी अनुवाद

मां भी बाप भी समझाते है
भारू मियां चमारी का संग छोड
कूयें पर जनेऊ फेंका
भारू मियां गगनू के साथ पकड़ा गया
तेरे भाई और भाभी समझाए
गगनू का संग छोड
भाई भाभी ठोकर लगाए
—तिल्लेदार जूती बनाना
गगनू धान कूट कर भात बनाती है
कट्टे का मास भी रख दिया
भारू पूरा मोची बन गया

माई मतीजे भीतर बैठे
भारू नजरा से भी दूर
पहली मगेतर की मा पत्र डाले
कहे तुम्हारा वर बड़ा हो गया
भारू कहता है कि
माई का ही ब्याह दो
मैं तो प्रेम वन मोची बन गया
तुम्हारे हाथ पानी कौन पीएगा ?
हुक्का तमाखू कौन पीएगा ?
तुम्हारी मगेतर कौन ब्याहेगा ?
अम्मा पानी पीयेगी
पिता तमाखू पीयेगा
माई मगतर बनेगा
मा मैं पूरा मोची बन गया
सब अन्दर है
भारू कमरे के बाहिर है
गगनू का साथ छोड़
माँ बाप कहते हैं—
गगनू चमारी को छोड़ दो ●

संग्रहण व अनुवाद
डॉ० काशी राम आत्रेय

मण्डी क्षेत्र

तेरी धिया जो हुआ बनवास

इस लोकगीत का भावार्थ यह है कि देवरानी गोबर से घर की लिपाई कर रही थी। उसकी जेठानी जिसके हाथ मिट्टी की चपणी (अर्थात पाव साफ करने के लिए मिट्टी की ठीकरी) थी। वह फिसल कर गिर गई और चपणी टूट गई। जिससे नाराज हो कर उसकी सास ने उसे बनवास दे दिया। उसने गगन में उड़ने वाली परियों को सम्बोधित करके अपने मायके और ननीहाल वालों को संदेश भिजवाया। अपनी बेटी की इस भूल पर वह सोने चांदी की नाना प्रकार की वस्तुएं देने को तैयार हुए पर सास न मानी। अंत में सास कहती है कि मुझे दौलत नहीं अपनी बहू ही चाहिए। मैं तो इसकी परीक्षा ले रही थी।

दराणिये लिपया गोबरा
जेठाणीग्रा जो गई घसराठ
तेसा चपणी रा हुआ चकनाचूर
कि महुग्रा जो दित्ता बनवास।
सूरगा जो आंटिये सूरगाणिग्रो
मेरे बापू जो देणा सन्देहा कि तुध आई ग्राणा
तेरी धिया जो हुआ बनवास।
लें ले कुडमणिये सुइना चान्दी
मेरी धिया जो दे घर बार।
कुडमा मेरे बेथी पाणा सुइना चांदी ?

लै ले कुडमा सुइना चांदी
मेरी चपणी कनै सो काम।
मूरगा जो जांदिए सुरगणिये
मेरे चाचा जो देणा संदेहा कि चाचा जो आई जाणा
तेरी भतीजी जो हुआ बनवास।
लै ले कुडमणिये, गाइयां भैसां
मेरी धिया जो दे घर बार।
मेरे केथी पाणी गाईयां भैसा
मरी चपणी कनै सो काम।
मूरगा जो जांदिये सूरगणिये
मेरे मामा जो देणा सन्देहा कि मामा जी आई जाणा
तेरी माणजी जो हुआ बनवास।
मामे ता घडी चपणी मामीये फेरेया चाक,
ल ले कुडमणिये अपणी चपणी
हिक जुकणी मुड फूकणी—
मेरी माणजी जो दे घर बार।
लै ले कुडमा चपणी श्रो चपणा
मेरे केथी पाणी चापणी, हिक जुकणी
मूजा तेसा बहुआ के सो काम

हिन्दी अनुवाद

देवर की पत्नी ने निचले कमरे को लीपा,
जेठानी उस गोबर के लेपन मे फिसल गई
उसके हाथ मे पाव साफ करने की मिट्टी की चपणी थी
वह टूट कर चूर-चूर हो गई
इस पर सास ने बहू को बनवास दे दिया।
बहू ने आकाश की ओर उड़ती हुई परियो से कहा
कि स्वग मे जाने वाली परियो! जाकर मेरे
पिता को यह सदेश दे देना कि तेरी बेटी का
उसकी सास ने बनवास दे दिया है।
बेटी के बाप ने आकर बेटी की सास से कहा
कि जितना सोना चादी इस चपणी के
बदले मे लेना है ले लो। मेरी बेटी को घर मे बसने दे।

कुड़मा (लड़की के पिता) मैं सोना, चांदी क्या करूंगी ?
मैं तो अपनी चपणी से सौ काम लेती थी।
वह फिर उन स्वर्ग मे उड़ती परियों से अपने
चाचा को संदेश भेजती है कि चाचा जी
आ जाना। तेरी भतीजी को बनवास हो गया है।
चाचा ने आकर लड़की की सास से कहा
कि इस चपणी के बदले गाय-भैंसें ले लो
और मेरी बेटी को घर बसने दो।
उसको भी सास ने यही उत्तर दिया
- मैं गाय भैंस लेकर क्या करूंगी ?
मेरी चपणी से सौ काम निकलते थे।
हे स्वर्ग मे जाने वाली परियो
मेरे मामा को यह संदेश दे देना
कि मामा जी आ जाना। तेरी भानजी का बनवास दे दिया है।
मामे ने मिट्टी की चपणी घड़ी मामी ने उस पर चाक
फेरकर उसे पकाया। दोनों ने चपणी तयार
करके लड़की की सास को दी और कहा—
ले अपनी छाती पीटने और सिर फूकने के
लिए अपनी चपणी। हमारी भानजी
को घर में बसने दे।
सास ने उस चपणी का लौटाते हुए कहा
कि हे नाती (कुड़म) छाती पीटने के लिए यह चपणी
क्या करनी है और इस चापणी से क्या लेना है ?
मुझे तो अपनी बहू प्यारी है जिससे मुझे सौ काम पड़ेंगे ●

संग्रहण व अनुवाद
कृष्ण कुमार नूतन

घटना प्रधान गीत

बिलासपुर क्षेत्र

मोहणा

बिलासपुर के लोकगीतो मे मोहणा का अपना ही स्थान है। इस गीत को गाते गाते अब भी लोग प्राय रो जाते है। घटना इस प्रकार है कि बिलासपुर के राजा विजय चन्द के पास मोहन का भाई नौकर था। ये लोग मोर सिंगी गाव के रहने वाले थे। किसी कारण अपने गाव मे झगडा हो जाने पर मोहन के भाइयो ने अपने पडोसी की हत्या कर दी। भाइयो ने सीधे सादे मोहन को कहा – तुम यह मान जाओ तुमने ही खून किया है। हम राजा से प्रार्थना करके तुम्हे छुडवा देंगे। किन्तु यदि हम कहते है कि हमने खून किया तो फिर हमे छुडवाने वाला कोई नही होगा। भोला भाला मोहन भाइयो की बातो मे आ गया। कसूर का स्वीकार करना ही था कि कानून ने उसे अपनी लपेट मे जकड लिया। मोहन को फासी हुई। लोग एक निरपराध को फासी पर लटकते हुए देख कर रो पडे।

प या मरना ओ मोहणा माया मरना
तेरे भाईया रीया कित्तिया आया मरना।
रोया करदी ओ मोहणा रोया करदी
तेरी बालक बलेसरू रोया करदी।
खाई लैं फुलकु ओ मोहणा खाई लैं फुलकु
अपणी अम्मा रेयां हत्था रा खाई लैं फुलकु।
मैं नी खाणा ओ लोको मैं नी खाणा

मेरी घड़ी पल मरने री मैं नी खाणा ।
किनी रैह णा वो मोहणा किनी रैह णा
तेरे रगलुए बगलुए बिना रैह णा ?
भाईयें रैह णा वो लोको भाईयें रैह णा,
मेरे रगलुए बगलुए भाईयें रैह णा ।
गड्डे थम्बड़े मोहणा, गड्डे थम्बड़े
बड़िया रे रेतड़ा च गड्डे थम्बड़े ।
चढ़ी जा तख्ते ओ मोहणा, चढ़ी जा तख्ते
दम दम दिलिया चढ़ी जा तख्ते ।
बारा बजी गए ओ मोहणा बारा बजी गए,
इस राज रीया घड़िया बारा बजी गए

हिन्दी अनुवाद

हे मोहन ! तुझे अब तेरे भाइयों की करनी के कारण मरना पड़ रहा है। मोहन तेरी छोटी उम्र की पत्नी बलेसर, तेरे फांसी पर लटकने के दु ख से दुखित हो कर रो रही है । लोग कह रहे हैं मोहन ! अपनी मां के पकाए हुए फुलके खा लो । मोहन का उत्तर है हे लोगो मुझे मरने को अब थोड़ा समय शेष रह गया है अत मैं इन फुलकों को नही खाऊंगा । लोग प्रश्न करते हैं—मोहन तेरे रंगीन मकानों में कौन रहेगा ? मोहन उत्तर देता है मेरे मरने के बाद मेरे भाई मेरे रंगीन मकानों मे रहेंगे । मोहन बेड़ी घाट के रेत में फांसी के लिए खम्बे गाड़ दिये गए है तुम दु खी न हो और शीघ्र ही इन तख्तो पर चढ़ जाओ । मोहन राजा की घड़ी ने बारह बजा दिये ●

फरंगु

फरंगु बिलासपुर के गीतो मे एक बहुत पुराना मार्मिक गीत है । फरंगु शब्द हिन्दी के फिरंगी शब्द से लिया गया है । फिरंगी शब्द फिरे हुए अथवा बदले हुए रंग का अर्थात अंग्रेजों के लिए प्रयुक्त किया जाता है । अंग्रेजो ने पहाड़ो की शान्ति को भंग कर दिया ।

बहुत से राजाओं के राज्य हड़प लिये बहुत से राज्य जीत लिये गए। उन्होंने नि सन्देह कई सुधार भी किये जिन्हें उस समय के लोगों ने पसन्द नहीं किया बल्कि अपने पारम्पारिक जीवन में हस्तक्षेप समझा। यह गीत उसी कथा को प्रदर्शित करता है।

इस वे फरगुये कहर कमाया
शिमले दी सड़क सपाटूये मलाई
देश दाहाइयां दे रह लोको
डाहड़ा राज फरगुये दा।
इस वे फरगुय कैहर कमाया
महला दी इट चबारे नू लाई
देश दोहाइया
इसा वा सस्सु कैहर कमाया
खाणे रीया वेला नू चरखा डलाया
देश दाहाइया
इसा वो सौकणी कैहर कमाया
सोणे रीया वेला नू गो धूम मचाया
देश दोहाइयां

हिन्दी अनुवाद

इन फिरंगियो ने बहुत मुसीबत डाल दी। शिमला की सड़क को सपाटू से मिला दिया। इस से अब हमारी शान्ति भंग हो जाएगी। सभी सारे देश के लोग ऊंचे स्वर से कह रहे है कि इन फिरंगियो का राज बहुत ही सख्त है। इन फिरंगियो ने बहुत मुसीबत डाल दी राजाओं के महलों को गिरा कर उनके महलों की ईंटों को अपने चौबारे में लगा दिया।
(यह गीत यद्यपि तत्कालीन राजनैतिक दुःख को प्रकट करता है फिर भी सास बहू तथा सौत के पारस्परिक तनाव एवम् कलह जोकि प्रतिदिन की क्रिया के अभिन्न अंग थे भी इस में प्रकट हुए बिना न रह सके)
इस सास ने बहुत ही मुसीबत डाल दी
जो खाना खाने के समय चरखा बिछा दिया है।
भूख के समय भला चरखा कौन काते?
इस सौत ने बहुत मुश्किल डाल दी
जो सोने के समय लड़ाई झगड़ा करती है।

भूली जायां दिलड़ुआ

प्राचीन लोक कवि की कलम तो सशक्त रही ही किन्तु इस क्षेत्र म आधुनिक बिलासपुर के लोकगीतो का कवि भी पीछे नही रहा है। उसने भी अपने जीवन की कसक को बहुत गम्भीरता स अनुभव करके अपने शब्दो मे हमारे सम्मुख रखा है। गोबिन्दसागर ने बिलासपुर के जीवन का बहुत ही प्रभावित किया है। इसने यद्यपि नया जीवन दिया हैं फिर भी पुराने नगर, घर बार तथा हसने खेलने के स्थानो को हडप करके लोगों को अनाथ सा बना दिया। अपनी पुरानी सम्पत्ति के खाने के दु ख को व्यक्त करता हुआ आधुनिक लोकगीतो का कवि फूट पडा है।

भूली जाया दिलड़ुआ हो टूटी रेआ फुलड़ुआ हो
हो मेरे दिलड़ुआ हो
घर सह पुराणे जित्थी हस्सया रोया तू
हस्सी रोई करी जित्थी बडा होया तू
भूला जाया दिलड़ुआ हो मेरे दिलड़ुआ हो
गलिया च पाणी जित्थी खेला पाईया तै
बड त पुराणी जित्थी पीगा पाईया तै
भूली जाया
साहू रे मदाना झीला रा पाणी
असा सह नलवाडी हुए किथी नाणी
दस्सी देआ दिलड़ुआ हो
सब कुछ दीता खातिर देशा रे
बदले च पाए कब्जे उमरा रे
भूली जाया
डूबी गये घर बार आई गया पाणी
चल मेरी जि दे नयी दुनियां बसाणी

म्हारे बजुर्गा री रखिया नसाणियां
म्हार ही साह्मणे बणियां कहणियां
बणियां कहाणियां, भुली जाया
ग्वाड सवाड् मुके मुकेया छूहा रा पाणी
माळडे रा डैम चडेया, आई गया पाणी
चल मेरी जिन्दे नवीं दुनिया वसाणी
भूली जाया
जिन्हा जिन्हां गलिया च बापुये फराये
अम्मा री गोदा च सैर करी आये
सैर करी आये भूली जाया
उन्हारे प्यारा री गल्ला याद किया ओणी
डूबी गइया गलिया आई गया पाणी
चल मेरी जिन्दे नवी दुनिया वसाणी
भूली जाया
साण्डू री नलवाडी रगनाथा रे मेले
मुकी गए हुण वेडी घाटा रे फेरे
वेडी घाटा रे फेरे, भूली जाया
व्हेहटा रे बागा री लीची किति व्हाणी
डूबी गए बाग आई गया पाणी
चल मेरी जिन्दे नवी दुनियां बसाणी
भूली जाया दिलडुआ हो, टुटी रया फलर आ हो

हिन्दी अनुवाद

हे टूटे हुए फूल के समान मेरे दिल उन पुराने घरों को जहां तुम हंसे थे रोए थे और हंस रो कर बड़े हुए थे अब भूल जाओ।
जिन गलियों में तुम खेला करते थे अब वहां पानी आ गया है।
जिस वट वृक्ष के नीचे तुमने झूले डाले थे अब वह जलमग्न हो गया है।
हे टूटे हुए दिल ! तुम उन सब बातों को भूल जाओ।
साण्डू मैदान में अब गोविन्द सागर का पानी आ गया है।
हे टूटे हुए दिल ! बताओ वह नलवाड़ी का मेला जो साण्डू मैदान में हुआ करता था अब उसे कहां लगायें ?
हमने अपना सब कुछ देश की खातिर न्योछावर कर दिया इसके बदले हमें नये मकान बनाने के लिए उमर भर के लिए ऋणी होना पड़ा है।

हे दिल इन सब गमो का भूल जाओ। हमारे घर बार गोविन्द सागर का पानी आने पर डूब गए हैं। हे प्रिय! चलो अब नई दुनिया बसायें।
हमारे पूवजा की सारी निशानियां हमारे ही सम्मुख केवल कहानिया बन कर शेष रह गई है।
हमारे आगन और आस पास के छोटे छोट बगीचे समाप्त हो गए कुए का शीतल जल भी समाप्त हो गया।
भाखड़ा बाध से अब पानी ही पानी हो गया है। हे प्रिय! चलो अब नई दुनिया का निर्माण करें। जिन गलियो म बापू ने हाथ पकड कर फिराया था, मां ने गोदी मे सैर करवाई थी उनके प्यार की बातें अब कैसे याद आयेंगी?
पानी के आने से ये सारी गलिया तो अब डूब गई ह। इसलिए हे प्रिय! चलो अब नई दुनिया का निर्माण करें। साहू के मदान मे लगने वाले नलवाड़ी रगनाथ के मेले ढेडी घाट का आनन्ददायक सायकालीन भ्रमण आदि सभी बातें तो अब समाप्त हो गई है। लुहेड के बाग की स्वादिष्ट इलाची अब कहा खायें? पानी के आने से अब कुछ समाप्त हो गया। हे प्रिय! चलो अब नई दुनिया का निर्माण करें।
इस लोकगीत म जहा अतीत के खो जाने पर वेदना प्रकट की गई है वहा नव निर्माण के लिए कटिबद्ध होना भी दर्शाया गया है।

ऊपरलिखित बिलासपुर के इन लोकगीतो ने मानव वेदना का सूक्ष्म चित्रण किया है। चाहे मानव मृत्यु पर शोक हो ससुराल मे बहू की तड़पन हो पत्नी से बिछुडने का दुख हो विवाहित युवती की अपने मा बाप से मिलने की चाह हो राजनैतिक उथल पुथल पर क्षोभ हो अपने शहर का खो जाना हो सभी हृदय विदारक परिस्थितिया को इन लोकगीतो ने सहज ढग से चिरजीव कर दिया है। ●

सग्रहण व अनुवाद
डॉ पद्मनाभ गौतम

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

धोबण पाणिये जो गेई-ए

यह घटना प्रधान गीत राजा और धोबन के प्रेम सम्बन्धो पर प्रकाश डालता है। धोबन के सौंदय को देखकर राजा मोहित हो गया और महलो मे ले आया किन्तु रानी ने साजिश करके धोबन को ज़हर देकर मार दिया। राजा के धोबन के प्रति कोमल भाव इस गीत म झलकते हैं। बाद मे धोबन की बहती हुई लाश धोबी को नदी म मिलती है।

काला घग्घरा सिला के हाय मिलाके
हो धोबण पाणिये जो गेई ए तेरी सोह
हो धोबण पाणिये जो गेई ए
धाउवणी घड़ा रखेया हाय रखेया
हो राजा रखदिया आ गडवी मैं तेरी सोह
हो राजा रखदिया आ गडबी मैं तेरी सोह
काला घग्घरा सिला के, हाय सिला के
हो धोबण पाणिये जो गेई-ए तेरी सोह–
हो धोबण पाणिये-जो गेई ए।
धावणी घड़ा भरेया, आ भरेया
हो राज भरी लेई-ए गडवी तेरी सोह
हो राज भरी लेई ए गडबी तेरी सोह
काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हो धोबण पाणिये जो गई ए, तेरी सोह

हो धोवरण पाणिये जो गेई ए।
धोवणी घडा चुक्केया, हाय चुक्केया
हो राजें बोणी तैं पकड़ी, तेरी सो'ह
हो राजे बीणी तैं पकडी, तेरी साह
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके,
हो धोवरण पाणिये जो गेई ए तेरी सोह
हो धोवरण पाणिये जो गेई-ए।
छुड़ ऐ राजेया बीणी हाय बीणी
हो मेरी जात कमीणी, मैं तेरी सोह्
हो मेरी जात कमाणी मैं तेरी साह्
काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हो धोवरण पाणिये जो गेई ए मैं तेरी सोह
हा धावरण पाणिये जो गेई ए।
खबर करा मैहूल राणिया हाय राणियो
व राजै धावरण ल्योदी तेरी सोह
वे राजै धोवरण ल्योदी तेरी सोह्
काला घग्घरा मिलाके हाय सिलाके
हो धोवरण पाणिये जा गई ए मैं तेरी सोह्
हो धोवरण पाणिय जा गेई ए।
ल्यारा लगा ता ल्याण दे हाय ल्याण दे
हो मैं-ता बसण नी देणी तेरी सो
हो मैं ता बसण-नी दैणी तेरी सा
काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हो धोवरण पाणिये जो गेई ए मैं तेरी सोह
हो धोवरण पाणिये जो गई ए।
पैहूली पिट्ठी बणाई हाय बणाई
हो बिच सक्कर मिलाया मैं तेरी सोह्
हो बिच सक्कर मिलाया मैं तेरी सोह्
काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हो धोवरण पाणिये जो गेई ए मैं तेरी सोह्
हो धोवरण पाणिये जो गेई ए।
दूजी पिट्ठी बणाई, हाय बणाई
हो विच जहर मलाया मैं तेरी साह
हो बिच जैहर मनाया

काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हो धोबरण पारिणये जो गेई ए, मैं तेरी सोह
हा धोबरण पारिणये जो गेई-ए।
ना मेरी धोबरण जो दब्बेयो, हाय दब्बयो
हो धोबरण मैली बो-ना होए, मै तेरी साह,
हो धोबरण मैली बो नां होए
काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
धोबरण पारिणये जो गेई ए मैं तेरी साह
हो धोबरण पारिणये जो गेई ए।
ना मेरी धोबरण जो फूक्केयो, हाय फूक्केयो
हो धोबरण काली बो ना होए, मैं तेरी साह
हो धोवरण काली बो ना हाए
काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हा धोबरण पारिणये जो गेई ए मैं तेरी सोह
हो धोबरण पारिणये जो गेई ए।
सोयन दा पिंजरा बरणाया हाय बरणाया
हो किसी नदिया रुढाई मैं तेरी सोह
हा किसी नदिया रुढाई
काला घग्घरा सिलाके, हाय सिलाके
हा धोबरण पारिणये जो गई- ए मैं तेरी सोह
हो धोबरण वारिणये जो गेई ए।
धोबी कपडेया धोए, हाय धोए
हो किसी दी नार रुढदी आई ए मैं तेरी सोह,
हो किसी-दी नार रुढदी आई ए
काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हो धोबरण पारिणये जो गेई ए मैं तेरी सोह,
हो धोबरण पारिणये जो गेई ए।
धोबिय पिंजरा सह फडेया फडेया
हो धाबरण कड्डी बो हलाई ए मैं तेरी साह,
हो धाबरण कड्डी बो हलाई ए
काला घग्घरा सिलाके हाय सिलाके
हो धोबरण पारिणये जो गेई ए मैं तेरी सोह,
हो धोबरण पारिणये जा गेई ए।
धोबियें पिंजरा सेंह खोल्लया हाय खोल्लया
एहं बच्चेया दी माई ए, मैं तेरी सोह,

एह बन्नोया दी माई ए।
काला घाघरा सिला के हाय सिलाके
घोवण पाणियें जा गेई ए, मैं तेरी सोंह
घोवण पाणियें जा गई ए।।

हिन्दी अनुवाद

हाय! काला घाघरा सिलाकर बन ठन कर धोबन पानी भरने गई है तेरी सौगंध धोबन पानी भरने गई है। धोबन ने घड़ा रख दिया, हाय रख दिया हां राजा ने लोटा रख दिया मैं तेरी सौगंध खा कर कहती हूं राजा ने लोटा रख दिया मैं तेरी सौगंध खा कर कहती हूं कि धोबन पानी भरने गई है। धोबन ने घड़ा भर लिया, हां भर लिया राजा ने लोटा भर लिया मैं तेरी सौगंध खा कर कहती हूं राजा ने लोटा भर लिया तेरी सौगंध है काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है। ज्यों ही धोबन ने घड़ा उठाया कि राजा ने उसे कलाई से पकड़ लिया मैं सौगंध खाकर कहती हूं राजा ने उसे कलाई से पकड़ लिया काला घाघरा सिलाकर बनठन कर धोबन पानी भरने गई है। धोबन ने कहा अरे राजा मेरी कलाई छोड़ दे, हाय मेरी कलाई छोड़ दे तेरी सौगंध है मैं नीच जाति की हूं काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई। अरे राजा के महल में खबर दो कि राजा अपने महल में धोबन ले आया है काला घाघरा सिलाकर, बनठन कर धोबन पानी भरने गई है। महल में रानी कहने लगी अगर राजा धोबन को महलों में ले ही आया है तो ले आने दो मैं भी उसे यहां बसने नहीं दूंगी। रानी ने पेड़ा बनाया। पहला पेड़ा बनाकर उस में शक्कर मिलाई तेरी सौगंध है उस में शक्कर मिला दी, काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है। दूसरा पेड़ा बनाकर उस में विष मिला दिया तेरी सौगंध है उस में विष मिला दिया काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है। राजा कहता है—अरे! मेरी धोबन को छूना मत, हां छूना मत तेरी सौगंध है मेरी धोबन मैली न हो जाए हां मेरी धोबन कहीं मैली न हो जाए काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है। मेरी धोबन को जलाना मत हां जलाना मत कहीं मेरी धोबन काली न हो जाए तेरी सौगंध वह कहीं काली न हो जाए काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है। राजा ने सोने का पिंजरा बनवाया, हाय बनवाया धोबन को किसी नदी में प्रवाहित कर दिया तेरी सौगंध धोबन को प्रवाहित कर दिया, काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने गई है। धोबी कपड़े धो रहा था कि उसे कभी किसी की नारी बहती हुई

आ रही है, तेरी सौगंध किसी को घरवाली बहती हुई आ रही है काला घाघरा सिलाकर घोबन पानी भरने गई है। धोबी ने वह पिंजरा पकड़ा हाय ! पकड़ा उसने उसम से धोबन को निकाला और फिर नहलाया तेरी सौगंध है उसने उसे नहलाया, काला घाघरा सिलाकर बन ठनकर धोबन पानी भरने गई। तेरी सौगंध धोबन पानी भरने गई है। धोबी ने पिंजरा खोला, हाय खोला। हाय ! यह तो उसके बच्चों की माता अर्थात् यह तो धोबी की ही पत्नी है, काला घाघरा सिलाकर धोबन पानी भरने को गई है ●

काले म्हीने दियां न्हेरियां रात्ती

यह गीत उस समय की याद दिलाता है जबकि भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया। इस विशेष ऐतिहासिक घटना का सम्बध अब भारत के लोक जीवन के साथ अन्योन्याश्रित ढंग से सम्बद्ध है। जब भी किसी घर मे बालक उत्पन्न होता है तो इस कृष्ण जन्म की घटना को याद करके बालक-जन्म को हर्ष मानकर उस पर कृष्ण के गुणों को आरोपित किया जाता है।

काले महीने दिया हेरिया रात्ती जरमेया स्याम मुरारी
सेह इयो जरमेया स्याम मुरारी।
पुच्छी ल मेरेयां सग्गीया साथिया जान बधाई घरे आया
छिक्केयां तोड़ी माण्डे जी म ने, बिन्नुयां ए दित्ती रढाई
काले महीने दियां हेरिया रात्ती, जरमेया स्याम मुरारी
सेह इयो जरमेया स्याम मुरारी।
पुच्छी ल मेरेयां सग्गीया साथिया जान बधाई घरे आया
जा जम्मेया जां दीवक बलेया, चौंही चक हा रेह इयां लोई
काले महीने दिया न्हेरियां रात्ती, जरमेया स्याम मुरारी
सेह इयो जरमेया स्याम मुरारी।

पुच्छी लै मरेया मग्गीया साथियां, जान बचाई घरें आया
बाह मरोडी मेरी मटकी तोडी, बिनुआ ता दित्ता रुढाई
पुच्छी लै मेरेया सग्गीया साथिया जान बचाई घरे आया
काले महीने दिया हेरिया रात्ती जरमेया कृष्ण मुरारी
सेह्‌इया जरमेया स्याम मुरारी।
ध्होत्ता रे धोता पाट पलेटेया, कुच्छड लेया ए दाइया
पज रुपेइये मैं दाइया जा देसां, पुत्तर प्यारा माइया
जा जम्मया जां दीवक बलेया चौउ चक हाई रेह इयां लाई
काले महीने दियां हेरियां रात्ती जरमेया कृष्णा मुरारी
सेह्‌इयो जरमेया कष्ण मुरारी।
घोल पताशा मैं गुडसत्त देंदी सोयने दी लावा कटोरी
च नणा कट्टी मैं मंगूणा चढावा रेशमी लावा डोरा
जा जम्मेया जा दीपक बलया चौही चक होई रह इया लोई
काले महीने दिया हेरिया रात्ती जरमेया कृष्ण मुरारी
सह इयो जरमेया कष्ण मुरारी।
औंदे तां जावे वसुदेव भुटाखे झुट्टियां देम खलाइयां
औंदी तां जादी माई देवकी खलोदी झूट्टियां दन खसाइयां
जा जम्मेया ज दीवक बलेया हाई रेह इया चौंहीचक लाई
पुच्छी लै मेरे सग्गीया माथिया जान बचाई घरे आया।

<u>हिन्दी अनुवाद</u>

अरी सखियो! भाद्रपद माह के कृष्णपक्ष मे कृष्ण मुरारी का जन्म हुआ। कष्ण कहता है तू मेरे सगी साथियों को पूछ ल आज मैं बडी बुरी तरह प्राण बचाकर घर लौटा हूं। गापियां उसकी मां से शिकायत करती हैं कि इस कृष्ण कान्हैया ने छीके ताड दिये हमारी मटकियां फाड दीं और हमारे सिर के बिन नदी में बहा दिये। भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में अरी सखियो! मेरे घर श्याम मुरारी ने जन्म लिया। कृष्ण मां से कहता है अरी मया! भले ही तू मेरे साथियों—मित्रों से सुनिश्चिय कर ले। आज मैं बडी कठिनाई से अपने प्राणों को बचा कर घर लौटा हूं।
जब मेरा श्याम जन्मा तो घर मे जैसे दीपक जल उठा और उस श्याम रूपी कुलदीपक से मेरा घर जगमगा उठा। भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष में अरी सखियो! श्याम मुरारी ने मेरे घर में जन्म लिया है। कृष्ण कहता है—अरे मैया तू भले ही मेरे सगो साथियों से पूछ कर निश्चय कर ले कि आज मैं

बड़ी मुश्किल से प्राण बचा कर घर लौटा हूं।

इधर गोपियां शिकायत करती हैं—अरे श्याम की मैया इस तेरे श्याम ने हमारी बांह मरोड़ दी, हमारी मटकियां तोड़ दी और सिर के बिना को नदी में प्रवाहित कर दिया है। उधर कृष्ण उत्तर देता है—मैया! तू मेरे मित्रों से पूछ कर निश्चय कर ले कि मैं तो आज बड़ी मुश्किल से अपने प्राणों की रक्षा करके घर लौटा हूं। भाद्रपद के कृष्णपक्ष में अरी सखियो! कन्हैया ने मेरे घर जन्म लिया है।

नहलाया धुलाया और वस्त्र में लपेट दिया। दाई ने बड़े चाव से उस नवजात शिशु को अपनी गोदी में ले लिया। पांच रुपये दाई को उसका मोल देकर/उसका नाग देकर यह प्यारा बेटा माता को मिला है। जब इस कन्हैया ने जन्म लिया तो यह दीपक की तरह अपने प्रकाश से मेरे घर को जगमगाने लगा भाद्रपद मास में अरी सखियो! मेरे घर में कृष्ण का अवतार हुआ।

मैं अपने इस सुन्दर बेटे को सोने की कटोरी में बताशा घोल कर 'गुड़ सत' (घड़ास—पहला भोजन) देती हूं। मैं इसके लिए चन्दन का झूला बनवाकर उस झूले को रेशमी रस्सियों से बांधूंगी। जब इसने जन्म लिया था तो यह दीपक की भांति जलकर मेरे घर की सारी कूटों को देदीप्यमान करने लगा था। भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष में अरी सखियो! कृष्ण ने मेरे घर में अवतार ले लिया।

अब घर में आते जाते पिता वासुदेव कृष्ण को झुलाते हैं। वैसे खिलाने वाली स्त्रियां कृष्ण के झूले को झुलाती ही रहती है। घर के काम में व्यस्त आती जाती हुई माता देवकी भी इस शिशु को खिलाती है। वैसे खेलाने वाली स्त्रियां कृष्ण के झूले को झुलाती ही रहती हैं। जब ही इस कन्हैया ने जन्म लिया तब ऐसा प्रतीत हुआ था कि मेरे घर में दीपक जल उठा है। इस शिशु रूपी दीपक के अद्भुत प्रकाश से मेरे घर का कोना कोना जगमगा उठा था। कृष्ण कहते हैं—मैया! तू भले ही तू मेरे सभी साथियों को पूछ ले। आज तो बस मैं बड़ी कठिनाई से अपने प्राण बचाकर घर लौटा हूं।

कांगड़ा क्षेत्र

चुक्केया जी घड़ा

यह गीत कड़ी क्षेत्र और पजल क्षेत्र की मनोभूमि को झनकाता है। कड़ी क्षेत्र में शिकार खेलने आए राणा जाति के लोगों ने कड़ी की नार को कहा कि वे उसके मायके की ओर के हैं और उनका कड़ी के साथ 'साख' (सम्बन्ध) है। उन्होंने बताया कि उनका धन-दौलत चुरा लिया गया है और वे बेघर बेजर हो गए हैं। यहा तक कि उनके घोड़े आदि भी छिन गए हैं। अपना भाई जानकर कड़ी की उस नारी ने अपने गले का नौलखिया हार भाइयो को दे दिया और अपने सास ससुर से सौगंध खाकर झूठ बोल दिया कि उसका नौलखिया हार कूए मे गिर गया है। यह गीत ढोलरू के रूप में भी गाया जाता है। बहिन-भाइयो के चरम स्नेह का प्रतीक।

सामान्य परिचय चुक्केया घड़ा कड्ढी पाणीये जो चली जाणी नाऽ
चुक्केया घड़ा कड्ढी पाणीये जो चली आणी नाऽ
भरेया-जी घड़ा कड्ढढिये मिणी पर धरेया
हुङा जा खेलदे आए कोई पाजले पजराणे नाऽ
भाई पाणी जा भरें'ग्ये नारे घुट पाणिये दा प्याया नाऽ
बहिन पाणी जा प्याणी मैं भाई जाति दे कुण होदे नाऽ
भाई आमा नाऽ टुम्हे मैंणे मियें पाजले पजराणे नाऽ पाजले पजराणे नाऽ
कड्ढ़िये द साखले चार चार भाई ना।
बहिन अगों ना होए तुसा मैलढे मैलढे भेस्से नाऽ अज किह्यां-करी आए तुसा मैलढे भेस्सें-नाऽ
भाई माल जा खजाना मैणे मिये साढा लुट्टीलेया साभकारां नाऽ

पाढा जा तबेला भैणा धाढा लुट्टी लेया सरकारा नाऽ
इत्ताणे जा गर्सीदे भैणा भाईयां दे गलै सम्मी जांदे नाऽ
गलै सम्मी भैणा छम छम देई राऐ-नाऽ
नौमां लखां दा हार भैणा भाईयां दे गलै लाया- नाऽ
मदृधे दा लुला लैयों माल जा मायेरा नाऽ
होर धा लैया महूलां जो राणियां नाऽ
घुवरेया जो घड़ा कँइढडी मुडो घरैं चली घोम्गी नाऽ
सोहूरा पुच्छे नूहें मिये कँह तू कूण मदूणी नाऽ
सस्स पुच्छे नूहें मिये कँह तू कूरण मदूरणी नाऽ
नौमां लखा दा हार सोरेया टुट्टी नूह इया मंझ पेऽआ नाऽ
नौमां लखा दा हार सस्सू टुट्टी नूह इया मझ पेऽआ नाऽ

हिन्दी अनुवाद

कढडी क्षेत्र की गोरी ने घडा उठाया और पानी भरने को चली गई। हां कढडी क्षेत्र की गोरी घडा उठा कर पानी भरने चली गई। घडा भर कर अभी कढडी म ऊ चो ढगी पर रखा ही था कि उसे पजल क्षेत्र के कुछ लोग चौपट खलते हुए आते नजर आए। हां पाच राणे चौपट खेलते हुए आते दिखाई दिय। अरे पानी भरनी हुई हे नारी! हमें एक घूट पानी तो पिलाना।
पानी तो तुम्हें पिलाऊगी पर पहले यह बताओ कि तुम जाति के कौन हो? हम पजल क्षेत्र के रहने वाले है पाँच लाग हम राणा जाति से है। हम कँढडी क्षेत्र के लोगो के साथ सम्बन्धी भी है। ये चार मेरे भाई है।
अरे पजल क्षेत्र के राणे कभी मले वेश मे दिखाई नहीं देत। पहले कभी इन मले वेश में दिखाई नहीं दिये। आज आप कैसे मैले वेश म हो मुझे बताओ।
अरी बहिना! हमारी धन दौलत साहूकारो ने लूट ली है और घाडे तबेले सरकार न छीन लिए हैं।
इतना सुनते बहिन अपने भाइयो के गले लग गई। भाइयो के साथ अकमाल होकर छम छम रोने लगी।
बहिन ने अपने गले का नौलखिया हार उतारा और भाइयो को पहना दिया। अरे भाइयो! आधे हार से तुम जायदाद खरीदना और आधे से अपने महलो के लिए रानियां ले आना।
फिर वह कढडी की महिला अपना घडा उठा कर घर लौट आती है।

ससुर अपनी बहू से पूछने लगा —अरी बहू उदास भी क्या है ?
सास पूछती है अरी बहू तू उदास क्यों है ?
हे ससुर जी ! मेरा नौलखिया हार टूट कर कुए मे गिर गया है ।
हे सास जी ! मेरा नौलखिया हार टूट कर कुए गिर गया है ❁

संग्रहण व अनुवाद
डॉ० पीयूष गुलेरी

कांगड़ा (पालमपुर) क्षेत्र

शिव गौरजा का विवाह

प्रस्तुत गीत मे हिमालय पर्वत के घर पैदा हुई गौरजा के विवाह तथा सगाई का वर्णन है ।

हिंचले राजे नै कन्या जे जाई
सद्दे ब्राह्मण रास गणाई
इसा मेरीया कन्या जो इसा मेरीया गौरजा जो
खरा वर चाहिए ए छल वर चाहिए
सुणा जी हमारया प्रोहता जी
जोड़ी वर चाहिए—राम ।
ना इत्थू रसदी ना इत्थू बसदी
कुथी देहिया सेघा मैं जाणा जी ?
काले काले वणे बिच धूए दी घट्टा
इसा देहिया सेघा तुसां जाणा प्रोहता जो ।
हत्थें लई धोती तै कच्छा मारी पाथी

घर उर ढूंढण चलेया—राम।
इक वण हुंडेया दुआ वण हुंडेया,
त्रिये वणे साधुए दा डेरा राम।
तू कजो आया मोलेया ब्राह्मणा,
न मेरे छन ता न मेरे टपरी
न मेर झोली ता न मेरे खपरी
न मेरे खाणे जो दाणे—राम
मैं कियां ब्याहणी गौरजां—राम।
तेरेई छन ता तेरे है टपरी
तेरेई झोली ता तेरेई खपरी
तेरेई खाणे जो दाणे—राम
तैंही ब्याहणी गौरजा राणी शिवजी।
चिकड़े-चिमड़े शिव जो होण सजोया
काले कजले पीवल कीती—राम।
अंगे बभूति गले मुण्ड माला
राहूए ता केतूए ढोल बजाए
भूत प्रेत सह जानिया चलाए
बैले चढ़ी शिव ब्याहणा आए—राम।
दिख दिख नहुल्ले तू अपणे जुआइये
धारीयें वणसारीयें सब भिखदी जुआइये
धीया सरूप जुआई करूप
फिट फिट धीये तू कजो जाई
तिज्जो सरेखा नी मिल्लेया जुआई
तैं धीए लाज लुआई—राम।
चिकड़े-चिमड़े गौरजा जो न्हौण कराया
काले कजले पीवल कीती—राम।
हत्था दे गहणें सह पैरे घुमाए
ढाका दा घघरा सह सीसें लुआया
सिरे [illegible] सालू सह ढाका व झाया
गौरजा दा रूप बदलाया—राम।
धारेया-धारेया शिव जी अपणे सरूपे
अम्मा दा दुखड़ा मटाया—राम।
गंगा ता जमना दा न्हौण सजोया
कुगुए केसरें पीवल कीती—राम।

सूरज चन्द्रमा मुगटै जडाए
म्याणु तारा कड़ी लाया—राम।
सो सठ देवते जानिय चलाए
सदा सिव ब्याहणा आए —राम
घारीयै कणसारीयै दिसदी नडुल्ल
धीया कुरूप जुम्राई सरूप
एह कीया गल्ल वखनी — राम।
गगा जमना जलै गोरजा जो होणा कराया
कुगुए केसरै पीवल कीती — राम
हत्था दे गहणे सह पैरे पुमाए
ढाका दा घघरा सह ढाका व हाथा
सिरे दा सालुआ सह सिरै उडाया
गोरजा दा रूप सजाया—स्याम।
सिव-गोरजा दा व्याह वो रचाया
धीया जो दिदी धूप सह ससडो
जुम्राइये जा अघ दुमाई राम
घन जी जुम्राइया घन घन सिवजी
घन-धन वाकडा रूप— राम

हिन्दी अनुवाद

हिमालय के घर मे जब गोरजा का ज म हुआ तो उ होने ब्राह्मणो का बुला कर क या की राशि गिनवाई और लग्न लगवाया (फिर वे बोले) मेरी बेटी गोरजा को आप अच्छा सा घर वर ढूढिए हमारे पुरोहित जी! आप सुन लीजिए अच्छा और सु दर वर चाहिए जिस से जोडी जच जाए। (ब्राह्मण बोले) यहा तो कोई भी बस्ती नगर नही मुझे बतलाइये कि मैं किस सीध (दिशा) मे जाऊ? (राजा बोला) काले काले (देवदार वाले) जगल मे जहा से धूआ उठ रहा होगा तुम उसी दिशा मे चले जाना प्रोहित जी। हाथ मे धोती उठा कर और बगल में पोथी लेकर प्रोहित गोरजा के लिए घर-वर की तलाश करन चल पडा। प्रोहित ने एक वन पार किया फिर दूसरा जब वह तीसरे वन मे पहुचा तो उसे एक साधु का डेरा दिखाई दिया। (ब्राह्मण को देख कर और उसका आशय भाप) शिव जी बोले अरे भोले ब्राह्मण तुम यहा क्या आए हो? मेरे पास न तो छन (छप्पर) है न

झोंपडी। न मेरे पास झोली है न भिक्षा मांगने के लिए खप्पर ही है और तो और मेरे पास तो खाने के लिए अन्न का दाना भी नही है। तुम्ही बतलाओ मैं गोरजा को कैसे व्याह सकता हू ? (इस बात को सुन कर) ब्राह्मण बोला (आप ऐसा मत कहिये) आपके पास छन भी है और झोंपडी भी। खाने के लिए अन्न की भी आपके यहा कोई कमी नही है। गोरजा से आपका विवाह होकर ही रहेगा। (इतना कहकर ब्राह्मण लौट आया। शिव जी अपने विवाह की तैयारिया करने लगे) शिव ने कीचड गारे मे स्नान किया। मेंहदी के स्थान पर काजल का प्रयोग किया। अगो मे विभूति रमा ली और गले मे मुण्डमाला पहन ली। राहू और केतु को ढोल बजाने का काम सौंपा गया। सभी प्रकार के भूत प्रेत बारात मे चल पडे और शंकर भगवान ने बैल पर चढ कर ससुराल की ओर प्रस्थान किया। (जब बारात सुसराल के समीप पहुची तब) सभी स्त्रिया मकुल्ल (मयना) को कहने लगी कि तुम अपने जवाई को देख लो। (मयना) इधर उधर झांक कर अपने जवाई को देखने लगी। उसने देखा कि जितनी सुन्दर उसकी बेटी है उतना ही कुरूप उसका जवाई है। (मयना बोली। हे बेटी ! तुम्हारे जन्म लेने को धिक्कार है जितनी तुम सुन्दर हो उसके अनुरूप तुम्हें वर नही मिला। तुमने तो हमें भी लाज लगवाई है। उन्होने गारे और कीचड से गोरजा का स्नान करवाया। मेहन्दी की जगह काजल का प्रयोग किया। हाथो के गहने पैरो मे पहनाए घाघरे का सिर पर ओढा दिया सिर का दुपट्टा कमर मे बाध दिया। इस प्रकार उन्होने भी पति के अनुरूप ही गोरजा का रूप बना दिया। (अब गोरजा शिव जी को मन ही मन कहती है शिव जी ! आप अपना असली स्वरूप बना लो मेरी मा का दुखडा मिटा दो)। उन्होने (शिवजी ने) गगा जमना के जल से स्नान किया, कुगू और केसर से श्रृंगार किया। सूर्य और चन्द्रमा को मुकुट पर लगा लिया। ध्रुव तारे (मोर के तारे) को अपनी कमर मे बन्धे कमर बन्द से लगा लिया। सौ-साठ देवताओं को बारात मे चलने को तैयार किया। इस प्रकार पूर्ण रूप से सुसज्जित होकर सदा शिव व्याह करने के लिए चले। (गौरा की मां) छुपछुप कर अपने जवाई को देखने लगी। उसने देखा कि उसकी बेटी तो इस वर के आगे बहुत कुरूप दिखाई दे रही है शिव जी तो बहुत सुन्दर हैं। अब क्या होगा, यह बात बनती नही दीखती। उन्होने भी गगा जमना से जल मगवा कर गोरजा को स्नान करवाया। कुमकुम और केसर से उनका श्रृंगार किया। हाथ के गहने हाथो मे तथा पैर के गहने पैरों मे पहनाए। घाघरा कमर में और सालू (ओढनी) सिर पर ओढाया। इस प्रकार उन्होने भी

दूल्हे के अनुरूप दुल्हिन का रूप भी सवार दिया। अब शिव गौरजा के विवा
की रसम पूरी होने लगी। सास गौरजा को पूप और शिव जी का अध दक
उनका अभिनंदन करने लगी और प्रशंसा करती हुई बोली भगवान शंक
तुम धन्य हो और तुम्हारा यह स्वरूप धन्य है।

कांगड़ा (पालमपुर) क्षेत्र

लंका दा दान

(प्रस्तुत गीत में लंका के निर्माण का वर्णन है)

चारेयो नदिया ज चारेयो बगिया जी
चौंही दे नीर सुहाए राम।
चारेयो नारी जी चारेयो पुरख
चाहूो द जोड़ जड़ाये राम।
चारेया खूहीया जो चारेयो बेड़िया जी
चाही दे नीर सुहाए राम।
गगा दे न्होणे जो चलो भोलेनाथा
गगा न्होणे जो जाणा राम।
इक्की बखें न्होणा लगे भोलेनाथ जी
दूए बखें गौरजा राणी राम।
ठडेया छिट्टेया न लाया भोलेनाथ जी
ठडेया छिट्टेया न लाया राम।
दो हथ टपरू भी बणेया भोलेनाथा जी
कुथू बेई करनी है सध्या राम।
पले बिच खेल रचाई भोलेनाथे
सून दी लका बणाई राम।
भत्तर काठे दो सौ चबारे
सौ सठ लाए दरवाजे राम।
दिख मेरी गौरा मैं लका बणाई
इत्थू बैठी करनी है सध्या राम।
हारनी जो भेजणीयाँ चिट्ठिया तां पत्रिया

प्राहते जा "यूदर देणो राम ।
सब सब ब्राह्मण आए भोले नाथ जी
कुले दा प्रोहत नी आया राम ।
अन्न मैं देसा धन मैं देसा
मुह मगी दछणा मैं देणी राम ।
अन्न बन्ही लैणा मैं धन बन्ही लैणा
दछणा च लैणी मैं लका राम ।
हाथे लिया लोटा सकल्प जे कीता
लका दीती दछणा राम ।

हिन्दी अनुवाद

चार नदिया है चारो बह रही हैं और चारो का जल सुहावना (निमल) है। चार नारिया है चार पुरुष है चारों का मेल कराने वाले श्रीराम हैं। चार कूए हैं चार बावड़िया हैं चारों का जल स्वच्छ है। (पावती भगवान शकर को कहती है) हे भोले नाथ ! आप हमारे साथ गगा मे स्नान करने के लिए चलिए। (भोलनाथ जी पावती को लेकर गगा मे स्नान करने चले) एक ओर शिव जी नहाने लगे दूसरी ओर पावती। (भगवान शकर पावती पर ठड जल के छीटे डाल कर उन से छेड़खानी करने लगे) पावती कहती है भोलनाथ जी ! आप ठडे पानी के छींटे मत लगाइये। (स्नान करते करते रूठने की मुद्रा म पावती भगवान शकर को ताना देती है) आप ने दो हाथ झोपड़ी भी बनाई नही गई बताइये अब मैं कहा बठ कर स ध्या करू ? (शकर से भी ताना नही सहा गया) उन्होने अपनी माया के बल से पल भर म सोने की लका बना कर तयार कर दी उस लका के बहत्तर कोठे और दो सौ चौबार थे। सैकडो ही दरवाजे उसम लगाए गए। अब शकर उससे बोले देखो गौरजा ! मैंने तुम्हारे लिए लका का निर्माण किया है तुम यहा बैठ कर पूजा करो। (अब पावती शिव जी से कहती है) लका की प्रतिष्ठा करवाना है कुल पुरोहित को बुला लीजिए औरो को बुलाने के लिए तो आप चाहे पत्र ही भेज दीजिए परतु अपने पुरोहित को तो विधिवत निम त्रण देना होगा।' (शकर भगवान ने सभी ब्राह्मणो को भाति पुरोहित को भी पत्र भेज दिया। सभी ब्राह्मण पहुच गए परतु कुल परोहित नही आया) पावती बोली भोलेनाथ जी सभी ब्राह्मण पहुच गए हैं परन्तु कुल पुरोहित नहीं आया ! पुरोहित को बुलाने शकर भगवान स्वय गए और बोले, मैं तुम्ह बहुत सा अन्न धन दूगा और इसके अतिरिक्त

मुह मांगी दक्षिणा भी दूंगा।
(कुल पुरोहित पहुंच गया। उसने लंका की प्रतिष्ठा करवा दी। शंकर भगवान ने उसे अन्न और धन दिया। पुरोहित ने अन्न तथा धन बांध लिया। तब उससे भगवान शंकर ने दक्षिणा मांगने को कहा। पंडित ने दक्षिणा में लंका को ही मांग लिया।
शंकर भगवान ने हाथ में पानी का लोटा लिया और दक्षिणा के रूप में लंका का संकल्प कर दिया

घटना प्रधान गीत
कांगड़ा क्षेत्र

राजा गोपी चन्द

राजा गोपी चन्द ने एक मूसर के बहाने गाय पर बाण चला दिया। गाय हत्या के प्रायश्चित का वर्णन इस गीत में है।

सूरे दे बहाने गोपी चन्द कपला जो मारी
जी कपला जो मारी
हत्या लगी कुलें सारे राजा जी।
घरें जे प्राया गोपी चन्द माता जो पुच्छदा जो
माता जो पुच्छदा
किया जागी ह या म्हारी माता जी ?
कन्ना ता छेदी पुत्रा मुन्दरा जे पाया
जी मुन्दरा जे पाया
भागवा वस्त्र लाया बेटा जो
दखणे भी जाया पुत्रा पच्छम भी जाया
जी पच्छमे भी जाया
माता दे बेहड़े मत प्रोदा बेटा जी।

पहले दा हुइगा वो माता माता दे वहूडे
जो माता वेहडे
देम्रो माता मिजो मिछिया माता जो ।
दमरो मी जाया पुतरा पछमे मी आया
जी पछम मी जाया
मैणा द देसे न आया नेट. जी ।
दूजी ता असल गापीचन्द नैणी द वहडे
जो मैणी दे वेहड
ग्मा माई असा जो मिछिया, रामा जी
थाल ता भरी छोरी मिछिया लइ आई
जी मिछिया लई आई
लिया जोगी तुसा मिछिया जी ।
तैरी ता मिछिया छोरी असा मी नैणी
जी असा नी लैणी
राणी देवे ता लइये छारी जो ।
कही न सका राणी बोली न सका
जी बोली न सकी
इया लग माई तुम्हारा राणी जी ।
नवक कटासा आ छोरी जीमा बढासा
जी जीमा बढासा
महला ते बाहर नकालसा छोरी जी ।
थाल ता भरेया वो रणी मुगेया ता मोतिया
जी मुगेया ता मोतिया
मिछिया देणा आई राजा जी ।
परा बखी दिखदी राणी मुखे बखी दिखदी
मणा ता गई लटोई राजा जी ।
तू ता था वो माइया दिल्लिया दा राजा
वो दिल्लिया दा राजा
एह, क्या भेस बणाया राजा जी ?
चनण कटाया वो माइया चिखा रचाया
जी चिखा रचाया
मणदामिया ठाह,री दाग लाया राजा जी

राजा गोपी चंद (जब शिकार मग्न रहे थे) ने सूअर समझ कर बाण चला दिया जो एक गाय को लगा जिससे गाय मर गई और यह गौ हत्या का पाप सारे कुल के लिए कलंक बन गया।

घर आकर गोपीचंद अपनी मां से पूछता है कि मां मुझे गऊ हत्या लग गई है इसके निवारण का उपाय बतलाइये।

मां कहती है बेटा! कानों में छिद्र कर मुंदरे डालो और भगवें रंग के वस्त्र पहन कर घर से निकल जाओ। तुम दक्षिण और पश्चिम दिशाओं में चले जाना किन्तु अपनी मां को शक्ल न दिखाना।

(इस पर राजा गोपी चंद कहता है) मैं पहले तो तुम्हारे ही आंगन में अलख जगाऊंगा। मां तुम मुझे सबसे पहली भिक्षा अपने हाथ से ही देना।

मां फिर कहती है तुम दक्षिण दिशा में भी जाना और पश्चिम में भी किन्तु अपनी बहन के देश में मत जाना।

गोपी चंद मां से भिक्षा लेकर आगे निकल गया उसने बहन के आंगन में जाकर अलख जगा दी और बोला माई भिक्षा दो

अलख सुनकर बहन की नौकरानी थाल भरकर भिक्षा ले आई और बोली लो जोगी जी! भिक्षा ले लो।

उसकी बात सुनकर राजा बोला' रे लड़की! तुम्हारे हाथ की भिक्षा हम नहीं लेते। रानी देगी तभी लेंगे।

बात सुनकर नौकरानी ने राजा को पहचान लिया परन्तु वह हैरानी में पड़ गई कि क्या यह गोपीचंद ही है या कोई अन्य?

नौकरानी भीतर जा कर बोली रानी ना तो मैं कह सकती और न ही बोले बिना रह सकती हूं मुझे तो वह साधु ऐसा लग रहा मानो आपका भाई गोपीचन्द हो'

उसकी बात को सुनकर रानी बोली तू यह क्या कह रही है मैं तुम्हारी नाक कटवा कर जीभ निकलवा कर तुम्हें अपने महलों से बाहर निकाल दूंगी।' इतना कहकर रानी ने मोतियों का थाल भरा और स्वयं भिक्षा देने के लिए बाहर निकली।

रानी की दृष्टि ज्यों ही राजा के स्वरूप पर पड़ी वह उसके मुख की ओर देखने लगी। भाई को देखते ही वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ी और विलाप करने लगी भैया! तुम तो दिल्ली के राजा थे, तुमने यह क्या वेश बनाया है? (अच्छा अब

मुझ से नहीं सहा जाता मेरे प्राण पखेरू उडने वाले है) च दन के पेड को कटवा कर तुम चिता रचाना और ऐसे स्थान पर अग्नि लगा देना जहां कोई दाग न हो (अर्थात तुम्हारी हत्या के कलंक को सुनकर और तुम्हारे वेश को देखकर मेरा तन मन जल कर राख हो रहा है ●

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

सस्सू झगड़ा रचाया

प्रस्तुत लोकगीत मे सास के दुर्व्यवहार से बहू की हत्या का वर्णन है।

सभलीया वेला सस्सू झगड़ा रचाया जी
झगड़ा रचाया
दूरे दा भरना जलेया पाणी ए।
टट्टू तरियाहे नूहें बच्छू तरियाहे आ बच्छू तरियाहे
महए दी डाली कुमलाई ए
पंज सत गुड़ीया सस्सू पंज सत वेढ़िया जी
पंज सत्त वेढ़िया
चनरो दीया वाई ठंडा नीर ए।
चुकेया महालू नूहां मिणी पर रखेया जी
मिणी पर रखेया
बाल नी लाधा पापी कोई ए।
पारलिया रिढ़ीया सस्सू दो जणे उतरे जी, दो जणे उतर
मझ को नणाना दा वीर ए।
सूई-सूई पगड़ो सस्सू कूजा दी कगली जी कूजा दी कगली
चलदे दी चाल पछैणी ए
नणान्त दियां अक्खां सस्सू देरे दी नुहार जी, देरे दी नुहार
चलदे दी चाल पछैणी ए।
दई दियां सस्सू मेरे गैंह ऐ ता कपड़े जी, गैंह ऐ ता कपड़े

औंदे जो परना सगार ए ।
बत्ता दा थकेया नूहे धुप्पा दा मज्जेया जो धुप्पा दा मज्जेया
नजर मरी मत दिखदी ए।
खाई लिया नूह लुधिया कचौरियां जी लुधिया कचौरिया
मझले चवार चढी सोया ए ।
पहल ता दि दी सस्सू रूखिया ता मुक्किया जा रूखिय ता मुक्किया
अज किया पक्के पकवान ए ।
गल बिच पई आदी चरमरी जो चरमरी जी
पेटा च उठदा ऐ हौल ए
बछाई लिया नूह अज ल्हेफ तलाइया जी ल्हेफ तलाइया
मझले चबारे चढो सोया ए ।
अग्गे ता दिन्दी सस्सू टुट्टे खधालु जो, टुट्टे खदालु
अज किया ल्हेफ तलाइया ए ?
बोहडी बछाए नूहे ल्हफ तलाइया जी ल्हफ तलाइया
मझो चवार सई गई ए ।
अम्मा मी सुझी मेरा बापू मी मिल्लेया जी बापू मी मिल्लेया
नार मेरी नजरी नी आई ए ।
धुकया घडोलू पुत्रा ढाका पर रखेया जी ढाका पर रखेया
खूहीया कनारे चली गेई ए ।
खूहीया नी मिल्लो माए बोडिया नी मिल्ली जी बोडिया नी मिल्ली
राती वेला कुथू गई ए ।
सिरे पैर कमली पुत्रा चढ़ी के चबारे जो चढी के चबारे
मझले चबारे सई रही ए।
हक्का मी पाइया माए बाही रहालिया जी बाही मी रहालिया
इक मी हक्क नहीं सुणदी ए ।
खाधे पकुआन पुत्रा तिरमिरी पैई जी तिरमिरी पैई
मुह ढकी सई गई ए ।
फिट फिट माए सिरे हत्या तें लई जी हत्या त लेई
तें मेरी नार मुकाई ए ।
पकडेया घोड़ पुतरे अड़िया दा आई
हुण नहीं आदा तेरा देस ए।

सांझ हो रही है, सास अपनी बहू से झगड़ रही है, अभी उसे बहुत दूर से पानी भी लाना है।

सास बहू को कहती है कि कट्टू (भैंस के बच्चे) और बच्छू (बछड़े) प्यासे हैं। मरूए की क्यारी भी सूख रही है तुम पानी लाओ।

बहू पूछती है मां जी! पांच सात कुएं हैं और पांच सात बावड़ियां हैं मुझे बतलाइये कि मैं कहां से पानी लाऊं'

सास कहती है पांच सात कुएं और बावड़ियां तो हैं परन्तु तुम चनण की बावड़ी से ठण्डा पानी ले आओ।

बहू ने घड़ा भर कर मेढ पर रख दिया किन्तु घड़ा बड़ा था उसे कोई भी व्यक्ति नहीं दीखता था जो उस घड़े को सिर पर उठाने में उसकी सहायता करे। सभी समीप से गुजर जाते थे किसी को उस पर दया न आई।

(किसी प्रकार घड़ा उठाकर वह अपने घर पहुंच गई और प्रसन्नता पूर्वक सास से बोली) मां जी! पार वाले टीले से दो व्यक्ति उतरे हैं उनमें से एक ननद का भाई (अर्थात मेरा पति) है

(सास ने बहू से प्रश्न किया) तूने कैसे जान लिया कि पार वाले टीले से उतरने वाले लोगों में तुम्हारा पति भी है।

(तब बहू बोली) मैंने देखा कि उनकी लाल रंग की पगड़ी है, उस पर कूंज के पंखों की कलगी है और मैंने तो दूर से उनकी चाल भी पहचान ली है। ननद की तरह उनकी आंखें हैं देवर जैसी शकल है और चाल से तो पता ही चल जाता है।

अब आप जल्दी से मेरे गहने कपड़े निकाल दीजिए मैंने उनके आने से पहले-पहले शृंगार करना है।

तब सास बोली देखो वह धूप से कुम्हलाया हुआ और सफर करके थका मांदा घर आ रहा है। तुम आज उससे दूर ही रहना नजर भरकर उसकी ओर मत देखना।

सास ने बढ़िया-बढ़िया पकवान पकाए और उसे खाने के लिए परोस दिए। उन्हें देखकर वह बोला सास जी! पहले तो आप रूखा सूखी रोटी देती थी आज पकवान किस लिए पकाए गए हैं? खाना खाते ही उसके गले में जलन सी पड़ती है और पेट में शूल उठने लगता है।

(अब सास उसे कहती है) बहू! तुम लिहाफ और तलाइयों में बिस्तर लगा कर मझले चौबारे में उनके आने से पहले पहले सो जाओ

सास के व्यवहार पर उसे आश्चर्य होने लगा कि पहले तो वह सास चौपड़ो में

सुलाती थी आज क्या बात है कि वह मुझे लिहाफ और तलाइयों म सुला रहा है। उसने लिहफ तलाइयों का ऊपरी चौबारे मे बिछाया और सास क कहने के अनुसार जाकर सो गई।

(जब लड़का घर आया तो वह ग्रह लादित आंखो से इधर उधर अपनी प्यारी पत्नी को देखने लगा) वह बोला अम्मा मैं मिल लिया सबसे मिल लिया पर तु मेरी पत्नी दिखाई नही द रही है वह कहा है

(तब मा बोली) बेटा! वह घड़ा उठाकर पानी लेने के लिए कुए पर गई है। (पति झट कुए की ओर चल पड़ा परन्तु उसे वह वहां भी न मिली तो मा स बोला) मा! मैंने उसे कुए पर भी ढूढा बावड़ी पर भी देखा तुम सच सच बताओ कि वह रात्री के समय कहा गई है ?

तब मा बोली उसने सिर पर कम्बल ओढ़ा है और बीच वाले चौबारे मे चढ़ कर सो गई है।'

(इतना सुन कर वह चौबारे पर आ गया)। उसने आवाजें लगाई बाहो मे हिलाया किन्तु वह न उठी तब वह मां से बोला) मैंने उसे आवाजें लगाई हिलाया परन्तु वह तो बोलती ही नही है। मेरी एक भी आवाज नही सुनती।'

तब मा अपनी करतूत पर पर्दा डालती हुई बोली बेटा! पकवान खाते हुए उसके गले म जलन सी पड़ गई थी और इसीलिए तो वह मुह ढाप कर सो गई थी।

(बेटे को मा की काली करतूत समझने मे देरी न लगी वह बोला। मा तुम्हारी इस काली करतूत को धिक्कार है तुमने मेरी पत्नी की हत्या की है उसकी हत्या का कलक तुम्हारे सिर पर है।

उसने घोड़ा खोला और उस पर सवार होकर मा से बोला अब मैं तुम्हारे देश मे कभी भी नही आऊगा। इतना कह कर घोड़े को एडी लगाई और वहा से चल दिया।

बली राजे दा जग

(राजा बली की दान परीक्षा का वर्णन)

राजैं बलीन कोई जग रचाया,
सौ मठ ब्राह्मण "पू दरे राम ।
रब सत ब्राह्मण बीहा जे बैठे
पब सत परोली दुआरैं राम ।
बालके दे रूप सुआमी जे आए
बठे धूणी रमाई राम ।
क्या बालका धोनी पोथी तैं लैणी ?
की मत्त खाणा रसोई स्याम ।
न जजमाना धोती पोथी मैं लैणी
न मत्त खाणा रसोई राम ।
क्या बालका गजली घोड़ी तैं लैणी
क्या राणिया पर हाल स्याम ।
न वो राजा गजली घोड़ी मैं लैणी
राणी हमारी है माता स्याम ।
ढाई पैर ब्राह्मण धरती जे मगदा
देणा की लणा मैं दान राम ।
मोलिया दे मुकुए सुक्कर जे बैठा
करना नी दिन्दा है दान स्याम ।
द्रुमा दे जुड़ुए दी सुक्करे जो लाई
सुकरे दी हाख फटाई स्याम

हिंदी अनुवाद

राजा बली ने यज्ञ रचाया जिसमें सैकड़ों ब्राह्मणों को न्योता भेजा
पांच सात ब्राह्मण तो घर के बारह व बीह (मटली) पर आकर बैठ गए
और कुछ ड्योढ़ी के दरवाजे पर
बालक के रूप में जगतपति भगवान स्वयं वहां पधार और धूनी जला बैठ गए
राजा ने बालक से पूछा हे बालक। क्या तुम पहनने को धोती ओर पढ़ने का पोथी लोगे अथवा रसोई घर में पका भात खाओगे ?'
बालक बोला हे यजमान। न तो मुझे धोती पोथी चाहिए और न मैं रसोई में पका भात खाऊंगा'
(इस पर राजा हंस कर) बोला 'क्या तुम्हें मखमली (बढ़िया) घोड़ी लेनी है या फिर तुम्हारी दृष्टि मेरी रानी पर है।
तब बालक बोला नहीं राजा मुझे तुम्हारी घोड़ी नहीं चाहिए रानी तो हमारी माता तुल्य है।
मुझे तो केवल अढ़ाई हाथ भूमि चाहिए जिस पर मैं अपनी कुटिया बनाऊंगा।
इतनी बात जब ब्राह्मण ने की, राजा धरती दान करने को तैयार हो गया किंतु उसका गुरू शुक्र सारी बात समझ गया वह मसरवे के मुख पर आकर बैठ गया जिससे सकल्प के लिए पानी ही नहीं निकल पाया।
(भगवान उसकी चालाकी भांप गए) उन्होंने दूब से मुसरवे की टूटी को छेड़ा जिससे शुक्र देवता की एक आंख फूट गई (और राजा से बावन ने) सकल्प करवाया और तीन डगों में तीनों लोकों को माप लिया) ●

संग्रहण व अनुवाद
सुदर्शन डोगरा

कांगड़ा क्षेत्र

उआरे तैं आई राणी देवकी

यह लोकगीत उस समय की घटना को चित्रित करता है जब राजा कंस अपनी बहन देवकी की कोख मे उत्पन्न सात सन्तानों का वध कर चुका होता है और भगवान कृष्ण के जन्म के उपरान्त देवकी अपने नवजात शिशु कृष्ण को यशोदा की कन्या से बदल लेने की आपसी सहमति व्यक्त करती है। इस योजना से नवजात कृष्ण को कंस के कोप से बचा लिया जाता है फिर भी यशोदा की कन्या को कंस देवकी की सन्तान समझ कर कठोर शिला पर पछाड़ता है। कंस द्वारा कन्या पछाड़े जाने से पहले आकाशवाणी करती हुई कि मारने वाला तो यमुना पार है, बिजली बन कर चमक उठी

उआरे तैं आई राणी देवकी अजी आ
पारे तैं आई जसोदा झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी
जरेया पढोलू देवकिया डगिया पर रखेया अजी ओ
नैंण भरी भरी रोए झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
तू कह्‌दो रादी मेंह्‌णे देवकिए अजी ओ
क्या तेरे मने बिच कोह्‌ झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
सत जनमें राजे कंसे मारे अजी ओ
अठुए लैंणा अवतार, झांझर बजदी

अजी ओ झांझर बजदी ।
ज तेरें जन्मेगा बालक अजी आ
गोकुल देला पुजाई, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
मादु म्होने दी अष्टमी अजी ओ
जन्मेया कण्णा मुरार झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
जागदे पहू री सौ गेए न अजी आ
खुल्ली गेए न चम दुआर झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी आ ।
राह रिया पाया जो नी हूं बसुदवें अजी आ
जाणा ऐ जमुना द पार, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
अग्गे तैं जमुना उछली अजी
पिच्छे त सीह घरणाये झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
चरणां बदी जमुना थल्ले अगे अजी ओ
सीह लेदा बरणवास झांझर बजदी
अजी ओ झा झर बजदी ।
उठ जसोदे सुत्तीए अजी ओ
बसुआ खड़ा दरबार झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
बालक लीजो कन्या दीजो अजी आ
कन्या लणी बटाई, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
छैल छलैंडी उठी ए अजी ओ
बालक लेया गलें लाई, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।
औंदिया कन्या रोई सुणाया अजी आ
कन्या लैया अवतार, झांझर बजदी
अजी को झांझर बजदी ।
सुत्तेयो पहरा जागो सहोतें अजी ओ
चढ़ी ॥ चम दुआर झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी ।

इधर करो राजे वसे ओ अजी ओ
कन्या लया अवतार, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
सद्दी बुलायो पढ़ेयो पढ़ता अजी ओ
कन्या दा लग्न बणायो, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
वेदां दे अन्दर बालक अजी ओ
कन्या किस विध होई, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
सच खलायी मैह्लों देवकिए अजी ओ
तू सतवंती ए नार, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
जन्मेया ना वीरा बालक अजी ओ
कन्या लेई ए बटाई झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
सद्द बुलायो भूसड़ धोबिए अजी ओ
पत्थ सिला पटछाड़यो, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
जिह्ना क्या मारना धोबिया अजी ओ
मरने वाला जमनापार, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।
हत्थां तें छुटकी ओ गेई ए अजी ओ
बिजली लैया लशकारा, झांझर बजदी
अजी ओ झांझर बजदी।

हिन्दी अनुवाद

एक ओर से रानी देवकी आई
और दूसरी ओर से यशोदा, पायल बजती है
अजी हां पायल बजती है।
घड़ा भरकर देवकी ने सिर पर रखा
नयन भर भर कर रोती है, पायल बजती है
अजी हां पायल बजती।
तू किस लिए बहन देवकी रो रही है

कौन सा क्रोध तेरे मन में है, पायल बजती है
अजी हां पायल बजती ।
मेरी कोख से पैदा हुए सातो को राजा कंस ने मार डाला
आठवें ने अवतार लेना है, झांझर बजती है
अजी हां झाझर बजती है ।
अगर तेरे घर बालक जन्मा
तो उसे गोकुल पहुंचा देना झाझर बजती है
अजी हां झाझर बजती
भाद्र मास की अष्टमी अजी हां
जन्मेया कृष्ण मुरारी, झांझर बजती है
अजी हां झाझर बजती ।
जागते हुए पहरेदारों की आंख लग गई
बन्द द्वारा खुल गए, झाझर बजती है
अजी हा झाझर बजती है
वासुदेव ने टोकरी में डाल
उसे यमुना के पार पहुंचना है
अजी हां झांझर बजती है
आगे से यमुना उछल पड़ी
पीछे से शेर गरजने लगे झाझर बजती है
अजी झाझर बजती है ।
यमुना ने बालकृष्ण के चरण छूए और नीचे से बह गई
शेर ने बनवास लिया झांझर बजती है
अजी हां झाझर बजती है ।
सोई हुई जाग जा
वासुदेव तेरे द्वार पे खड़ा है झांझर बजती है ।
अजी हां झांझर बजती है ।
बालक ले लो कन्या दे दो
कन्या परिवर्तित कर लेनी है झांझर बजती है
अजी हां झाझर बजती है ।
सुन्दर छैल छबीली उठी
और बालक को गले लगा लिया झाझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है ।
कन्या ने आते ही रोकर पुकारा

कन्या ने अवतार लिया, झांझर बजती है।
सोए हुए पहरेदार जाग पड़े
धमद्वार पर वह चढाई गई, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
राजा कंस को खबर करो
देवकी के यहां कन्या ने जन्म लिया है, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
पढ़े लिखे पंडितों को बुलवा भेजो
कन्या का लग्न आदि गिनाओ झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
वेदों के अन्दर तो बालक है
कन्या ने किस विधि जन्म लिया, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
बहन देवकी सच बता
तू सतवती नार है, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
जन्मा तो वीर बालक था
उस कन्या से बदल लिया है, झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
धूस लेने वाले धोबी को बुलाओ
इस कन्या को वह पत्थर शिला पर पटकाए झांझर बजती है
अजी हां झांझर बजती है।
धोबी। तूने मुझे क्या मारना
मरने वाला तो बच कर जमना पार पहुंच गया है
अजी हां झांझर बजती है।
वह कन्या हाथ से तत्काल निकल छूटी
बिजली के रूप में चमकी, झांझर बजती है।
अजी हां झांझर बजती है

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

धर्मू सूरमा

लज (कांगड़ा) क्षेत्र के आसपास हो क्या सपूर्ण कांगड़ा मे धमू डाकू। धमू शूरवीर भी प्रसिद्ध था। कहते हैं इस सम्पूर्ण क्षेत्र म इस डाकू का आतंक व्याप्त था। बड़े भाई ने पुलिस को इसके छुप होने की सूचना दी। पुलिस पहले ही इसका पीछा कर रही थी। इस डट कर पुलिस का मुकाबला किया। सिपाहियों और थानेदार ने उससे रिश्वत मागी कि उसे छोड दिया जाएगा। रिश्वत देकर बच निकलना उसे शोभा नही दिया। अगली सुबह बड़ी चालाकी से उसने पाचो सिपाहियो और छठे थानेदार को तलवार से काट कर मौत के घाट उतार दिया। अन्त म मुकाबला करते मारा गया। उसका कलेजा सेर पक्का का निकला ऐसी किवदन्ती प्रचलित है।

ठंडा ठंडी हवा वा धर्मू आ, बर्खा दी छणकार ओ
अ दर पक्के फुलक धर्मू आ बहार रिज्जे दाल ओ
बड़े जे भाऊए चुगली लाई सही बुलाई सरकार ओ
हौलें हौलें पुलसा चलदिया कड़िया दी छणकार ओ
सौ सौ रुपय्या सपाही मगदे, दो सौ ठाणेदार ओ
मैं कुत्या ते नेह या ओ लोकको देवे धर्मू जान लो
सुत्ता सुत्तेदा धर्मू उट्ठिया हत्थें फड़ी तलवार ओ
पज तां बड्डे पुलिस सपाही छेवां ठाणेदार ओ
कोठें चढ़ी कनें बब्ब जी रोऐ धर्मं ए खाणी मार लो
तु कह जो रोंदा ओ मेरे बापू धर्मू नी खांदा मार लो
पैड़िया चढ़दी माता जी रोवें दर बिच तेरी नार ओ

तू कैह रोवै मेरी अमड़ी, घमू नी खादा मार ओ
किसे दा नीं मारेया घमूं मरदा, करमे दी ए हार लो
चार चुफेरे घमूं दौड़े, पेहया मूहां दे भार लो
पेहली गोली छातिया वज्जी दूजी कलेजे फाड़ लो
सेर तां पक्का कालजा निकलेया चर्बी बेशुमार ओ
गड्डिया मोटरा जादा, उतरी गेया हरिदुआर ओ
सह र बजारे डौंडी पिट्टी घमू दी गेई लाश लो

हिंदी अनुवाद

घमू ठंडी ठंडी हवा चल रही है झीनी झीनी वर्षा की बौछार है
अंदर चपातियां पक रही है घमू बाहिर दाल पक रही है
बहै माई ने शिकायत लगाई और सरकार का बुला लिया
धीरे धीरे पुलिस चल रही है हथकड़ियों की छणकार की आवाजें है
सौ सौ रुपये सिपाही मांगते हैं, दो सौ थानेदार
मैं कहां से दू लोगो, दे घमू अपनी जान लो
साया-साया घमू उठा हाथ में पकड़ी तलवार लो
पांच तो उसने पुलिस के सिपाही काटे और छटा थानेदार
कोठे पर चढ़ कर उसका बाप रोए घमू ने मार खानी हैं
तू किस लिए रोता है मेरे पिता घमू मार नही खाता
सीढ़ियां चढ़ती माता रोए, दरवाजे के बीच मे मार
तू किस लिए रोए मेरी माता घमूं मार नही खाता
किसी का मारा घमू मरता नही, कम की ही हार है
चारों तरफ घमूं दौड़े, गिरा मुह के बल पर लो
पहली गोली छाती मे लगी दूजी ने कलेजा फाड़ डाला
सर पक्का तो कलेजा निकला और चर्बी का कोई हिसाब नहीं
गाड़ी मोटरों मे घमूं गया (घमू की अस्थियां) उतरा हरिद्वार ओ
शहर बाजार प्रचार किया गया घमूं की लाश चली गई ●

बुडड़ियां जां माइयां

यह गीत 'ढोलरू' के रूप में प्रचलित है। चाची ने अपने दोनों भतीजों को किस तरह जहर देकर अपनी दुश्मनी का बदला लिया हृदय कंपा देने वाला है। बड़े होने पर दोनों राणे अपनी चाची के पास श्रीनगर जाते हैं। उनके वहां पहुंचने पर चाची को पता चला तो उसने धाम रचा दी। धाम खाने के लिए दोनों राणे बुलाए गए पहले ग्रास में ही ज़हर की तिरमिरी दोनों को महसूस हुई दूसरे ग्रास खाते ही दोनों के प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। महलों के निकट ही चाची ने उनका दाहसंस्कार किया और चैत्र मास में राजपूत पुत्रों की गवा भी गवा दी।

बुढड़िया जां माइयां राणओ दोएओ बेटड़े पर आयो ना
बुढड़िया जां माइयां राणेओ दोएओ बेटड़े पर आयो ना
लोई नराएँ लाइया ना
बरिया हे
दूई बरिया दे होए मेरे दोएओ राणे श्रीनगरा जो चली जादे ना
दूई बरिया दे
श्री नगरां जो जादे मेरे दोयको राणे होर क्या कमादे ना
अक्कुएँ जां छाबूड़ मां दोएओ राणे फुलड़ूआ जो चगेदे ना
फुल्लां जां चगए मेरे दोएओ राणे होर क्या कमादे ना
फुल्ला जां चगैए मेरे दोएओ राणे खिन्नुआं पा खलेदे ना
लटपटिया पगड़िया ब हृदे नेड्डेओ दोमाह णे ना
पगड़िया जे ब हो दोएओ मेरे राणे हारा जा परोदे ना

हारा भी पराण्दे मोरे दोएमो राणे पगड़ियां पर परदे ना
घोड़े जा घोड़े दोएमो राणे होए रेंह्न्दे स्यार ना
लै जा घोड़े दोएमो राणे होए रेंह्न्द सुमार ना
भो तेरिया भी परोली भो चाचिए दो परोह्णे बणी भाए ना
क्या-क्या खातर करिए परोहणेया दी क्या क्या भादर करिए ना
भिफ़रा भी गाढ़ चाचिया लै धामा जो लगाया ना
भो वजलत सूगा चाचिया जेंह र मोह र पाया
जांदेयां भी ला राणेया चाचिया पन्दो दित्तियां बछाई ना
मला साटेयां भी गहविया दोएमो राणे धामा खाणा मनात ना
पेंह्ले भी भाहें दोएमो राणेयां भी लरोभिरो भी लगो ना
दूऐ भी भी भाहें दोएमो राणे भांद ना भो समाई ना
मला बरनी मा बैरनी चाचिया बैर लेया कमाई ना
मला चनणा भी कटोमा ल चाचिया विसा दित्ती रचाई ना
बैरनी भी कैसी चाचिया बैर लेया भो कमाई ना
महला देमो कड़े लै चाचिया दाग दित्ता भो दुमाई ना
मना चैत्र भी म्हीने राणेया दी गीति दित्ती भो गुमाई ना

हिन्दी अनुवाद

बूढ़ी माई ने दो बेटों को जन्म दिया था
नज़र नारायण ने लगाई थी
एक वर्ष के हुए दोनों राणे क्या-क्या कमाते हैं
दो साल के हुए दोनों मेरे राणे श्रीनगर को चले जाते हैं
श्रीनगर को जाते मेरे दोनों राणे क्या कुछ कमाते हैं
धबडू या छाबड़ी में दोनों राणे फूल चुनते हैं
फूल चुनकर दोनों मेरे राणे और क्या कुछ कमाते हैं
फूल चुन कर दोनों मेरे राणे गेंद खेलते हैं
सुन्दर पगड़ियां तिहरे लपेटे लिए दो मनुष्य हैं
पगड़ियां कस कर दोनों मेरे राणे हार पिरोते हैं
हार पिरोकर मेरे दोनों राणे पगड़ियों पर उन्हें धारण करते हैं
दोनों राणे घोड़े कस कर तैयार रहते हैं
दोनों राणे घोड़ों पर सवार रहते हैं
भो चाची तेरे दरवाजे पर दो अतिथि आए हैं
क्या-क्या आदर सत्कार करें अतिथियों की

झिमरण और गरद से आटा पिसाकर चाची ने धाम लगाई
उस चाची ने पांच सात लूगे (कुतरे) जहर मोहर डाला
और उसी समय चाची ने उन्हे बैठो के लिए बिछौने बिछाए
लोटे और गिलास पानी के देकर चाची ने धाम लगाई
पहले ग्रास मे दोनो राणा को तिरमिर सी लगी
दूसरे ग्रास मे दोनो राणे चित्त धरती पर गिरे
भला वैरिन चाची ने वैर कमा लिया
च दन घटा कर चाची ने चिता रचा दी
वैरिन चाचा ने वर कमा लिया
महला के पास किनारे पर उन दोनो राणों का अन्तिम सस्कार किया गया
चैत्र मास मे दोनो राणो की पीठि गवा ली

संग्रहण व अनुवाद
डॉ प्रत्यूष गुलेरी

घटना प्रधान गीत

कांगड़ा क्षेत्र

कीधर देसे दी आई णी धोबन

प्रस्तुत गीत मे एक धोबी जाति (जिसे अछूत माना जाता रहा है) की सुदरी एव चम्बा रियासत के राजा को प्रणय गाथा गूँथी पड़ी है। राजा धोबिन की सुदरता पर मोहित हो गया और उसने उसे अपनी रानी बनाने का निर्णय लिया, यद्यपि धोबिन ने उसे बार बार इस कृत्य से राजा को रोका। राजा की पहली रानियां यह सब सहन नही कर पाई परिणामत जल मरी।

कीधर देसे दी आईणी धोबन
कीधर देसे भो आणा रा
पछिम देसे दी आईणी धोबन
पच्छम देसे भो आणा रा
कपड़्यां धोंदी भी धोबन
छमां छमां दिया रोंदी ना
खोल्ला दी ला पाणी ई नदिया,
गहरा गहरा लिमदा नी
सुरती दिखी भुल्लं ना वो राजा
जाति दी मैं धोबी भा
खबरां गइया भो राजा
चम्बे दिया राणिया
सूरती दिखी भुल्लै
न भो राजा जाति
री मैं धोबी भा

सद्दिग्रो मगा दा राजा
जिन्हा इन्हा काहारा जो
चुकिया डाला वो काहारा
लित्ता इन्हा महला जो
सब्बा सी मए चौल वो राजा
घामा जो लाए ना
जहर खादा वो गाणिया
मरी तां गइयो ना
चमरों दा रुक्ख कटाया
चिखा च चिणाया ना
चैत्तर महीने वा धोबनी दी
गीत्त गाई ये ना

हिन्दी अनुवाद

अरी धोबिन ! तुम किस देश से आई हो
और किस देश को तुमने जाना है
मैं धोबिन दक्षिण देश से आई हूं
और मुझे पश्चिम देश को जाना है
धोबिन कपड़े धो रही है
और छम-छम (आंसू बहा कर) रो रही है
नदिया का पानी मटमैला है
और गहरा गहरा दिखाई देता है
अरे राजा ! मेरी सूरत देख कर तुम अपने होश हवास
मत खो दो (क्यों कि)
मैं जाति की छीबी (अछूत) हूं
(राजा छीबी पर मोहित हो गया है ये)
खबरें चम्बा राज्य का
रानियां के पास पहुंचा
अरे राजा ! मेरी (सुन्दर) सूरत देख कर तुम अपने
होश हवास मत खो दो (क्यों कि)
मैं जाति की छीबी (अछूत) हूं
राजा ने कहार बुला भेजे
कहारों ने (धोबिन का) डोला उठाया

ग्रौर महलों मे पहुचा दिया
राजा ने सवा सौ मन चावल
धाम (खिलाने) पर लगाए
राजा की रानियों ने जहर खा लिया
ग्रौर मर गई
(राजा ने) चन्दन वृक्ष कटवाया ग्रौर
चिता को चिनवाया
चैत्र मास में धोबिन से सम्बन्धित
यह गीतिका गाई जाती है

घटना प्रधान गीत
कांगड़ा क्षेत्र

गज्जा लां बह्णे

प्रस्तुत गीत मे कांगड़ा घाटी मे बहती एक छोटी नदिया गज्ज के किनारे, एक मामा ग्रौर भानजा, जो दोनों राजा थे के बीच लड़ी गई लड़ाई का वर्णन है। इस गीत को 'घोड़ी' कहते हैं ग्रौर जाति विशेष के गायक चैत्र मास मे घर-घर जाकर सुनाते है।

नीलिए नी घोड़िये लालिये हुजी ना
घूमसु रंगे तेरे मेंहदिये हुजी मां
ग्रो आई सकोती चढ़ की दे टयालें हुजी ना
गज्जा लां दे बह्णें ग्रो लगिया
लड़ाइया हुजी ना
मामा ते भाणजे दिया लगिया
लड़ाइया हुजी ना
मामें ता हुए मालवा मारी का लिया
हुजो ना

गरभा लो द बह्णे
मु डिया दे टेहसे हुजो ना
ढाई पहिया गूर्ने दी गज्ज बग्गी हुजो ना

हिन्दी अनुवाद

ओ लाखे और भोले रंग की घाटी !
तुझे पूरी तरह से लड़ाई के लिए सजाया गया है
घोड़ी वट वृक्ष के चबूतरे के पास जा खड़ी हुई
'गज्ज नदीया के किनारे
लड़ाई लड़ी गई
ये लड़ाई मामे और भानजे के बीच लड़ी गई
मामा ने भानजा मार दिया
गज्ज' नदिया के किनारे
सिरो के ढेर लग गए
लड़ाई घड़ी तक गज्ज नदिया
खून से बहती रही

चैत्र मास का गीत

प्रस्तुत गीत भी जाति विशेष के लोग चैत्र मास के आरम्भ म घर-घरजाकर सुनाते हैं। ऐसी परम्परा है कि इन्हीं गायकों मुख से ही विक्रमी सवत् के आरम्भिक मास (चैत्र) का नाम सुनना (णा सुणणा) श्रेयस्कर होता है। गीत मे अपेक्षित परिवर्तन गायक लोग आवश्यकतानुसार कर लेते हैं। गीत ढोलकी पर गाया जाता है और प्रत्येक पंक्ति दोहराई जाती है।

पहला ता ना लैणा नारायण दा
जिन्हीं दुनिया बसाई ए
दुआ ता ना लैणा माई-बाप दा

जिन्हा दस्या संसार ए
तिजा ता नां लेइए गुरु आपणा
झड़दे काया दे पाप ना
सब्बे ॥॥ ऋतु में रामा फिरि रहिया
मानस फिरि ना औए नां
आया ता चैत वैसाख
जे कोई सुणें भाग मान ना
इन्दरा गिया घर अप्पणे
आई सो दी बहार ना
तुलसी डाली ता गोरिए ना लेइए
तुलसी जाति दी बमनेटी
मरुआ डाली ता गोरिए ना लेइए
मरुआ जाति दा कटरेटा ए
कौल्लेह दे फुल्ले ता गोरिए ना लेइए
कौल्ला फुल्ल ठोकरें प्यारा
सीता चल्ली ए पाणिए
हत्थें लिया सीस गड़ोलू
पुच्छणा लेई राजे राम चन्द
सीता रहियो बढ़दी बहार

हिन्दी अनुवाद

सबसे पहले नारायण का नाम लेना है
जिसने सारी दुनिया बसाई है
दूसरा नाम मां बाप का लेना
जिन्होंने संसार दिखाया है
तीसरा नाम गुरु का लेना है जिसके द्वारा शरीर के पाप झड़ जाते हैं
सब ऋतुएं घूम फिर कर फिर से आ जाती हैं
पर एक बार गया (मरा) मनुष्य फिर नहीं लौटता
अब हम चैत्र बैसाख का नाम लेते हैं
जो इसे सुनें वह भाग्यशाली होगा
इन्द्र अपने घर गया
इस कारण से सबत्र बहार हुई

अरी गोरी ! हम तुलसी की डाली नहीं लेंगे
क्योंकि तुलसी वृक्ष जाति में ब्राह्मणी मानी गई है
महुआ की डाली भी हम नहीं लेंगे
क्योंकि महुआ का वृक्ष जाति में क्षत्रिय जना है
अरी गोरी ! हम कमल का फूल भी नहीं लेंगे
क्योंकि कमल का फूल भगवान को प्यारा है
सीता हाथ में सोने का घड़ा लेकर
पानी भरने के लिए चली तब राजा
रामचन्द्र ने उसे पूछा और कहा
सीता तुम सदा बहार की
तरह फलो फूलो

संग्रहण व अनुवाद
गिरिधर योगेश्वर

बारें ता बरें माए ! मैं घरैं आया,
नूह तेरी नजरी नी आई ऐ।
निंद्रा दी वाह्‌ली पुत्तरा ! चिन्ता दी मारी,
राजे दी बेटी सेई सेई ऐ।
उठदा कद जी बागा जो जान्दा,
तूते दी छिग्गी ल्याया वढडी ऐ।
इक छिटी मारी क दें दूई छिटीं मूरी,
राजे दी बेटी ग्यो ब गो ऐ।
दूई छिग्गी मारी कन्दें त्री छिटी भूरी,
राजे दी बेटी यों जागी ऐ।
चुकेया ऐ हत्थ कन्दे मुह पर फेरया
राजे दी बेटी रेही ऐ मरी ऐ।
चन्नणा कटाया क दें चिखिया चणाई,
नारी जो दाग दुआया ऐ।
हड्डिया बटालियां कन्दें बटुए च पाईया,
गगा-जमना रढाईया ऐ।
क न ता छेदे कन्दें मुद्रा जे पाईया
कीता ऐ जोगिया दा भस ऐ।
मरि-मरि जाया माए मुण्डा दिए वरनी,
मूइया जो मार दुआई ऐ।
जोगी मैं होया माए बैरागी मैं होया
तेरे मैं देसे माए कदि बी नी औंगा,
मूइया जो मार दुआई ऐ।

हिन्दी अनुवाद

हे सास ! बारह वर्ष विवाह किए हो गए
तेरा बेटा नजर नही आया ?
हे बहू ! शीघ्रता मत करो न ही व्याकुल हो
मेरा बेटा बागो मे आ गया है।
हे सास ! मैं पति के लिए पलग
तथा अपनी चारपाई को कहा बिछाऊ ?
हे बहू ! बन्द कमरे (ओबरी) मे पति के पलग को बिछा दो
और तेरी चारपाई दूसरी मजिल पर रहेगी।

घटना प्रधान गीत

लाहुल स्पिति क्षेत्र

गुरमा गीत

लाहुल के तोद साईट म गैमूर नामक स्थान पर एक बौद्ध-विहार है। जिसका नाम 'सम्तान छोलीग' तथा स्थानीय भाषा मे 'गैमूर गोनपा' के नाम से जाना जाता है। एक बार उधर धमप्रचाराथ लददाख से प्रसिद्ध कलाकार एव महान दाशनिक लामा टशी तान पैल पधारे। वह 'आचाय पद्म सम्भव' का जीवन-चरित लकडी के ऊपर खुदाई परशीड' तैयार करवाना चाहते थे। तव मठ के लामा लोग तथा गाव के लोगो से सलाह मशवरा किया। अन्त मे 'परशीड' निमाण करने का निणय लिया गया।

आचाय जी की जीवनी की पुस्तक का नाम लेहु दुनमा' अथवा सप्त परिच्छेद है। गाव वालो ने उस शुभकाय के लिए दिल खोल कर दान और सहयोग दिया। उस परशीड' का काय पूरा हो जान के पश्चात एक दिन विशाल समारोह आयोजित किया गया। जिसम गाव वाले तथा लामा लोग सम्मिलित हुए। इस काय मे लोगो की श्रद्धा एव उत्साह को देखकर प्रसिद्ध वैद्य भिक्षु जम्बा डो डुब ने भक्ति गीत की रचना की जो 'गुरमा' गीत अथवा 'छोतु' से प्रसिद्ध है। इस गुरमा- गीत को उस समारोह मे गाया गया था। आज भा यह भक्ति गीत लोगो की जुबान पर है और आचायपद्म सम्भव की जोवनी का 'परशीड' भी उसी गोनपा मे सुरक्षित है।

हिमलयी युल जोङ गरजा फाग प जिङ खाम
दम छो ह्रुब प ति नस छा खार सम्तान छा लीग ।
ला लम खा ला ग्यु वा ठी दुङ ता दुल यल मो
लीग जि मुन पा सेल छोर के मुई पल दु थर ता ।
दद दन खाला ग्यु वे सोल देब लेहु दुन मा
छोजीन पर गो ठुल खोर गेग मेद छुल जिन ह्रुब सोङ ।
टनी लु याङ बुल लो तान पा छोग चुर पेंल वे
गा किद तेन डेल जाम साङ दम छोग चोग पे ड्रा चुन ।
लो सेम चिग दुक्ष डील नस तान दोन जा वा ह्रुब पे
गा किद जामक्ष ला जिगस् दङ तान जिन टशो तान पेंल ।
छोद योन दम छोग दन प डेल योव दे ह्रेन ड्रिङ मा
जल वे तेन डेल जोम सोद्रा छाड छोद जम्वा डो ह्रुब ।
यमक्ष गा किव पे लु याङ दाग नाग लोग नस बुल लो
दिर बद गेवे यु ला नग छोग दम खोद दुदु चाम ।
छाद योन छब खोद यस लीड कल ग्यार जब पद तान मीग
खो जि दम लेगस् गोङ फेंल गे चुई यल ला चोद चोड ।
यर थुग नम स्येन योव पे मोन दुन योद जिन ह्रुब मीग
मला लाब सुम ठो तेड यो मेद तान पर ब्रुग मोन ।

हिन्दी अनुवाद

हिमालय की घाटी गरजा (लाहुल) आर्यों की भूमि
धर्मोपदेश तथा साधना को भूमि धमचक्र सम्तान लींग ।
आकाश मे चमकता हुआ सूय तथा चन्द्रमा जिस प्रकार अंधकार को मिटाता है
उसी प्रकार चारों द्वीपों के लोगों का (अज्ञानरूपी) अंधकार गुरु मिटाता है ।
श्रद्धालुओं ने दान देकर लेहु दुनमा नामक पुस्तक का
धम दानार्थ पर बिना विघ्न बाधा से निर्माण किया
अब (हम) मंगल भक्ति गीत गायें बुद्ध शासन को दस दिशाओं में फैलायें
आज दमय शुभ शकुन है एक गुरु शिष्य (लोग) सब इकट्ठे हुए ।
(अब) तन मन से एक होकर नित्य स्थाई (सुख) की खोज की जाय
(अन्य लोग) आनन्द सुख ले (भोग) रहे हैं उनको देखो,
शासनधर टशो तान पेंल ।
गुरु तथा दाता (दान) के शुद्ध भावना से, मधुर सम्बन्ध से दोनो क्षेत्रों में
दर्शन हो ऐसा लक्षण दिखाई देता है सिपू जम्वा दो ह्रुल ।

भाव दमय मधुर गीत हर्षोल्लास का वातावरण
कुशल कार्यो के बल स कृष्णपक्ष रूपी भूत प्रेत (अ वकार) नष्ट हो।
गुरु शिष्य परम्परा शत कल्प तक अटूट रहे
इस लाक तथा परलाक (दोनो) मे दश कुशल के नियमो का पालन कर
अ ततोगत्वा बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए न्याय शिक्षा का अध्ययन जारी रखें
इस प्रकार अटूट श्रद्धा प्रदर्शित करता हू और प्रणिधान करता हू ●

घटना प्रधान गीत

लाहुल क्षेत्र

बुस्रीग का गीत

लाहुल के तोद घाटी मे एक किंवदन्ति है कि प्राचीन काल म एक वार सभी लडकिया कुवारी रह गई। मा बाप परेशान हो गये, किसी की भी शादी व्याह का सम्बन्ध नही बन पा रहा था। लडकियो की माताओ का चिन्तित होना स्वाभाविक ही था। लडकियो के ऊपर उन की माताओ ने एक गीत तैयार किया जिस दिन गाव मे मेला था उस दिन उस गाने को पेश किया गया। गीत ने लोगो का मन मोह लिया और वे लडकियो की ओर आकर्षित हो गए। उस के बाद लडकियो की अन्य गाव के लडको के साथ शादिया होने लगी। तब से लेकर आज तक इस गीत को 'बु स्रीग' के गीत से जाना जाता है। इस गीत मे ऊचाई निचाई मोटापन तथा पतलापन को तीन-तीन विशेषताओ का वणन किया गया है।

था वा ला थो सुम थो वा ला थो सुम
दे दे यो ना जंग मे दे दे या ना जग।
यर कान चोग ङे हुर मा यर कोन चोग ङे हुर मो

कहते हैं। एक रस्सी मे गाय पक्तिबद्ध बाध दी जाती है। खलिहान के बीच खबा गाढ दिया जाता और उस से गायो को बाधकर घूमाते हैं जिस गाय को खवे के साथ आगे बाधते हे उसे 'मामा' तथा आखिर मे बधी गाय को 'पयारपा' कहते हैं।

'होलो' कहकर पुकारते, गाय को घुमाते हैं। अत म गाय छोडने से पूर्व उसका सिर से लेकर पाव तक वर्णन करके वर मागते हैं— जिसे 'होगबुर' कहते हैं।

मामे मल दु खोरो रो
लाड छेन था ना हीरो हीरो
हो लो हो लो
हुल ताग टखी मोर मो रु
सेर मो नस ला रिग पा छाग
हो लो हा ला
गो मो रि थि ग्यलमो रु होग मा बुर छाग मा बुर।
मा मो होद कि ग्यलपा कोर सुम।
साथा डु्ल कर मे लोग दु होग मा बुर छाग मा बुर।
मा मो
मीग मा गाड सि नरा रु हाग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो
मिग मा जिम छुड स्योल डा रु हाग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो
मम योग तो स्यी ये बोड दु हाग मा बुर छाग मा बुर।
मा मो
ना मो सङ दाड बुस ड्रा रु होग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो
चेमो डा लिङ्ग मुग ड्रा रु होंग मा बुर, छाग मा बुर।
मा मो
सोजा दुड ड्राड ठेंगवा ग्युस ड्रा रु हाग मा बुर छाग मा बुर।
मा मो
यल गब छो की लग नोड ड्रा वा रु, होंग मा बुग छाग मा बुर।

श्रम गीत
लाहुल क्षेत्र

होंग चर थे

गेहू और जौ की गहाई के बाद, मिले जुले अनाज तथा भूसे को होग' कहते हैं। अब गहाई का काम तो कर दिया गया है। मगर अन्न तथा भूसे को अलग करने के लिए हवा की जरूरत पड़ी है। इसमे हवा की प्रशसा तथा मान बढाते हुए हवा को बुलाते हैं। यह तो सोने चादी सी हवा है। ग्राम देवता और कुबेर (हमे) अनाज का वर प्रदान करे।

'होग को दो सिरे वाली लकडी से हवा म उठाते हुए हवा से भूसे को अलग करते हैं। दो आदमी दाई तरफ और दो बाई तरफ बैठते हैं।

हवा आज हमारे खालिहान मे शीघ्र तथा तेज होकर पधारे क्योकि गहाई तो कर रखी है मगर आदमी कम हैं।

कु ह ह बान बान पा जिग वोन पा जिग
हुल साग टशी गोर भो ह
डोन भो डु यो छर जिग वेबस
छर दाङ ड्रा वे होग जिग सल
जममला ह्योग ला क्योद
जम सेर रा ह्योग ला क्योद।
यपि सेर लुड लुड पा ना
यमि सेर लुड लुड पा ना

सेर गि गोमो ठीग गे जुग
सेर गि गोमा ठीग गे जुग
सेर लुइ वेद ला ह्रोग ला क्योद
यपि इ्ल लुइ लुइ पा ना
यपि डुल लुइ लुइ पा ना
इ्ल गि गोमो ठीग गे जुग
इ्ल गि गोमा ठीग गे जुग
डुल लुइ वेद ला ह्रोग ला क्योद ।
यपि यु लुइ लुइ पा ना
यपि यु लुइ लुइ पा ना
यु यी गोमो ठीग गे जुग
यु यी गोमो ठीग गे जुग
यु लुइ वेद ला ह्रोग ला क्योद ।
नस दाइ कुग मा ड्रान-ड्रा सल
ख्योम सेर लुइ पो मि लाग सल ।

हिन्दी अनुवाद

(कुच र र बोन बोन, बोर पा जिग बोन पा जिग —
इन शब्दों का विशेषार्थ नहीं है आकार प्रकार बोलने का ढंग ही है)
गोलाकार मंगलमय आलिंगन में
अनाज रूपी हरियाली की वर्षा कीजिए
वर्षा की तरह अनाज रूपी वर प्रदान कीजिए
हे जन्मला ! वर प्रदान करने हेतु (हमारे यहां) पधारें ।
उस सोने की घाटी (नाला) में
सोने के सिर वाले पंक्तिबद्ध विराजमान हैं
सोने की हवा बनकर वर प्रदान करने के लिए आईए ।
उस चांदी की घाटी मे
चांदी के सिर वाले पंक्तिबद्ध विराजमान हैं
चांदी की वायु बनकर वर प्रदान के लिए आईए ।
उस यु (फिरोजा) की घाटी मे
यु के सिर वाले पंक्तिबद्ध विराजमान हैं

इसँ वो बठोरी भी मैं तेरी हे
हाय वो मेरेया
मोति रिया रास्ता पेया ग्रेला हे
बस तो तेरा गीत बडा छैला हे
हाय वो मेरेया कर्मोंया छैला हे
तेरे साही मण्हू मिनो हुणा हे
हाय वो मेरेया कर्मोंया छैला हे
तेरा साही मण्हू मिनी हुणा है

हिन्दी अनुवाद

कर्मो तुम कितने सुन्दर हो
आप सरीखे काई मनुष्य नही होगा
त्रिकु मोड पर टाच जल रही है
मामा भानज की जोडी आ रही है।
बिसु मामा ने तुम्हारी सगाई करवा दी
दूसरे मामा ने दिल की बात कमाई
बिसु मामा दूकान पर इन्तजार करता
तो दूसरा मामा तुम्हे जोत (ऊचे पहाड) पर मारता
जब ऊची ऊची पहाडिया पर बर्फ गिर रही थी तो तुम गम से व्याकुल शराब पीने लगे (पडे अपने मन्तमन मे कहता कि) आधी पीऊगा और आधी जब मे रखु गा और आधी ठेके की (अग्रेजी) मगवाऊगा (फिर अपने ही मन म विचार करता है कि) यदि ठेके जाऊगा तो सब जान जायेंगे और फिर ठेके की थोडा सी भी पीओ तो बडी लग जाती है तीसा के पाच सात लोग आये और कर्मो को मार कर उसकी लाश नाले मे फेंक गए तीसा से टेलिफून होता है कि मोती-की रास मे खून हुआ है। कर्मो के पास आई सिपाही थे फिर भी कर्मो की लाश कहा गई सारे चुराही पूछ रहे थे।
माता गाय दूह रही थी जब इस घटना का पता चला तो वह मूसलाधार आसू भी साथ बरसाती रही। जब गाय दूहकर दूध लेकर अन्दर (घर) आई तो चक्कर खाकर दूध सहित गिर पडी।
जब इसकी बहिन उमा को पता चला तो वह चिल्लाती हुई आई और कहती कि तेरे बिन हम कैसे जीयेंगे
रोती हुई हरदेई बहन कहती कि वह अब मिंजर किसे बाधेगी।
रोता चिल्लाता पिता आया और गले से कस कस कर लगाने लगा

द दे थो ना जग मे द दे था ना जग।
थो वा ला थो सुम थो वा ला थो सुम
द दे था ना जग मे दे दे था ना जग।
मा खांग डे मेस ताग मा खाग डे मस ताग
द दे था ना जग मे दे दे थो ना जग।
था वा ला था सुम थो वाला था सुम
दे द थो ना जग मे दे द थो ना जग।
मा जिग डे युर गा मा जिग ट युर गा
द द थो ना जग मे दे द था ना जग।
मा वा ला मा सुम मा वा ला मा सुम
द दे मा ना जग मे दे द मा ना जग
मा खाग ड थम पा मा खाग डे थेम पा
दे दे मा ना जग मे द दे मा ना जग।
मा वाला मा सुम मा वाला मा सुम
द द मा ना जग मे द द मा ना जग
बु सीग ड मीन मा बु सीग ट मान मा
दे द मा ना जग मे, द द मा ना जग।
मा वा ला मा सुम मा वा ला मा सुम
द दे मा ना जग मे द द मा ना जग।
मा जिड डे मोन दब मा जिड डे मान दब
दे दे मा ना जग मे दे द मा ना जग।
बाम पा ला बाम सुम बाम पा ला बाम सुम
दे दे बास ना जग मे दे दे बोम ना जग।
मा खाग ड का वा मा खाग ड का वा
दे दे वाम ना जग मे दे दे बाम ना जग।
बाम पा ला बोम सुम बाम पा ला बोम सुम
दे दे बाम ना जग मे दे द बाम ना जग।
बु सींग ड पुग पा बु सीग डे पुग पा
द दे बोम ना जग मे दे दे बाम ना जग।
बाम पा ला बोम सुम बोम पा ला बाम सुम
ले दे बाम ना जग मे दे दे बोम ना जग।
गो स्पी डे छे वा गो स्पी ड छे वा
ले दे बोम ना जग मे दे ले बोम ना जग
ठा वा ला ठा सुम ठा वा ला ठा सुम

दे द ठा ना जग मे द दे ठा ना जग।
ग्यलमा इ दर कुद ग्यलमो डे ग्र कुद
दे दे ठा ना जग मे दे दे ठा ना जग।
ठा वा ला ठा सुम ठा वा ला ठा सुम
द दे ठा ना जग मे दे द ठा ना जग।
यु सोड डे केद पा यु सोड डे केद पा
द दे ठा ना जग मे, दे दे ठा ना जग।
ठा वा ला ठा सुम ठा वा ला ठा सुम
दे द ठा ना जग मे दे दे ठा ना जग।
जोमा डे ड चा जोमो ड ड चा
दे द ठा ना जग मे दे दे ठा ना जग

हिन्दी अनुवाद

ऊ चाई तीन प्रकार से होनी चाहिये
वह उसी मे शोभायमान होती है।
जानता हू उसी ऊ चाई मे सु दरता है।
भगवान की महिमा।
वह उसी म शाभायमान हाती है।
जानता हू उसी ऊ चाई मे सु दरता है।
ऊ चाई तीन प्रकार की हानी चाहिये
वह उसी म शोभायमान होती है।
जानता हू उसी ऊ चाई मे सु दरता है।
(यदि घर बने तो) मकान के खम्बे म पाए का पत्थर।
शाभायमान हाता है।
जानता हू उसी ऊ चाई मे सु दरता है।
ऊ चाई म तीन प्रकार से ऊ चा होना चाहिय
वह उसी मे शाभायमान होता है
जानता हू उसी ऊ चाई मे सु दरता है।
(यदि खेतो मे पानी की व्यवस्था करनी हो तो हमेशा)
नहर का सिरा ऊ चाई पर हाना चाहिये,
वह उसी मे शोभायमान होता है,
जानता हू उसी ऊ चाई मे सु दरता है।
झुकाव तीन प्रकार का होना चाहिये
वह उस म शाभायमान होता है

जानता हू उसी झुकाव मे सुन्दरता है ।
घर की सीढियो मे कम ऊचाई होनी चाहिये
जानता हू उनका कम ऊचा होने मे सुदरता है ।
तीन प्रकार का झुकाव होना चाहिये
वह तो झुका होने मे ही शोभायमान है
जानता हू उसी झुकाव मे सुदरता है ।।
लडकी का मर्म
झुका होना शोभायमान है,
जानता हू उसी झुकाव मे सुदरता है
तीन प्रकार का झुकाव होना चाहिये
वह झुकाव तो शोभायमान होता है
जानता हू, उसी झुकाव मे सुदरता है ।
खेतो की फसल की पत्तिया
झुकी होती शोभायमान हैं।
मोटापा तीन प्रकार का होना चाहिए
जानता हू, उसी मोटापे मे सुदरता है ।
(यदि घर बने तो) खभा मोटा होना चाहिये,
वह तो मोटेपन मे शोभायमान है,
जानता हू उसी मोटापे मे सुदरता है ।
तीन प्रकार का मोटापा होना चाहिये
वह मोटा होने में शोभायमान है,
जानता हू उसी मोटापे मे सुदरता है ।
लडकिया की भुजा मोटी होनी चाहिये
वही मोटापा शोभायमान होता है
जानता हू उसी मोटापे मे सुदरता है ।
(यदि कुत्ता पालें तो) कुत्ते का दात मोटा होना चाहिये
वही मोटापा शोभायमान है
जानता हू उसी मोटापे में सुदरता है ।
तीन प्रकार का बारीक होना चाहिये,
वह उसी बारीकी मे शोभायमान है
जानता हू, वह उसी बारीकी मे सुदर है ।
(जो बता हुआ) रेशम का धागा
वह बारीकी मे शोभायमान है
जानत [illegible] उसी बारीकी मे सुदर है ।

तीन प्रकार का पतलापन होना चाहिये,
उस पतले मे ही शोभा होती है,
जानता हू, उसी पतलेपन मे सु न्दरता है।
कन्या की कमर
यह पतलेपन मे ही शोभायमान है,
जानता हू उसी पतलेपन मे सु दरता है।
तीन प्रकार का पतलापन होना चाहिये
उसी पतलपन मे शोभा है
जानता हू उसी पतलपन म सुन्दरता है।
उसी बरीकी मे शोभा है।
जानता हू उसी बरीकी मे सु न्दरता है

श्रम गीत
लाहुल क्षेत्र

खुई कोर थे

काम को हल्का करने एव थकान को दूर करने लिए काम करने वाले (श्रमिक) गीत गाते हैं। वे जो काम किया जाता है उस काम से सम्बन्धित जो गीत गाते हैं वह लोक गीत बन जाता है। ऐसा ही लाहुल के तोद घाटी एव स्पीति–क्षेत्र मे गहाई का काम करते समय गाए जाने वाले गीत मे लगभग समानता और शब्दो म एकरूपता है। खलिहान, लगभग सभी अपने घर के सामने ही बनाते हैं क्योकि एक तो अनाज एव भूसा आदि अन्दर करने म आसानी हो जाती है व दूसरी बात पशुओ से रक्षा करने के लिए इसकी देखभाल भी सरल हो जाती है।

गहाई के कामो को गाय से ही लिया जाता है। लाहुल स्पीति म भी गाय प्रयोग करते हैं। गहाई के काम को खुई' या 'युल लस'

डाल्कर देवता के निमित्त रखना) पाया जाए। उस की दशा और भी हृदय विदारक नजर आती है जब वह मिट्टी के बर्तन में दो जनों के लिए भोजन तैयार करती परन्तु उसे अकेले ही खाना पड़ता है। उस दिन क्या बीतती होगी जब वह उस की प्रतीक्षा में दो के लिए सेज तैयार करती है पर बेचारी काफी प्रतीक्षा के बाद अकेली सोती है

श्रम ही तो है जो दो हृदयों को तड़पाता है।

संग्रहण व अनुवाद

अमर सिंह रणपतिया

श्रम प्रधान गीत

हमीरपुर क्षेत्र

कालुआ मजूरा दूर तेरा डेरा

कालू नाम का एक मजदूर जो घर से दूर जंगलों में मजदूरी करता है, की पत्नी घर पर अपने पति को याद करती है कि बहुत समय हो गया तुम्हें गए अब घर आ भी जाओ।

कालुआ मजूरा ओ दूर तेरा डेरा ओ कदी घरऔणा
परदेसी सज्जणा ओ बीती गया फौगणा ओ कदी घर औणा
जगला तू फिरदा ओ कड़या च रूलदा ओ
फून तेरे डुलदा बुरा हाल घर दा,
मेरया प्रेमिया बीती गया फौगणा कदी घरे औणा।
काल्या मजूरा

धुप्पा तू जल्दा आ पाले तू ठरदा ओ
बुरा हाल घर दा परदेसों सज्जना ओ बीती गया फौगणा आ
बदों घर औणा, कम्म्या मजूरा
दियालिया दे बबर ओ लाहड़िया दी मिचटी
सै निज्जों किया विसरी
परदम सज्जना बदी घर औणा— कम्म्या मजूरा
राती न सौदी मैं दिहाडिया नी बौह्न्दी आ
याद तरी औन्दी
मरया प्रेमिया दिला दआ मैंहरमां ओ
बीती गया फौगणा आ बदो घर औणा
याल्आ मजूरा दूर तेरा डेरा आ बदी घर औणा ०

हिन्दी अनुवाद

मेरे मजदूर प्रेमी पता नही तू यहा से कितनी दूर रहता है। जंगला में मजदूरी के लिए दर दर घूमता है खून पसीना एक करता है, अब तुम घर आ जाओ, घर का बुरा हाल है, तुम ने फागुन मास म आने का वचन दिया था वह भी बीत गया है, तुम कब घर आओगे ?

मेरे परदेस- गए साजन तू धूप मे काम करता हुआ जलता है ठण्ड म ठिठुरता है तुमने कब घर आओगे घर का बुरा हाल है फागुन बीत चुका है अब तो घर आ जाओ।

मेरे प्रियतम दीवाली के अवसर पर बबर (विशेप खाना) खाती बार मुझे बार बार तुम्हारी याद सताती रही इतने सुन्दर खाने को भी तू भूल गया और इन त्योहारो पर तू नहीं आया, अब तो आ जा।

मेरे मन की बात जानने और समझने वाले मेरे प्रेमी मैं रात को भी नहीं सौती दिन भर काम काज मे लगी रहती हूं। एक क्षण भी नहीं बैठती पर फिर भी जब तुम्हारी याद आती है मन को बड़ा दुःख होता है। मुझ से दूर रहते वाले मेरे प्रेमी अब तो फाल्गुन भी बीत गया है अब तो घर आ जाओ।

संग्रहण व अनुवाद
कमल हमीरपुरी

खेत खलिहान मे कार्य कर रही नवयौवना खेत के काम मे व्यस्त है। ऊपर से पडती सूर्य की तेज किरणें भी उनके अंगो को निहार रही हैं। अन्य महिलाए उसके साथ काम करती हुई थकान को कम करने के लिए निम्न गीत गाती हैं -

घुप लगी सिरा सामणे सिरा सामणे, मालुआ डिगी आ रह ना
असां जाणा जिले कागडे जिले कागडे, डेरा जमुए लाणा
घुप लगी मत्थ सामणे बिंदिया डिगी ओ रैह दी
असा जाणा जिले कांगडे, जिले कागडे डेरा जमुए लाणा
घुप लगी बाही सामणे चूडा डिगी ओ रैह्दे
असा जाणा जिले कागडे
घुप लगी पैरा सामणे पैरा सामण पहु्णिया डिगी ओ जादी
असा जाणा जिले कागडे
घुप लगी गले सामणे, गले सामणे हार डिगी ओ रह्दा
असा जाणा जिले कागडे, जिले कागडे डेरा जमुए लाणा

हिंदी अनुवाद

मिर पर तेज घूप पड रही जिसके कारण सिर पर ओढे हुए दुपट्टे का गोटा ऐसा चमक रहा है जैसे उस मे आग सी लपटें हो। हम जिला कागडा जाएग और फिर अपना डेरा जम्मू जाकर जमाएगें।
तेज घूप माथे पर पड रही जिस के कारण माथे की बिन्दिया ऐसे लग रही है जैसे

पितीराम पिराम फुआलं

लोकगीत मे चरवाहो की कठिनाइयो, देवी-देवता सन्बन्धी विश्वासो तथा उनकी मान्यताओ और प्रसन्ता तथा दुख के अनुभवो का शब्द-चित्र उकेरा गया है। सोनिगे (सावणी) देविया पर्वतशिखरो के देवता माने जाते हैं। पर्वतशिखरो (कण्ठो) मे पहुचते ही चरवाहे (फुआल) उनकी पूजा बलि देकर करते है। यदि विधिवत् पूजा न की जाए तो भेड़ें गुम हो जाती हैं, ऐसा विश्वास किया जाता है।

	हिन्दी अनुवाद
गोल' गो होना	टेक
हाया वे होना।	
घङ सा पावङ चो	ऊपर की ओर कण्ठे मे
इ विण्डो शालङ्।	भेड बकरियो का एक झुण्ड।
इ विण्डो शाल्ङ नो	एक झुण्ड, यह किसका
हातो शालङ्?	झुण्ड?
नो शालङ् ता लो'ना	यह झुण्ड कहे तो
बोलो डोम्बोरु शालङ।	देवता का झुण्ड।
शाल्ङ् ता डोम्बोरु,	झुण्ड तो देवता का
पुआन हात दुग्योश?	पुआल (चरवाहा) कौन है?
पुआन ता लो'मा,	पुआल कहे तो
माटुआ लो छाडा।	माट का लडका।
माटुआ लो छाडा,	माट का लडका
हुरोमुआ ता बानजाम।	हुरम का भानजा।
हुरमुआ बानजास	हुरम के भानजा का
नामङ ठ दुग्योग?	नाम क्या है?
नामङ ता लो'मा	नाम कहे तो,
पोती राम नेगी।	पोतिराम नेगी।

ओमसा ओमसी अड	पहले ही पहले मेरा
फालोरया वारा।	फलोरेया (नाम वाला) मेमना-
अड ती तरया खाडो,	मेरा चितकबरे मुह
घण्ठडी वाज्यो।	वाला खडडू (मेमना), घण्टी
पितीराम लोतो-या	बजाते हुए।
पचो वाईयार।	पितीराम ने कहा-
या पञ्चो वइयार	ऐ साथी भाइयो !
वर क्योची दोस मिग।	ऐ पचो भाइया, दूर
वर क्योची दोसमिग	से ही पहचानने का-
ज़ोनमिग्या मोड्गी।	दूर से पहचानने का,
ज़ोनमिग्या मोड्गी,	पसन्द की साथी-
शुआलो चीमे।	पसन्द की साथिन (प्रेमिका)
शुआलो चीमे	शुआल की लडकी।
छोटास छोटस	शुआल की लडकी,
ओमरड।	छोट छोटे कद की।

संग्रह व अनुवाद
डा० बंशीराम शर्मा